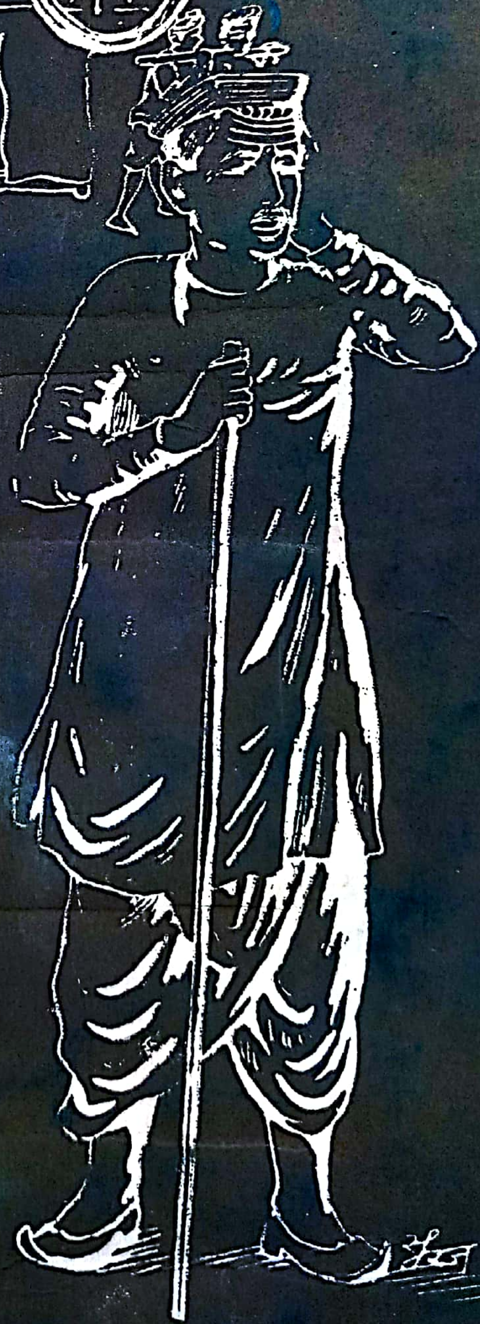
विदागरी





चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

विदागरी

[मैथिली सामाजिक उपन्यास]

श्रीचन्द्रनाथमिश्र "अमर"
एम्. एल. एकेडमी,
लहेरियासराय,



विद्यापति प्रकाशन
दरभंगा

नवरत्न ग्रन्थमालाक १२ म पुष्प

प्रथम संस्करण—जुलाइ १९६३

मूल्य—२. ५० न० पै०

प्राप्तिस्थान—

ग्रन्थालय, दरभंगा

मुद्रक :—चौधरी प्रिन्टीङ्ग एन्ड स्टेशनरी वर्क्स टावर चौक (दरभंगा)

आमुख

मैथिली उपन्यास साहित्य मे मुख्य रूपें जाहि वैवाहिक समस्या कें आदरणीय श्रीहरिमोहन झाजी कन्यादान मे उठौलनि, प्राय जतेक उपन्यास प्रकाशित होइत गेल, ओही समास्या कें कथावस्तुक रूप मे उपस्थित करबाक चेष्टा उपन्यासकार लोकनि करैत अयलाह। यद्यपि वर्णन-शैली घटनाक उपस्थापनक क्रम आदि मे भिन्नता देखिओ पड़ैछ तथापि मूलतत्त्व एहि सँ भिन्न नहि।

हम विद्यार्थिए जीवन मे दू गोट उपन्यास लिखलहुँ। पहिल १९४४ मे वीरकन्या आ दोसर १९४६ मे विदागरी। बीरकन्याक प्रकाशन १९५० मे संभव भऽ सकल आ बिदागरी पड़ले रहल।

एहि वर्ष आबि, एकर प्रकाशन सम्भव भऽ सकल अछि। जाहि हेतु धन्यवादार्ह थिकाह श्रीरमेन्द्रनारायणचौधरीजी, संचालक बिद्यापति प्रकाशन, ग्रन्थालय, दरभंगा, जनिक मातृभाषा प्रेम एकरा एहि रूप मे उपस्थित कऽ सकल अछि।

यद्यपि एहि बीच मे अनेक उपन्यास प्रकाशित भेल, जाहि सभक कथा-शिल्प युगक प्रगतिशीलताक संगहि प्रगतिशील होइत गेल तथापि हम एहि उपन्यास कें पाठकक समक्षउपस्थित करबाक दुस्साहस कैलहुँ अछि।

एहि मे वर्णित विषय एखनहुँ समाजक सोझाँ ओहिना अछि, जेना

। आइ सँ पन्द्रह वर्ष पूर्व छल। एखनहुँ ज्योतिषीजी सन निर्मल हृदयक व्यक्ति समाज मे छथि तथा लीलाधरझा सन धूर्त्त लोकक सेहो अभाव नहि, जनिका लोकनिक प्रसादें सौराठ सभा मे एखनहुँ भद्र सँ भद्र पुरुषक प्रति विश्वास करबा मे वरक पिता तारतम्य मे पड़ि जाइत छथि।

आइ समाज कें मुनचुन सन युवक तथा छाया सन नारीक आवश्यकता छैक। जाबत धरि छाया जकाँ दुस्साहस करबाक हेतु समाजक कन्या उद्यत नहि होइतीह तावत धरि लीलाधरझा सन व्यक्तिक मुँह पर थापड़ नहि लगतनि।

एहि सँ विशेष एहि प्रसंग कहबाक प्रयोजन हमरा नहि अछि।

मधुश्रावणी
सन् १३७१ साल

—लेखक

२

विवशता सेहो मानव स्वभावक एक प्रकारक दुर्बलते थीक। जीवनक संघर्ष में ककर जीवन कखन कोमहर मोड़ लेतैक से के जनैत अछि। देश भरि मे विख्यात परोपट्टा भरि मे समादृत, गाम भरि मे अपन व्यक्तित्वक प्रभाव सँ एक मात्र जूति चलौ-निहार ज्योतिषीजी धन, जन सब वस्तु सँ सम्पन्न छलाह। ककरो आङुर उठैबाक साहस नहि होइत छलनि, हिनका सोझाँ मे ककरो कल्ला नहि अलगैत छलनि, मुदा एखन देखैत छिऐनि तँ जेना भरि दिन दलान पर बैसल कोनो गुनि धुनि मे लागल रहैत होथि। जनक क्षति विधाताक हाथक बात थीक, किन्तु धनक क्षति ज्योतिषीजीक विवशताक कारणेँ भै रहल छनि। जे मङ-तनि तकरा वस्तु अछैत नहि कोना कहथिन आ लऽकऽ यदि क्यो नहि देतनि तँ शीलवश ओकरा कहथिन कोना? यैह कारण छनि जे आइ सतत चिन्ता सँ चित्त आकुल रहैत छनि।

गामक पश्चिम एक विशाल पोखरि छैक। पोखरिक पछवरिया मोहार तीनू मोहार सँ ऊँच छैक। मोहार पर एक झमटगर पीपरक

गाछ छैक। बैसाखक दुपहरिया मे एहि गामक शिमला मंसूरी यैह पीपरक छाहरि थीक। ओही पछिमाढार मोहार पर शिवानन्द पाँच सात गाछ कलकतिया, दू गाछ बम्बइ, पाँच गाछ मालदह लगौने छथि। चौदहो पन्द्रहो गाछक चारू कात ऊँच कऽ आड़ा काटि, ताहि आड़ा पर शीशो, महु, गम्हारि आ थोड़ेक अकठ लगौने छथि। बीच कलमबाग मे सै सवा सै साबेक झाड़ से रोपने छथि। बीट सब बेस झमटगर छनि। दू साल सँ ई नव गछुली फड़ै लगलनि अछि। एहि बेर भगवतीक कृपा सँ मिला जुला कै पन्द्रह बीस हजार आम फड़ल हेतैनि। लोक कहैत छैक जे नव गछुलीक काँच आम तोड़ि लेला सँ गाछ घवाह आ हेहरू भै जाइत छैक। दोसर पोखरिक कातक कलम रहलाक कारणें लोक उपद्रव करैत छैनि। आड़ाक खत्ता मे नदी फिरलक आ नव गछुलीक एकटा ठहुरी दतमनि लेल तोड़ि लेलक, जाहि द्वारें शिवानन्द खोपड़ीक स्थान पर एक छोट सन ठोकल ठाकल झाँझनक घरे बान्हि नेने छथि।

भिनसर सँ बारह बजे धरि बाधो बोनक काज करताह तँ अपने पछबरिए बाध मे रहता। कलम बाग दिस क्यो जाउन की नहि, मुदा दस मिनट पर, पन्द्रह मिनट पर बाधक कोनो कोन मे रहथु, जोर सँ एक हाक मारि दैत छथिन–'हे! हे! के कलमबाग दिस टपल जाइत छह हो', यैह हम देखैत छिअह।' खाइयो पीबि कै जँ कनेक जिरैताह तँ ओही पीपर तर जा कऽ।

आइ नारायण ओही पीपरक उँचका सोर पर मूड़ी राखि जतभम्प लेबाक बुद्धिये पड़ल छलाह। बटुआ सँ तमाकू बाहर कै चुनौटी मे सँ चून अन्दाजैत शिवानन्द खोपड़ी सँ बाहर आबि ओही पीपर तर अङ्गपोछा सँ भाड़ि कै बैसलाह कि नारायणक आँखि फूजि गेलनि। तमाकू बँटैत दूनू गोटा मे गप्प आरम्भ भऽ गेलनि। शिवानन्द कहै लगलथिन–ओ तं ज्योतिषीएजी सन ज्ञानी लोक जे छाती वज्र कैने खेपने जाइत छथि। आन रहैत तँ एहि चोट सँ बताह भै जाइत।

नारायणक उत्सुक दृष्टि शिवानन्दक मुँह पर स्थिर भऽ गेलनि, जेना आगांक वृत्तान्त सुनबाक आग्रह कै रहल होइनि।

शिवानन्द तमाकू कें थपड़ी दऽ एक चुटकी बढ़वैत गामक विगत दशाब्दक इतिहास सुनवै लगलथिन–

'हौ, कमैला जिनगी भरि ज्योतषीजी, मुदा पैर लछमिनिञा छलनि छोटे भाइक। ओ जहिया सँ मुइलथिन, तहिया सँ जेना हिनका परिवार मे ढेबाहि लागि गेलनि। एक तँ एहन कमासुत भाइक मृत्यु सँ ज्योतिषीजीक कोंढ़ दड़किए गेल छलनि, ताहि पर बरख नहि पुरलनि की जेठका बेटा उम्री सेहो भरि राति मे चटपट कऽ मरि गेलनि। इह् ओ छौंड़ा फूटि कऽ जुआन भै गेल रहैक। जेना भरौख परहक अण्डीक गाछ हो। बोल से मिसरीए सन, औलिया मिजाजक लोक, जखन गाम अबैक, दस पांच

टाका जलसे मे उड़ा दैक। साँझ पहर कऽ गुरूजीक संग महादेवक मन्दिर पर चन्दाझाक बनाओल-"शिव निन्दा जनु रद्दु बद्दु कद्दु लगइत अछि कान"-जखन गाबऽ लागै तँ बूझि पड़ैक मन्दिरक गुम्मज डोलि उठल हो। बजबा मे तेहने, जोरगर तेहने, पुरखाह तेहने आ तेहने पढ़बा मे चन्सगर।' ई क्षण शिवानन्दक चेतना जेना अतीतक ओ चित्र देखबा मे हेड़ा गेलनि। बसातक एक झोंक अयलैक, पीपरक पात खड़खड़ाइत काँपि उठल, जेना उम्रीक स्मरण सँ ओकरो आत्मा विह्वल भै गेल होइक, पोखरि मे बसातक झोंक सँ उठल हिलकोर पुवारि भाग सँ चलि पछवरिया कछेड़ पर उम्रीएक स्मरण कै माथ पटकैत हो।

शिवानन्द पुनः उम्रीक संस्मरण केँ आगाँ बढ़ौलनि-'ओहि बेर राजपुतानाक एक महाराजक बेटाक टिप्पनि बनवैत काल ज्योतिषीजी लिखने रहथिन जे ई छठम कन्या थिकीह। एकर बाद अपने केँ पुत्र रत्न प्राप्त हैत। ई कथा ओहि महाराज केँ मिलि गेलनि तँ बेटाक टिप्पनि बनाबक हेतु अपना ओहि ठाम बजबाइए नेने रहथिन।

मास दिन धरि ज्योतिषीजी रहलाह। ओ राजसी सुख, मेवे मिसरी जलपान, घीए दूध भोजन। खोए मलीदा पेपच पड़ैत। संग मे उम्रीओ रहनि। घुरला पर जे लालबुन्द रहै छौँड़ा, तेहन आजुक युग मे सासुरो सँ घुरला पर नव विवाहल वर नहि रहैत छथि। विदाइ मे ज्योतिषीजी केँ रेशमी धोती, रेशमी तौनी, किमखापक वालावर चपकन, पाँच गोट अशर्फी, अबिती जइती

रेलक मासूल आ उग्रीके पाँचो टुक कपड़ा आ पन्द्रह टाका मासिक पढ़बाक खर्च देलथिन ।

एह ! आचार्य पास कै जखन उग्री गाम पहुँचल तँ पाल पर-हक पोसल बम्बइ आमक मधु सन रस मे बदाम दक्षिणी दऽ भाङ्क जे ओ जलसा कैने रहै से एखनो आँखिक सोझाँ ओहिना नाचि रहल अछि । कोन कोन रंग विरंगक मसाला सब फुल-चनमा पिसि मिझौने गेल रहैक तकर वर्णमा नहि हो ।' एक दीर्घ उच्छ्वास लैत शिवानन्द बटुआ में सँ चून तमाकू बाहर करैत बाजै लगलाह-'ओ हो हो हो ! वीर पुरुष चल गेल । ओकर तेसरे दिन रातिमे हैजा धऽ लेलकैक आ भोर होइत होइत चटपट मरि गेलैक । लोक हाथ मलिते रहि गेल । ओहि दिन जे गाम भयाओन लागै से जे छल सैह बुझि सकैत अछि । ओहि बेर जे ज्योतिषीजीक कोंढ़ टुटलनि से फेर जुटि नहि सकलनि आ ने आब जुटतनि ।

तोरा त कलकत्ता मे प्रायः बंगालिन भेंड़ा बनाकऽ राखि नेने छलह । हम अन्दाज करैत छी, आठ नौ बरख पर तों गाम अयलाह अछि !'

'आठ नौ बरख नहि, मुदा जेठ सातम पुरैत छल'-एक निश्वास लैत नारायण उत्तर देलथिन आ पुनः शिवानन्दक आँखि मे अपन आँखि राखि देलथिन ।

शिवानन्द तरहत्थी पर चुटकियबैत तमाकू कें झाड़ि कऽ एक चुटकी हुनका आ एक चुटकी अपना ठोर तर दैत खिस्सा कैं आगाँ बढ़ौलनि–'ज्योतिषीजी क पारिवारिक दुर्घटनाक वर्णन कहाँ धरि सुनबिअह ! उओ तँ अपने संसार सँ चल गेल, मुदा छोड़ि गेल अपन एक छाया .... ओहि सँ तीन मास पूर्व एकटा बटुक जन्मल छलैक। एक दिन लूटन उओ कें हंसी में कहनहुँ रहैक–आचार्य परीक्षा मे हमरा सबकें विश्वास छल जे तोरा फस्ट डिबीजन हेतह, मुद्दा .... । बीचे मे उओ टोक देने रहैक कतहु फस्ट डिवीजन हैबाक चाही।'

पीक फेकैत शिवानन्द फेर कहै लगलथिन–'की कहिअऽ हौ नारायण ! बरखमा दिन पर माइओ मरि गेलैक आ तेसर बरख पूर कऽ ओ छौंड़ा सेहो चलि देलकैक। भरि दिन ज्योतषीजी ओकरा कँखिऔने रहथिन। अहा हा हा ! ओहि दिनुक ज्योतिषीजीक करुणा कै कानब रन वनक पात पात कें कना देलक। माझ आङन मे छोटका मड़वा पर चुपचाप ज्योतिषीजी बैसल आ दूनू आँखि सँ दहोबहो नोर बलानक धार जकाँ झिहिर झिहिर झहरि रहल छलनि। ओही साल कातिक मे आबि मुनचुन सँ जेठ आ लक्ष्मी सं छोट जे रहैक कनक, सेहो समाप्त भऽ गेलैक। ओ तँ रच्छ रहलैक जे ओकर विआह ओही साल नहि भऽ पौलकै। ओकरा तँ सौराठ में अठारह सै टाका गनैत रहैक। पौत्रक मृत्यु सं सोगायल रहलाक कारणें ज्योतिषीजी

टारि देलथिन। अनका जँ एना बज्र पर वज्र लागल रहितैक तँ अपने समाप्त भै गेल रहैत, ओ तँ हुनके सन ज्ञानी, वीर लोक ! बेचारे भिनसर सँ बारह बजे धरि पूजा पाठ मे लागल रहैत छथि। दुपहर मे कनेक आँखि मोड़लनि की लगलाह अपन पोथी पतड़ा उनटावै, पहर दिन अछैत सँझुका महादेवक पूजाक ओरियान मे लगलाह। आ गामक लोक केहन अविवेकी जे खेत पथार, बाड़ी झाड़ी, गाछी बिर्छी, बाँस खढ़ोरि सब ठाम उछन्नर देत छैनि, ततेक विहति करैत छैनि जे उपजलो अन्न घर अनताह से नहि होमै दैत छैनि।

असल मे गप्प भेलैक जे बाबूसाहेब वलागरमजरुआ जमीनक बन्दोवस्ती भेलनि ज्योतिषी जीक नामेँ आ लाठी हाथेँ दखल कैने छलथिन सोनेझा लोकनि।'

सोनेझा नारायणक अपने पित्ती देयाद मँहक। ज्योतिषीजी तावत सुलतान गंज मे पढ़ौनी करैत छलाह। 'गाम पर छोटे भाइ रहथिन आ रहनि रघुनाथ, जे कमतीयाक काज करैत रहनि। बन्दोबस्त लेलाक बाद रघुनाथ गेलथिन बड़दक खोप गाड़ै तँ सोनेझा सब समाङ मिलि बड्ड मारि मारैत गेलथिन। ओ तँ रघुनथवा रहबे करै तेहन वज्र गीरह जे देह झाड़ि चल आयल। एना सोहारि लाठी तँ लोक राहड़ि झाड़क काल राहठो पर ने मारैत छैक। रघुनाथ समाङ सबकेँ बिनु पुछनहि सोझे समस्तीपुर गेल आ सोझे सोझ फौदारी कै देलकनि।'

ज्योतिषीजी के पाछाँ खबरि भेलनि. ओ सपरबो कैलाह जे अपने मे तय तसफीहा भै जाय, मुदा सोने झा कें विश्वास छलनि जे घूसक बल पर हम मोकदमा मे जितबे करबनि। आखिर मोकदमा चलल। ताहि लऽकऽ हिनका सब मे पाटा पाटी, गोला गोली। खान पीन, आबाजाही, बैन तिहार, नोत हँकार सब किछु दिन बन्द छलनि, उमी आ नारायण एक-तुरिया। एतेक विरोध रहलो पर दूनू एक दोसर सँ फराक नहि रहि सकैक।

एहि हेतु नारायण कें बाप एक दिन चारि चटकन कनगोज तका देलथिन आ नारायण उठिकऽ कलकत्ता चल गेलाह से सात बरख पर काल्हिए गाम आयल छलाह। शिवानन्दक मुँह उमीक मृत्युक वर्णन सँ लै ज्योतिषीजी पर बरिसल बिपत्तिक पाथ-रक वर्णन सुनैत सुनैत नारायणक मोन कतेक गह्वरित भऽ गेलनि से शब्दें कहल नहि जाय।

बैसाख मासक समय, पाखरिक कात कपीपरक छाहरि, कनेक कनेक जलहवा चलैत, ओही गह्वरित मोने आ उँचका सीर पर मूड़ी राखि जे पड़ला से कखन निद्रा आबि गेलनि से अपनहुँ नहि बुझलथिन।

किच्छु सँ किच्छु बीति जाउक, मुदा शिवानन्द कें दिन मे सूतल आइ धरि क्यो नहि देखने हेतैक। कुल कुदरति तीन सवा

तीन बीघा खेत जोतनिहार रहितो, अपन सात गोटेक परिवार केँ चलैबाक हेतु, अपन खुरपी ओ कोदारिक बलेँ शिवानन्द ककरो सँ पैंच उधार नेन होइथिन से प्रायः ककरो स्मरण नहि हेतनि। हुँऽकाज करतेबता आबि गेला पर भने पैंच उधार भेल होइनि। से नारायण तँ सूति रहल, किन्तु शिवानन्द अपन खुरू खुरू मे लागि गेल।

पहर भरि दिन अछैत नारायणक निन्न टुटलैक। ओ धड़-फड़ाइत शिवानन्दक खोपड़ी मे पहुँचल। शिवानन्द छोट सन कुंडो सोटा अपन खोपड़िये मे रखैत छल। दू चुटकी भाङ आ चारि टा मरीच दऽ पिसवाक उपक्रम करिते छल कि अङपोछा झाड़ैत नारायण खोपड़ी मे पहुँचल। शिवानन्दक बटुआ सँ दू चुटकी तमाकू बाहर कऽ चून मिलबैत प्रकृतिस्थ भऽ बैसल तँ गम्भीर होइत शिवानन्द केँ कहै लगलैक-हौ, एखन एकटा स्वप्न देखलहुँ अछि। सबटा अद्भुते बात।

शिवानन्द कुंडीक कान पर सोटाक डरेँ लटकल भाङ केँ समटि बटोरि बीच कुण्डी मऽकऽ रखैत, सोटा भँजनाइ छोड़ि, उत्सुकता भरल आँखिएँ नारायण दिस तकलकैक।

नारायण स्वप्नक वर्णन करै लागल हम एखन पहिने सनिञा केँ सपना मे देखलिऐक अछि जे ओ नूनू काकाक घैलची पर सँ घैल उठाकऽ पोखरिक पानि अनवा लेल पछवरिया पोखरि

पर आइल अछि, हमहूँ लोटा लऽ पोखरि दिस विदा भेलहुँ अछि। उग्री पहिने सँ ओहिठाम हाथ मटिया रहल अछि। हम उतर-बरिया पछवरिया कोन दिस पोखरि दिस गेलहुँ अछि। उग्री हाथ मटिया कऽ उप्पर आबि दतमनि कऽ रहल अछि आ मनिञा घाट पर उतरऽ लागलि अछि से ओकरा पैर लागि उग्रीक लोटा गुड़कि गेलैक अछि। पानि हेड़ा गेलाक कारणें बाट पिच्छड़ भऽ गेलैक अछि। लोटा केँ हड़बड़ा कऽ पकड़बाक हेतु जे उतरैत अछि से धड़फड़ा कऽ खसि पड़ैत अछि। घैल फूटि जाइत छैक। ताही काल मे नूनू काका पहुँचि जाइत छथिन। उग्री मनिञा केँ उठैबाक चेष्टा कऽ रहल छैक की नूनू काका उग्री केँ पाँच सात घड़मेच्चा मारैत छथिन ई कहैत जे बूड़ि नाढ़र सब नहितन, एखने सँ लगलाह झिझिर कोना खेलाय, बीत भरिक छौंड़ा सब आ अभिमन्यु जकाँ सब किछु गर्भे सँ सिखने अयलाह अछि। कुल मर्यादा केँ धो कऽ चाटि लैत गेलाह। चलह आइ गाम पर, मोगलो भरि घोड़नक छत्ता हम पीठ पर झाड़ि दैत छिअह। हम ताबत पहुँचैत औ ताबत नूनू काका टोल दिस चल जाइत छथि। मनिञा केँ ठकमूड़ी लागल छैक। ओकर बाद फेर कोना मोकामा पहुँचि गेलहुँ अछि से नहि मोन अछि। स्मृति शक्ति पर जोर दऽ नारायण ओहि घटना केँ स्मरण करक चेष्टा करै लागल आ शिवानन्द कुण्डी-मे सोंटा भाँजनाइ आरम्भ कैलक की नारायण फेर स्वप्नक घटना सुनबै लगलैक-कनेको नहि मोन

पड़ैत अछि जे कोना मोकामा पहुँचि गेलहुँ। मोकामा स्टेशन पर दूनू यार बैसल छी। ओ कहि रहल अछि जे नूनू काका एकदम फुसिए हमरा पर कलंक जोड़ि देलनि। आब ई कलंकित मुँह लऽकऽ कोना हम समाजक सोझाँ आँखि उठा सकब। तावत गाड़ी गड़गड़ाइत पहुँचि गेलैक अछि। ओ उठि कऽ ठाढ़ होइत कहैत अछि—'यार हमरा बाबू कें आब तोरे लोकनि देखिहुन्ह, हम जाइत छि अऽ।' ई कहैत ओ रेलक पटरी पर कूदि पड़ैत अछि। हम जाबत हाँ हाँ करैत छी तावत तँ मूड़ी एक कात आ धड़ एक कात भऽ जाइत छैक। ताहि पर निन्न टूटि गेल अछि।

शिवानन्द जतेक काल स्वप्न मे भेल घटनाक वर्णन सुनि रहल छल ततेक काल धरि मे ओकरा मानस पटल पर मनिञाक संग भेल नूनू काकाक चर्चा घूमैत रहलैक।

मड़रक बेटी मनिञा, छरहरि, पातरि छितरि, जमुनिञा रंग जेना शालग्राम कें क्यौ घिउ हँसोथि देने होइनि, भीतर सँ रत-रत करैत। ओकर बापे आन गाम सँ पड़ा कऽ आयल छलैक। बाल बच्चा सब संगहि रहैक। बसबाक हेतु एक कट्ठा जमीन मड़लकनि तँ नूनू काका मनिञो कें देखि घर सँ उतर-वरिया बाड़ी मे एक कट्ठा दऽ देलथिन। मनिञाक पीठ पर सोह-रैत केश, कमलक छोटकी पत्तीसन रक्तिम आँखि, रोलल बाँहि,

मुकुलित वयस देखि, ने जानि की सब सोचि गेल छलाह। मइर लगलनि हऽर जोतै आ मङराइत लगलनि बासन थारी माँजऽ। मनिञा आङनक हुच्ची फुच्ची काज करै लगलनि, कनेक दाइ बौआसिनक नूए खीचि फल्हारि अनलक, कोनो कनैत नेने कें कोम्हरो सं टहला बुला अनलक, धीया पूता कें कनेक तेले कूँड़ दऽ देलकक, आङन मे स्त्रीगणक पैर मे तेले लगा देलक। छोट नेना सभक केथरी खीचि अनलक। मनिञा कें दूनू साँझ बुतात आ कपड़ा लत्ता देथिन, मनिञाक माय ऐंठ कूँठक अतिरिक्त एक बट्टा दिन आ एक बट्टा राति भात पबैत छलि। प्रसन्न रखबाक हेतु नूनू काका ऊपर सँ तीन पौआ कऽ सिदहा से देल करथिन।

मनिञा तँ बहुआसिने सभक फेरन फारन पहिरैत छलि। एहि आङन, ओहि आङन धीया पूता कें बुलैबाक हेतु जखन मनिञा आङन सँ बहराइत छलि आ छमकि कऽ डेग उठाबै तँ कतेक बूढ़ो पुरान लोकक मोन में सारंगी बाजि उठैत छलनि आ नवतुरिया लोकक आँखि तँ सहजहि ओकरा संगहि अङने आङन बुलि अबैत छलनि।

ई सब बात सोचैत शिवानन्द कहाँ सँ कहाँ भसिया कऽ चल गेलाह, मुदा फेर साकांत होइत कुण्डो मे पड़ल भाङ कें सोटिआबै लगलाह आ संगहि कोना मइर ई गाम छोड़ि पड़ायल, कोना

एक दिन दोरुक्खा मे नूनू काका मनिञा कैँ घेड़लथिन आ कोना ओ छौंड़ी बनकट्टावाली भौजी लग जाकऽ सुटुकि रहलि तकर वर्णन करैत रहलाह। अन्त मे भाङ तैयार भऽ गेलनि आ घोंटि घोंटि 'भैरवानाञ्च तृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा' मन्त्रेँ अभि-मन्त्रित कऽ दूनू गोटे पीलनि आ तमाकू ठोर तर दैत पोखरि दिस चल गेलाह।

जावत धरि जमीन्दारी छलैक तावत तँ जेठ-रैयति लोकनिक गाम मे बड़ धाख, बड़ रोआब रहनि। लक्ष्मीपुरक जेठ-रैयति लीलाधरझा आ कनकपट्टीक जेठ-रैयति सोनेझा। अपना जिनगी मे बाबू साहेब कैँ मेहन्ते रहलनि जे मालगुजारी असुलि कऽ ई दूनू गोटे सोड़हो आना बाबू साहेब कैँ दाखिल कैने होथिन। दूनू बंऽड़ा, दूनू लड़क्का, दूनूक डरेँ परोपट्टाक खऽढ़ जरैत आ एही स्वभाव-साम्यक कारणें दूनू गोटा कैँ गंगा पैसि दोस्ती। एकक नीक बेजाय मे दोसर अपन गर्दनि देबाक हेतु सतत तैयार।

एम्हर ज्योतिषी जी सन भद्र लोक। आँखिक सोझा मे कोनो वस्तु क्यो उठा लेतनि तँ की ज्योतिषीजी टोकथिन? कथ-मपि नहि। यदि अहाँ ओहि दिस ध्यान आकृष्टो करबनि तथापि ओ कहताह जे नहि नहि, टोकिऔक नहि। जँ चोरा लेबाक इच्छा भइए गेलैक तँ लऽ जाय दिऔक। टोकबैक तँ

बेचारा कैँ लाज हेतैक। घीवक घैल किएक ने क्यौ हेड़ा देने होइनि, मुदा आइ धरि झझकि कऽ ककरो एक शब्दो नहि कहने होइथिन, हाथ उठौबाक तँ चर्चे कोन।

संयोग एहन लागि गेलनि जे एहन नीक लोक रहितो सोने झा सँ गरमजरुआ जमीन लऽकऽ ज्योतिषीजी कैँ लड़ि जाय पड़लनि। आ ताही लऽकऽ लीलाधरझा सँ सेहो विरोध बूझक चाही।

एहि बेर लीलाधर कन्यादान करबे करताह। बेटी अजग्गि तँ नहि भेलनि अछि, मुदा आगाँ अढ़ाय वर्षक अतीचार पड़ि रहल छैक। अतिचार बीतैत बीतैत तँ अजग्गि भइए जैतनि तँ जेना तेना कन्यादान भऽ जाय ताहि पर तुलल छथि।

नारायण केँ एकर सुनि-गुनि लगलैक सोनेझाक दलान पर। तखने मोन मे भेलक जे ज्योतिषीजीक बालक मुनचुन आब विआहक योग्य भऽ गेलनि। यदि लीलाधरझाक आहिठाम भऽ जइतनि तँ सोने झाक आ ज्योतिषीजीक जे विरोध छैनि तकरो उपशमन भऽ जइतनि आ ज्योतिषीजी जे लचरि गेलाह अछि से लीलाधर झा सम्हारि लितऽथिन। यद्यपि आइ धरि ज ककरो स सोनेझा मातु खैलनि त ज्योतिषी जी सँ। सेहो छल प्रपंचक बलेँ नहि. धर्मक बलेँ। सोनेझाक सब समाङ कैँ तीन तीन सै जड़ीमाना भेलनि। एगारह समाङ मुद्दालह

रहथिन आ एगारह तीया तैं तीस सै टाका ठाढ़े ठाढ़ गना लेल-कनि। टाका जुरैबामे जे विलम्ब भेलनि से तीन दिन धरि एगारहो समाङ कें हाजतिए मे रहै पड़लनि। तथापि लीलाधर झा सन आत्मीय मित्रक हेतु सोनेझा झुकथि आ ज्योतिषीजीक ओतै सम्बन्ध करा देथिन तँ अपनो विरोध दूर हेतनि आ ज्योतिषीजी तं एहन बिरोधक अन्त चाहिते छथि।

यैह सब सोचि नारायण शिवानन्द सँ एहि कथाक उत्थान करबाक आग्रह कैलथिन। पञ्चरिया पोखरिक पीपर तर दुपह-रिया मे नारायण पहुँचलाह।

लीलाधरझा, नामी, गरामी, कलामी लोक तँ अवश्य छथि, मुदा कन्यादानक प्रसंग हुनक विचार छनि जे घर धरि खूब प्रतिष्ठित हो धऽन बीत किछु कमो हाइक तँ नहि क्षति, मुदा वर प्रतिभावान होथि, जेहन योग्य लोक आइ धरि गाम मे क्यो नहि अनने हो।

आब तं महादेवझा सँ बेसी धऽन झा आ धऽनो झा सँ बेसी विद्याझाक महत्व। तखन जँ पाँजिओ पाटिक लोक होथि तँ आरो सान में सुगन्धि है त एतबा कथा लीलाधरझा अपना मुहें बजैत छलाह।

शिवानन्द नारायणक गप्प सुनि पुछलथिन जे ज्योतिषी जीक ओहिठाँ लीलाधरझा के पसिन्न पड़तनि ?

'नहि पसिन्न पड़बाक तं कोनो कारण नहि देखैत छिऐनि। कहबी छैक–'सड़लो भुन्ना तँ रोहुक दुन्ना' से कतबो लचरि गेलाह अछि ज्योतिषीजी, तथापि आस्थापात तँ थोड़ नहि छनि। यश प्रतिष्ठा में हुनका संग एखन एहि जिला जयवार में क्यो अँटथिन तकर संभावने नहि, वऽर बरगुन उत्तम छैके आ ज्योतिषीजी सागरपुर पाँजी लोक थिकाह। हमरा जनैत लीलाधर झा जेहन काज ताकि रहल छथि, बस तकर अनुरूप काज हैतनि। हमरा तँ सन्देह अछि जे ज्योतिषीजी कें ई काज पसिन्न पड़नि वा नहि।' नारायण अपन विचार सोझरा कें शिवानन्दक सोझा में रखलथिन।

शिवानन्द उत्तर देलथिन 'ओना तँ ज्योतिषीजी पुरान विचार-धाराक लोक छथि, तैं सागरपुरक यदि रक्षा चाहथि तँ कोनो आश्चर्य नहि, किन्तु एकटा युक्ति छैक, जाहि सँ ज्योतिषीजी मानिओ जाथि तँ सेहो कोनो आश्चर्यक बात नहि।'

ज्योतिषीजी दलानक आगाँ में ज जमीन छनि से थिकनि सोनेझाक। आ ई जनिते छह जे तोहर सोने काका कोनो मूल्य पर ओ ज्योतिषीजी कें नहि देथिन आ जौं लीलाधरझा चाहथि तँ चुटकिओ बजेवाक देरी नहि हैतनि। आ दोसर बात एमहर आबि कऽ तान साढ़े तीन हजार कर्जा सेहो भऽ गेलनि अछि, से यदि सधा देथिन, आ तेसर बात ई जे लगक कुटुम्ब हेथिन, बिलटैत आस्था पातक रक्षाक भार सेहो लऽ लेथिन। तखन

ज्योतिषीजी मानि जाथिन से हमरा सम्भव बूझि पड़ैत अछि। हमरा जनैत लीलाधरझा एहि काज कें मोन सँ पसिन्न करथि वा नहि।' नारायणक मुँह पर प्रश्नक मुद्रा देखि शिवानन्द अपन तर्क सुना देलथिन।

नारायण लीलाधरझाक दिस सँ निश्चिन्त रहबाक तर्क मे कहलथिन्ह—'हम सुनलहुँ अछि जे मूसे पहलमान कें कोनो पतिया लागल छलनि, ताहि मे ज्योतिषीजीक संग मुनचुनो लक्ष्मीपुर गेल रहनि, ताहि मे सुनैत छिऐक…· ….।'

शिवानन्द बीचे मे लक्ष्मीपुरक आँखिक देखल घटनाक वर्णन सुनबऽ लगलथिन–'ओहि पतियामे तँ परोपट्टाक लोक जूटल छल। बड़का भुमगोल उठल रहैक। कोनो पण्डित कहथिन 'मूसे पहलमान कें पतिया नहि लगलबनि। कुश्ती मे दूनू गोटे उतरल छलाह मूसे पहलमान आ सुट्टू। कोनो उभट लागि गेलनि सुट्टू पहलमान कें। ओही बेथें तीन मास घिघरी काटि अन्त मे मरि गेलाह ताहि लै पतिया कोना लगतनि?' आ किछु पण्डित कहथिन जे ब्रह्म हत्या साधारण पाप नहि थीक, पतिया लगबे करतनि।

'तखन की भेलैक?' नारायण उत्सुकता सँ पुछलथिन। 'दछिनवारि गामक बूढ़ा पण्डितजी सेहो बजाओल गेल छलाह। हुनका मतें पतिया लगबे करनि। से हुनकर पच्छ लऽ कऽ जे मुनचुन शास्त्रक वचन सब फर्र फर्र सुनाबै लगलनि तँ परोपट्टाक

लोक दंग रहि गेलाह। बूढ़ा पण्डितजी पीठ ठोकि देलथिन्ह आ बेर बेर माथ ठोकि कऽ आशीर्वाद देथिन।'

शिवानन्दक मुँहे ई वर्णन सूनि नारायण कहलथिन -'हँऽ से सुनलहुँ अछि जे लीलाधर काका तहिए सँ लुसफुसाइत छथि जे जँ एहन वऽर भेटै तँ चोरो केँ नहि पुछबैक।

शिवानन्द तमाकुल—जे बड़ीकाल सँ गप्पक सोह मे बिसरि गेल छलाह- बटुआ सँ बाहर करैत कनेक पैघ सन निसास लेलनि आ कहै लगलथिन—'हिनका दूनू गोटा केँ तँ अवस्से बड़ जुगलतगर काज हेतनि, मुदा ओ बतहा माननि तखन ने।'

नारायण पुछलथिन—से की? की वऽरोक दिससँ कोनो आपत्ति भऽ सकैत छैनि?

हँ ओकर सिद्धान्त छैक जे अशिक्षिता कन्या सँ किन्नहुँ विवाह नहि करब।

'आरे ई सब तँ नवका युग मे चलनि भेलैक अछि, सेहो आब सब लोक किछुने किछु बेटिओ केँ पढ़बिते अछि। लिखने पढ़ने की हेतैक। एही ठाम बिरनी ततमाक बऽहु चाहतह तँ तीन कौड़ी मे बेचि अनतह आ हमरा पिसिऔतक आङन वाली,जनाढ़केर छथिन, से मैट्रिक पास छथिन आ एहन सुध-बलेल लोक जे जखन जे चाहैत छैनि ठकि लैत छैनि। लिखब पढ़ब भिन्न बात थिकैक आ चतुरता भिन्न बात।'

नारायणक ई गप्प सूनि कऽ शिवानन्द कहलथिन—'कहबैक

मुनचुन केँ, मुँह नहि खखांड़ि लेअय तँ कहब हमरा।'

नारायण युग पर व्यंग्य करैत कहलथिन—हौ कहाँ छह? आइ काल्हुक छौंड़ा केँ जहाँ कन्याक फोटो देखा देबहक, सुनर-ताइक थोड़ेक वर्णन कऽ देबहक, बस देखि लैह ''' ।

'ताही भरोसेँ नहि रहह।' शिवानन्द मुनचुनक व्यक्तिगत दृष्टिकोणक व्याख्या करैत कहलथिन—'ओ छौंड़ा कट्टर सिद्धान्त-वादी अछि। प्राचीनताक निर्वाह करैत नवीन युगक अनुकूल अपना केँ बनैबाक पक्षपाती। ओकर अपन जीवन-दर्शन छैक। आँखि मूनि कऽ ने नवीनतेक समर्थन करतह ने प्राचीनतेक विरोध। एहि प्रसंग ओ बहुत स्पष्ट विचार रखैत अछि। ओक-रा सिनेमाक अभिनेत्री नहि चाहिऐक, चाहिऐक जीवन संगिनी। देखबा सुनबा मे सुरैया, नरगिस सन होइक आ ताही गौरवेँ टीक धैने रहैक अथवा भर्त्ता माने आलूक भर्त्ता बूझैक तँ एहन स्त्रीक संग जीवन बितैबा सँ नीक कुमारे रहब केँ बुझैत छैक। तैँ सब सँ कठिन कार्य ओकरे सहमत करब अछि।'

—'तोँहूँ सियारक गूह केँ पहाड़ बनौने जाइत छह? ईहो कोनो बात थिकैक? ओकरा कहबैक जे कन्या लिखलि पढ़लि छैक ताहि मे की लागत?'

'फूसि कहबहक?' कनेक विस्मित होइत शिवानन्द पुछल थिन।

'फूसि कोना भेलैक?' विहुँसैत नारायण उत्तर देलथिन–लिखलि पढ़लि माने मूरुत। देखवा सुनवा मे सुन्दर छैके।

सोने काकाक पौत्रक उपनयन मे एतहु आइलि छलैक। हमरा लोकनिक नीक जकाँ देखलि अछि।

मूरुत शब्द सुनि कऽ शिवानन्द ठहाका दऽ उठलाह। कहलथिन—'बेस, धराबह जोगाड़, मुदा मुनचुन कें पढ़बाक खर्च लीलाधरझा देथिन किने ?'

—'संस्कृत पढ़निहार लोकक खर्चे की ? तखन पेटक खर्च तँ खा न खा ज्योतिषीजी तेहन नितान्त लोक नहि छथि जे लेथिन। तखन रहल आइली बाइली दस टाका खर्च, से हिनका देबाक चाहिऐनि।'

शिवानन्द आश्वस्त होइत कहलथिन-'तखन काज भऽ जाइनि से सम्भव।'

नारायण लीलाधरझा सँ गप्प करबाक भार उठबैत शिवानन्द कें ज्योतिषीजी सँ गप्पक लाड़चाड़ करबाक भार दैत उठि कऽ विदा भेलाह तँ शिवानन्द जल्दी जल्दी तमाकू झाड़ि एक जूम देलथिन आ भाङक बेर मे आबक नोत सेहो दऽ देलथिन, ई कहैत जे 'सात बरख धरि कमैलाह अछि, आइ चिन्नी देबहि पड़तह।'

× × × ×

शिवानन्द पहिने मुनचुने कें एहि पत्त मे अनबाक उपाय सब सोचै लगलाह, आ नारायण एक दिन अरबद्धि कऽ लीलाधरझा सँ गप्प करबाक हेतु लक्ष्मीपुर पहुँचलाह।

लीलाधरझा एहि कथाक प्रसंग सूनि "सुनलक ढोलिया टीक भेल ठाढ़" एहि लोकोक्ति केँ चरितार्थ करै लगलाह। जखन नारायण लीलाधरझाक स्वरस पौलनि तखन ज्योतिषीजीक ओहि ठाम अखाड़ा जमबै लगलाह। तमाकू सुपारी चलैत जाइनि आ संगहि अपन जीवनक अतीत घटनाक वर्णन ज्योतिषीजी प्रसङ्गतः सुनबैत जाथिन।

नारायण उम्री सँ वर्ष दिनुक जेठ, दूनू लङोटिया इआर, ताहि लऽ कऽ ज्योतिषीजी केँ नारायणक प्रति सहज स्नेह-भाव। गप्प केँ महिअबैत महिअबैत एक दिन नारायण लीलाधरझाक ओहि ठामक चर्चा कऽ देलथिन। संगहि ईहो कहलथिन जे अपने आब वृद्ध भेलहुँ. घर दिनानुदिन लचरल जा रहल अछि। ओ धऽने जऽने पूरल लोक छथि। जखन कन्या एहि घर औतनि तखन तँ ईहो घर अपने हेतनि। तेहना स्थिति मे एहू सम्पत्तिक रक्षाक भार हुनका कपार पर पड़िए जैतनि। कर्ज वर्ज सधा देबै पड़तनि। तखने तँ ई काज भऽ सकैत छैनि, अन्यथा मुन-चुन सन सुयोग्य वऽर नहिएँ भेटि सकैत छैनि। धन मे जे बीस होथि. ने तँ जाति-पाँजि, यश-प्रतिष्ठा एहि मे तँ ओ अपनेक पासङो नहि भऽ सकैत छथि।

ज्योतिषीजी नारायणक सब गप्प सुनि लेलथिन। कनेक काल धरि मनहि मन जेना किछु गुनैत रहलाह। हुनक मानस-पटल पर भूतकालक ओ कारुणिक घटनाक-चक्र, पुनि वर्तमान-

कालक पारिवारिक अंजाल जपाल, समाजक लोकक अविवेक; आस्थापातक छिज्जति, सब नचैत रहलनि आ किछु काल लीला-धरझाक संग सम्बन्ध भेला उत्तर हुनका प्रभावेँ होमऽ वला सुविधाक कल्पना अबैत रहलनि। पुनः एक दीर्घ निसास लैत छोट सन वाक्य मे उत्तर देलथिन–'पहिने जे विवाह करताह तनिकर विचार तँ बूझू।

'अपनेक विचार यदि भऽ जाय तं की ओ विचार सँ बाहर जयताह?'

नारायणक प्रश्न सूनि ज्योतिषीजी शोभापुरक कथाक घटना सुना देलथिन। शोभापुरक जमीन्दार सर्वनारायण चौधरी केँ लाख सँ उपरेक सम्पत्ति। सन्तानक नाम पर हुनका एकमात्र कन्या। सर्वनारायण चौधरी बड़ रईस लोक। घोड़ा, हाथी, मोटर, बग्गी, खड़खड़िया, अलाङ फलाङ, एतेक टब्बर बड़का बड़का राजा महाराजाकेँ सेहो कतेक केँ नहिओ रहैत छनि। काशी मे, वैद्यनाथ धाम मे अपन मकान। जातिक ओ नि-छच्छ जयवार। संयोग सं एकबेर वैद्यनाथ धाम मे ज्योतिषीजी सँ भेट भेलनि। मुनचुन सेहो संग रहथिन। बाबू साहेब सतरंज खेला-इत छलाह आ संगहि गप्प सेहो चलैत रहैनि। बहुआसिन गेल रहथिन बाबाधाम मे हरिबंश सुनबाक हेतु। क्यो गोटे ज्योतिषी-जीक ज्योतिष शास्त्रक विशेषज्ञताक वर्णन हुनका लग मे कैने रहनि। तं अपन टिप्पनि देखैबाक हेतु बजौने छलथिन। से

ज्योतिषीजी टिप्पनि देखि रहल छलथिन आ मुनचुन टुकुर टुकुर हुनक खेल देखि रहल छल।

अकस्मात् बाबूसाहेबक चालि उल्हड़ भऽ रहल छलनि। यदि ओ पैदा बढ़ितथि तँ दोसाहा पर फर्जी मारल जइतनि। मुनचुन कें नहि रहि भेलैक। जहाँ बाबूसाहेब पैदा उठौलनि की लगले टोकि देलकनि। बाबूसाहब पहिने मुनचुन दिसि तकलथिन. फेर अपन चालि दिस तकलनि। आ तकर बाद हुनकर ध्यान मुनचुनक बयस दिस गेलनि, वेसी सँ बेसी एगार-हम बारहम मुनचुन कें छलैक। एकर सूक्ष्म दृष्टि देखि आश्चर्य चकित रहि गेलाह। तथापि बाबूसाहेब ओ बाजी हारि गेलाह तँ मुनचुन कें उत्सुक देखि, खेलैबाक आग्रह कैलथिन। संयोग कहक चाही। तीन टा मोसाहेब बेराबेरी खेलाइत गेलथिन आ हारैत गेलथिन। एहि घटनाक पाँच वर्षक बाद जखन बाबूसाहेब कें कन्यादानक बेर अयलनि तँ मुनचुनक प्रसंग कथा पठौलथिन। ज्योतिषीजी कें चारू भाग सँ लोक कहऽ लगलनि जे जाति पाँजि लऽकऽ की लोक धो धो चटैत अछि। ककरो सँ पुछबाक कोनो काज नहि, अधिकार तकबाउ आ आँखि मूनि कऽ काज कऽ लिअऽ।

जखन ज्योतिषीजी अधिकार तकाबऽ कहि देलथिन तँ मुनचुन कें चारू कात सँ संगी साथी जलसा माङै लगलैक– 'आब कोन, आब तँ तों बड़का स्टेटक मालिक बनि रहल छें इयरबा, मार

जाँघ मे चाटी। दूर करैत रह बग्गी आ खड़खड़िया पर। शोभे पुरक बाबूसाहेब क ओहि ठाँ जखन दुलहा बनि कै जैबे तखन की हमरा सबकेँ दर्शनो देबे।'

अपना माइ-बापक सबसँ छोट सन्तान मुनचुन ओहुना किछु दुलारू रहै। आन भाय सभक मृत्युक कारणेँ आरो दुलारू भऽ गेल रहै। ताहि पर संस्कारी लोक। सोभे बाप केँ जाकऽ कहलक जे हम कोनो बाबूसाहेबक बेटी सँ विवाह नहि कऽ सकैत छी।

ज्योतिषीजी नारायणकेँ कहलथिनजे हम एहि पर कहलिएनि-'लाखपती लोक छथि चौधरीजो, हुनका लोकनिक बाद सबटा सम्पत्तिक मालिक अहीं हैब, हम ओहि धन सं सुख नहि करब गऽ।' ताहि पर ओ उत्तर देलनि से सूनब ?

नारायण जावत हऽ कहथिन तावत ज्योतिषी फेर कहऽ लगलथिन-'कहलनि जे सम्बन्ध सरोकार समाने मे नीक होइत छैक। 'समाने शोभते प्रीतिः। बेगर्तें लोक अपना सँ बड़काक घर मे विवाह कऽ लैत अछि। तकर परिणाम होइत छैक जे स्त्री चाहैत छैक ठीक हाथ मे राखी। ओकरा गौरव रहैत छैक जे हमरे बापक धन लऽक ई इलवाइस करैत छथि तँ हमरा लात तर किएक ने रहताह। मौगिआह लोक तँ सहि लैत अछि, मुदा पुरखाह लोक केँ ओ जीवन नारकीयो जीवन सँ बत्तर लगैत छैक। समाज यदि एहि तृष्णा केँ छोड़ि देअय आ

समान मे सब सम्बन्ध करै तँ एखन जे विषमता बढ़ि रहल छैक ताहू मे सुधार होइक। हम स्पष्ट शब्दें चौधरी जी कें समाद पठा देलिऐनि जे ओतेक पैघ घर मे सम्बन्ध करबाक सामर्थ्य हमरा लोकनि कें नहि अछि। अपनेक उदारताक हेतु आभारी रहब।

नारायण वर्णन सूनि कऽ कहलथिन—मुनचुन कें रास्ता पर अनबाक चेष्टा हमरा लोकनि करब।'

ज्योतिषीजी ताहि पर उत्तर देलथिन-तखन हमरा दिस सं कोनो विरोध नहि हैत।

× × × ×

२

सोड़ह सत्रह वर्ष मात्रक मुनचुन पूर्व जन्मक संस्कारें कहू. अथवा ज्योतिषीजीक पुण्य-प्रतापें, ज्योतिषक मध्यमा परीक्षाक संग प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक सेहो पास कैलक। अपना ज्योतिषीजी कें गन्धो नहि लगलनि जे मुनचुन अङरेजियो पढ़ैत अछि।

बहुतो इष्ट-मित्र ज्योतिषीजी सँ आग्रहो करनि जे मुनचुन कें आजुक युगक अनुकूल शिक्षा दिअनु। आब तँ संस्कृतक युग समाप्त भऽ गेलैक। ताहि पर ज्योतिषीजी यैह उत्तर देल करथिन जे सब सँ पहिने तँ हम यैह मानक हेतु तैयार नहि छी जे संस्कृतक युग समाप्त भऽ गेलैक। एतबा निश्चित बुझैत जाउ जे जाहि दिन संस्कृत लुप्त हैत, ताहि दिन भारत इङलिस्तान बनि जायत। कतबो लोक नास्तिक भेल अछि, कतबो आचार-विचार नष्ट-भ्रष्ट भऽ गेलैक अछि, तथापि माय-बापक श्राद्ध नहिंयो छोड़लक अछि। उपनयन-विवाह नहिंयो छोड़लक अछि, तीर्थ-व्रत नहिंयो छोड़लक अछि। आ एहि सब ठाम संस्कृत कें छोड़ि

दोसर कोनो शरण नहि। दोसर बात मानि लिअऽ जे संस्कृतक एतेक ह्रास भऽ गेलैक अछि जे जीविकाक हेतु ई विद्या निरर्थक प्रमाणित भऽ रहल अछि, तथापि मुनचुन कें भगवान ततबा देने छथिन जे नीक लूरि-मुँह रखताह तँ अन्न-वस्त्रक कष्ट जीवन भरि नहि हैतनि। तखन जे हम कौलिक-विद्या छोड़ि अनेरे गिट-पिट पढ़ाकऽ भविष्य कें दूरि करिऐनि ताहि सँ कोन फल ? संस्कृत पढ़ने दू चूरू जल तँ देवता पितर कें दैत रहथिन।

यदि ज्योतिषीजीक अनजानो मे मुनचुन अङरेजी पढ़ैत छल तैओ, वेष-भूषा में वैह धोती कुर्ता 'नित्य अष्टोत्तरशत गायत्रीक जप, सन्ध्या-वन्दन बिनु कैने अन्न ग्रहण नहि करब' आदि नियमक पालन बड़ दृढ़तापूर्वक करैत छल। अपना भविष्यक सम्बन्ध मे एक टा स्पष्ट उद्देश्य रखने। एहि सब कारणेँ अपना वर्गक लोक पर तँ सहजहि जे अपना सँ श्रेष्ठो जन पर मुनचुन धाख रखैत छल। ताही सब कारणेँ शिवानन्द केँ जल्दी साहस नहि होइत छलनि।

एक दिन पूर्वक अनुसार योजना बनाय शिवानन्द मुनचुन केँ गण्डक कातक शिव मन्दिर पर लऽ गेलथिन, जाहि ठाम लीलाधरझाक कन्या पहिने सँ आइलि छलथिन।

कन्या अवश्य सुन्दरी छलैक। गोरि, नारि, छुरिया नाक, पैघ पैघ आँखि, कारी भौर केश, घनगर पैघ पैघ पपनी, उछत-गर कपार, पातरि-छीतरि, सोटलि-साटलि।

ने मुनचुन कें बूझल जे कन्या देखैबाक उद्देश्यें शिवानन्द हमरा एतऽ अनलनि अछि आ ने छाया कें बूझल जे वर कें देखैबाक हेतु हमरा शिव-मन्दिर आनल गेल अछि।

संयोग एहन भेलैक जे पूजा कऽ छाया मन्दिर सँ बहराइत छलि आ मुनचुन मन्दिर मे प्रवेश कऽ रहल छल। मुख्य द्वार पर एकक दृष्टि दोसर पर पड़लैक। एक क्षण मुनचुनक दृष्टि छायापर रहलैक अवश्य, किन्तु दोसरे क्षण ओकर अन्तश्चेतना जोर सँ एक झटका मारलकैक। ओकर आँखि मिलमिला गेलैक, ओ डेग झाड़ि आगाँ बढ़ि गेल, किन्तु छायाक अन्तःप्रान्त मे एक अद्‌भुत आम्रेड़न होमऽ लगलैक। ओ महादेव कें मनहि मन की सब गोहरौलक से वैह जनैत अछि, ओकर हृदय अकस्मात् आन्दोलित भऽ उठलैक, बिनु बुझनहुँ जेना अन्तर संकल्प कऽ लेलकैक 'वरौं शम्भु न तो रहौं कुमारी।'

संगक लोक सब चलबाक उपक्रम केलकैक तँ छाया विदा भेलि अवश्य, किन्तु हृदय मन्दिर मे छूटल जाइत छलैक। आँखि एक बेर ओहि मूर्तिक दर्शनक हेतु रहि रहि कऽ मन्दिरक दुआरि धरि जाकऽ टकरा जाइक।

शिवानन्द मुनचुनक संग जावत दर्शन कऽ मन्दिर सँ बहरैलाह तावत लक्ष्मीपुरक स्त्रीगणक दल पन्द्रह बीस लग्गा आगू बढ़ि गेल छल। शिवानन्द कहलथिन 'ओ कन्या लीलाधरझाक

छलथिन। देखलहक केहन सुन्नरि छैक? एही कन्याक प्रसंग लीलाधरझा ज्योतिषीजी सँ तोहर मङनी करै चाहैत छथुन। हुनका प्रथम कन्यादान थिकनि। ओ लग मे एहि द्वारेँ चाहैत छथि जे कन्या लग मे रहतनि आ तोरो घर जे लरखरायल जाइत छह से सबटा सम्हारि देथुन। अपना पढ़बाक हेतु दस टाका मासिक खर्च सेहो देथुन मुदा सब दारमदार तोरे पर छह। ज्योतिषीजी नारायण केँ स्पष्ट शब्देँ कहि देलथिन जे बऽर पहिने तैयार होथि। गौआँ लोकनि जे विद्दति करैत रहैत छथुन से लीलाधरझाक दोस्ते थिकथिन सोनेझा, ताहि द्वारेँ दूनू गोटाक दहसति बनल रहतैक। ज्योतिषीजीक पैरूख आब घटलनि, क्यौ करताइक नहि छह। से सब नीक जकाँ सोचि-विचारि लैह, तखन हमरा विचारेँ ई काज कऽ लैह।'

मुनचुन स्तब्ध भेल शिवानन्दक सब विचार सुनलनि। ओतेक काल धरि मुनचुनक मानस-पटल पर कखनहुँ छायाक पातर-छीतर, गोर-नार देह, कारी, भौंर केश, पैघ पैघ पपनी बला कारी कारी आँखि, ओ निर्निमेष दृष्टिओ अपना दिस तकैत स्वरूप, नाचै लगैक, कखनहुँ गामक लोकक उच्छृन्नर, पिताक वृद्ध-खिन्न-शरीर, कखनहुँ लीलाधरझाक परोपट्टा मे कुख्याति, कखनहुँ समाजक विषम-स्थिति आ पुनः छायाक निर्निमेष दृष्टिओ तकैत पैघ पैघ पपनी बला कारी कारी आँखि नाचि उठैक।

अन्त मे शिवानन्द के उत्तर देलकनि 'हमरा ने धऽन अछि' ने ततेक पैघ जाति, ने हम बी० ए०, एम० ए० पास छी आ ने कोनो तेहन विशेषता हमरा मे अछि। तखन हमरो सन साधारण योग्यता वला लोकक मूल्य यदि एतेक होइक, तँ विचार करू जे साधारण कोटिक लोक जे अपना समाज मे अछि–आ जकर संख्या सब सँ अधिक छैक—तकरा जँ कन्यादान माथ पर पड़ि जाइक तँ ताहि व्यक्तित की स्थिति हैतैक? अहाँ लोकनि समाज मे जे ई विषमता बढ़ौने चल जा रहल छी तकर परिणाम की हैत गऽ सेहो क्यो सोचैत छिऐक? परोसे मे बंगाल अछि। की ओकरा सभक दुःस्थिति अहाँ लोकनि नहि जनैत छिऐक? अहाँ लोकनिक बुद्धि एना किएक भुतिया गेल अछि? संसार कोन गतिऐ आगाँ मुँह ससरल जा रहल अछि, ताहि संग अपन पैर मिलाय चलबाक उपक्रम छोड़ि, लोभक कोन गर्त मे चल जा रहल छी, की तकर ध्यान अछि? मिथिलाक पण्डित-मण्डली सुशिक्षित जन-समुदाय अथवा नवयुवक-वर्ग एहि विषमताक निवारणक उपाय सोचबाक स्थान पर 'अस्माकम्परमाराध्यः स्वार्थ एव हि केवलम्'—स्वार्थे कें आराध्य बनौने चल जा रहल छी!'

एहि विस्तृत व्याख्यानक बाद मुनचुन एक दीर्घ उच्छ्वास छोड़लनि फेर कहै लगलथिन—औ शिवानन्द बाबू! लीलाधर झा कोटिक लोक जे छथि–जनिका धऽनझा पाँजि छैनि–हुनक

बेटा जँ महिसबारो रहैत छनि तँ धनक बलेँ बेटा मे पाँच हजार लेल करैत छथि। तखन जँ बेटी मे पाँच हजार खर्चो कैलनि तँ 'बेटी गेली, पुतहु भइली, आश्रम रहल ठामे ठाम,' बला लोकोक्ति चरितार्थ होइत छैनि, किन्तु मध्यम-श्रेणीक लोक जँ अपना कन्या केँ शिक्षा दैत अछि तँ शिक्षित वर्गक संग कन्याक सम्बन्ध करब अनिवार्य भऽ जाइत छैक। एहन स्थिति कोल्हु मे पड़ल सरिसो सँ की कनेको कम रहैत छैक, जकर तेल-सब चूबि जाइत छैक आ खऽरि पड़ल रहि जाइत छैक?'

मुनचुनक ई वृहद्व्याखान सुनि शिवानन्दक तँ चकरी गुम भऽ गेलनि, तथापि कहलथिन—'सौंसे संसारक भार की तोरे कपार पर छह? एखन अपन स्थिति पर गंभीरता सँ विचार करह। आब ज्योतिषीजीक देह ततेक सोगा गेलनि जे आब चारू मुलुक घुमताह ताहि जोग नहि रहि गेल छैनि। तोरो लिखल पढ़ल समाप्त नहि भेलह अछि। लीलाधरझाक ओहि ठाम सम्बन्ध भेला उत्तर ताहू मे सहायता हेतह।'

मुनचुन एक ठहुरिए कहि देलकनि जे 'विवाह कनेञा-पुतराक खेल नहि थिकैक जे विनु सोचने विचारने कनेक सुविधाक दृष्टिञो कतहु जा कऽ भसिया जाइ।'

शिवानन्द केँ कनेक आशा जगलनि। असल मे पूछह तं एही उद्देश्यें तोरा एमहर अनने छलिअह।

एमहर अनबाक उद्देश्य सूनि मुनचुनक क्रोध सीमा सँ

बाहर भऽ गेलनि। ललकि कऽ कहै लगलथिन–अहाँ हमरा एतेक नीच बुझैत छी ? आइ काल्हुक बहसल छौंड़ा सब जेना सिनेमा देखि ओकरे आदर्श बनौने चल जा रहल अछि, अहाँ हमरा ताही कोटि मे बुझैत छलहुँ ? औ बाह्य सौंदर्य कतेक स्थायी होइत छैक से अहाँ नहि बुझैत छिऐक !

एतबा कहैत मुनचुन उत्तेजित भऽ चलि देलक आ शिवानन्द सेहो मूड़ी खसौने पाछाँ लागल विदा भऽ गेलाह।

× × × ×

बारह बजे दिन मे नारायणक संग लीलाधरझा ज्योतिषीजी क ओहिठाम पहुँचलाह। ज्योतिषीजी पूजा समाप्त कऽ रहल छलाह। जल्दी सँ वाम हाथ पर स्थापित पार्थिव महादेव केँ बं बं बूः कैलनि आ ओछाओन अनबाक हेतु ककरो हाक देलथिन। नारायण ताबत चौकी पर सँ कम्बल खीचि नीचाँ मे ओछा देलथिन, दूनू गोटे बैसलाह। आङन सँ चरवाह एक लोटा पानि आनि देलकनि। पैर धोबाक आग्रह कैलथिन, मुदा ताबत लीलाधरझा पैर झाड़ि बैसिगेल छलाह, भऽ गेलैक, भऽ गेलैक कहि शिष्टाचारक पालन कैलनि।

ज्योतिषीजी सोझमतिया लोक, चरवाह केँ कहलथिन जे आङन जो, कहुन जे पाहुन अयलाह अछि। खैबा पीबाक ओरियान करथिन।

लीलाधरझा कहलथिन—'भऽ गेल छैक। एक आवश्यक

काजें दोस्तक ओहि ठाम आयल छलहुँ, ओ नहि मानलनि, ओही ठाम स्नान भोजन कैलहुँ अछि। गाम पर एक आवश्यक काज छल, मुदा जखन नारायण बाबू सँ गप्प भेल तँ हम अपना कें कृतार्थ बुझलहुँ। हमरा तँ साहस नहि होइत जे अपने सन देश-रत्न, महर्षि लोकक संग सम्बन्ध स्थापित करबाक चर्चा करितहुँ, तखन तँ प्रसङ्गतः एक दिन दोस्तक दलान पर चर्चा कैने छलिऐनि, आ सत्ये पूछल जाय तँ हमर चित्त ओही बेरुक पतिया वला पण्डित-सभाक दिन सँ लागल अछि। आब अपनेक जे आज्ञा होइक से सेवा करबाक हेतु हम प्रस्तुत छी।'

ज्योतिषीजी सब सराइ मे सँ चननकाठी लऽ कऽ कटोरी मे चरणोदक बाहर करैत कहलथिन—'आज्ञाक कोन गप्प? नारायणक संग जे हमरा गप्प भेल रहै से सब गप्प तँ अपनहुँ कें भेले हैत।'

लीलाधरझा गप्प पर चप्प दैत उत्तर देलथिन—'हमरा तँ से सब स्वीकारे अछि। हम तकर प्रबन्ध करब जाहि सँ अपने निकर्ज भऽ जाइ आ विद्यार्थी पढ़ि जाथि। एखन विवाह दान मे जे अपने कें खर्च पड़त से भार अपने कें नहि देब। एक गोट बात और जे सोने बाबू हमर अभिन्न मित्र थिकाह। हमर कन्या हुनके कन्या थिकनि, तैं घरक आगू जे हुनकर ई पाँचो कट्ठा पड़ैत छैनि, तकर जरसीमन हम दैत छिऐनि जे कबाला कऽ देथि। एहि सँ बासक जे सिकस्ती अछि सेहो खुसफैल भऽ जैत।'

ज्योतिषीजी पर अन्तिम वाक्यक प्रभाव सब सँ बेसी पड़लनि। ओ चरणोदक लैत कहै लगलथिन—'अपने ई बुझैत होइ जे हमर घर बड़ सुभ्यस्त अछि से भ्रम बूझक चाही। विवाह सन सम्बन्ध मे आदि विरोध नीक अन्त विरोध नहि नीक। अपने कोनो दूर देशक लोक नहि छी, एखनहुँ सामाजिक सम्बन्ध तँ अछिए।'

'आहि, अवश्य की। एखनहुँ आन ठाम जाइत छी तँ अपनेक नाम लै हमरा लोकनि आदर पबैत छी।' लीलाधरझा दोसर चप्प देलथिन।

'तेँ आदिए मे सब बात फड़िछा कऽ कहि देबै चाहैत छी। हमरा मात्र पन्द्रह बीघा जमीन अछि, तीन हजार सँ ऊपर कर्जा अछि, अपन वयस आब ढरल, तेँ नगदी आमदनीक स्रोत सुखैले सन अछि, विद्यार्थी पढ़िते छथि। राड़ रोहिया महग भऽ गेलैक, विश्वासपात्र लोकक से बड़ अभाव छैक तेँ एहू आस्थापात केँ क्यौ देखतैक से देखनिहार नहि, हम समस्त जीवन हाय हाय करिते रहलहुँ, एखनो निश्चिन्त भऽ भगवद्भजन मे लागब से नहि होइत अछि।'

अपन अतीत-जीवनक ध्यान अबैत ज्योतिषीजीक मोन गह्वरित भऽ गेलनि। कनेक काल ओ चुप्प रहलाह। भीतर सँ उमड़ैत करुणाक धारा केँ धैर्यक बान्ह दऽ बन्हलनि। कखनहुँ मनुष्य केँ अपनहि सँ अपना केँ सान्त्वना देबाक प्रयोजन पड़ि जाइत छैक।

लीलाधरझा ज्योतिषीजी केँ गह्वरित होइत देखि गीताक एक पाँती दोहरौलनि—"गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः.........."

बीचे मे ज्योतिषीजी कहि उठलथिन—'एतबे लऽ कऽ धैर्य धरैत छी, ने तँ कहिआने कोंढ़ खहरि गेल रहैत। ज्योतिषीजी नर्मदेश्वर, शालग्राम, श्रीयन्त्र सब केँ पोछि सम्पुट मे रखलनि। सम्पुट केँ पूजाक पेटी मे रखैत कहलथिन—'बऽर केँ गुण सब छैनि, आचारी छथि, निष्ठावान छथि, अपने इच्छेँ लिखैत पढ़ैत छथि, अपन नीक बेजायक विचार करैत छथि, समयक अपव्यय नहि करैत छथि, कोनो कथाक उल्लंघन नहि करैत छथि, माइक बड़ भक्त छथि, कटु कथा कंकरो नहि कहैत छथिन, किन्तु क्रोध अपना साध्य मे नहि छनि। अनुचित इच्छा नहि करताह से भिन्न बात, मुदा हुनका इच्छाक विरुद्ध यदि किछु भऽ जाइनि तँ दुर्वासा भऽ जाइत छथि। हमरो हुनकर डर होइत अछि। ततबा अपनो केँ पहिने सूचित कऽ देब हम अपन कर्त्तव्य बुझैत छी।'

आङन सँ तावत एक सराइ मे चौफक्का सुपारी जल मे धोल, दच्छिणी, लवंग, सौंफ सब लऽ कऽ एकटा वटुक राखि देलकनि। ज्योतिषीजी विनोदक स्वर मे कहलथिन—'भोजन भात तँ करबे कैल, तखन मुखशुद्धि लेल जाओ' तखन ने शुद्ध मुँहक सबटा कथा शुद्ध रहत।

लीलाधरझा शिष्टाचारवश कहलथिन—'अपने एको टा खण्ड

उठाय एकरा प्रसाद बनादेल जाइक।'

ज्योतिषीजी चट दऽ कहलथिन—'प्रसादस्तु प्रसन्नता' से एतेक गप्प भेलाक बादो एक टा कथा कहि दैत छी जे हुनक इच्छाक विरुद्ध हम किछु नहि कऽ सकब। जाहि द्वारेँ की हम शोभा पुरक चौधरीजी सन पैघलोकक लाखो टाकाक सम्पत्ति पर लात मारि देलिऐनि। तैँ वऽरक स्वीकृतिक बादे कोनो गप्प आगाँ बढ़त।'

लीलाधरझा सुपारी उठा दाँत तर कटकटबैत दक्षिणीक खुइँचा केँ नऽह सँ छोड़बैत कहलथिन—'अपने सन पिताक वचन की ओ टारि देताह ?' ज्योतिषीजी गर्वान्वित होइत कहलथिन—'से तँ नहि टारताह, किन्तु एक टा बात आरो .. ....'

लीलाधरझा उत्सुकतापूर्ण दृष्टि ज्योतिषीजी पर उठौलनि तँ ज्योतिषी जी कहलथिन—'मुनचुन शिक्षिता कन्या तकैत छथि।'

लीलाधरझा बिनु सोचनहि उत्तर देलथिन—'हमर कन्या अपर पास अछि। आरो पढ़बाक इच्छा हैत तँ सेहो हेतैक। अपने हुँऽ कहि देल जाय।'

भवितव्यताक आगाँ सब बात पाछाँ पड़ि जाइत छैक। ज्योतिषीजीक मुँह सँ अनायास बाहर भऽ गेलनि—'अधिकार तकाउ।'

—:❀:❀:—

३

गाम भरि मे साँझ होइत काने कान ई बात पसरि गेल जे लीलाधरझाक ओहिठाम ज्योतिषीजी केँ कुटुमैती पटि गेलनि, मुदा ई काज नीक नहि कैलनि। ओ तँ महाग धूर्त लोक छथिन, एखन जे कहलथिन अछि से की करथिन! जावत काज छैनि तावत एहिना लल्लो-चप्पो करैत रहथिन आ पछातिकाल 'भेल विआह मोर करबह की, धीया छाड़िकऽ लेबह की' वला बात करथिन।

गाम भरि मे जाहि दलान पर जाउ जापान पर अमेरिकाक आक्रमण, सुभाष बाबूक विद्रोह, महगीक समस्या, आजाद हिन्द फौजक तैयारी, मुसोलिनीक मृत्यु, हिटलरक पतन, सन् १९४२ क आन्दोलन, हिरोशिमा पर ऐटम बमक प्रयोग, क्रिप्सक संग कांग्रेसी नेताक गोलमेज कान्फरेन्स आदि राष्ट्रिय और अन्तरराष्ट्रिय समस्या सँ अधिक चर्चाक विषय छल ज्योतिषीजी सन सज्जन लोकक संग लीलाधर झा सन लठिधर लोकक

कुटमैती। अखड़ियल भलमानुष गाममे भाङक चौखड़ी जुटल रहौ वा तमाकुलक चटिसार पसरल रहौ, गप्प मे नोन मरीच लगाकऽ नमरऽबैत नमरऽबैत सब एक गुन केँ सोड़ह गुन बनौने जाथि।

मुनचुन गाममे नहि छलाह। ओहो गाम पहुँचलाह। चारू भाग टोलक लोक हिनके आँखिअबनि। चारू भाग जेमहर दऽ मुनचुन चलथि, एकक मुँह दोसराक कान लग सटि जाइक।

गूजन छथिन मुनचुन सँ चालिस वर्ष सँ बेसिए जेठ। मुदा ततेक हास्य प्रिय, ततेक विनोदी लोक जे हुनका हेतु पौत्र आ पितामह, दौहित्र आ मातामह सब समान। ओ धूर्ता करबामे कोनो अन्तर नहि बुझैत छ थिन।

बेर ढरि गेल छलैक, गूजन अपन खढ़ोरिक कात मे बैसल खढ़ोरि ओगरि रहल छलाह। गामक चरबाह सब तेहन अपड़ाउ सब जे कनेक आँखिक परोक्ष होउन की सबटा खढ़ोरि चरा कऽ खुट्टी बना दैत छनि।

मुनचुन लोटा लेलनि आ नदी दिस विदा भेलाह। दूरेँ सँ गूजनक दृष्टि मुनचुन पर पड़लनि। एकसरे बड़ी काल सँ बैसल बैसल जी अकछि गेल छलनि। तेँ मुनचुन केँ देलथिन हाक। एहन हाक कोन चौकीदारक नानाक दिन थिकनि जे पहरो दैत काल पाड़ि सकैत छथि-'हौ मुनचुन थिका हौऽऽऽ ईऽऽऽ उऽऽऽ' मुनचुन सिनुरिया गाछ तर चल अबैत छलाह अन्यमनस्क

भावें, एक पैघ घड़ुछा मे आम पाकल महोर छलैक, ताहि पर ध्यान छलनि। अकस्मात् ओ पिक्की जे कान मे पड़लनि तँ बड़ी जोर सँ चौंकलाह, दृष्टि उठौलनि तँ एकगच्छा तर अड़पोछा सँ गोठ बन्हने बैसल गूजन पर पड़लनि। चिकरि कऽ उत्तर देथिन ततेक ढोंढ़ी मे दम नहि बूझि पड़लनि तँ हाथ उठा कऽ आबि रहल छी से इसारा कैलथिन।

गूजन नोसियानी सँ नोसि तरहत्थी पर झाड़ि एक डबल चुट्टुक्का सुरकलनि, फेर गड़गड़ैलाह, आ गाछ पर चढ़ैत घोड़नक धारी केँ एक टा लाठी लऽ कऽ भड़काबऽ लगलाह।

तावत सुनचुन पहुँचि गेलाह। गूजन नाक झाड़ैत कहलथिन—'चल मर्द गोड़ी, आब तोड़ैत रह तिलकोड़ा, बऽड़रे, तरुआ रे भुजुआ रे, ई लटपट्टी ओ रसदार, बाटिए मे घीउ, बाटिए मे दही सकड़ौरी, मोन उजबुजाइत रहतौक, कोन बाटी मे हाथ दिअऽ कोन बाटी मे नहि। साँझ खन कऽ खबास काँख तर बराबरि कम्मल कँखिऔने, पनबट्टा मे पान सुपारी, लौंग, अणाची भरल, लाल ठोर, मुँह गम्म गम्म करैत, आँखि मे काजर, कपार पर भरदुतियाक पिड़ही सन अरिपन पड़ल… तखन की, तखन तोँ सोझ मुँह ककरो सँ गप्पो ने करबहुन।'

गूजन एक निसासेँ कहने जाथिन, सुनचुन भागवतक श्रोता जकाँ बकर बकर मुँह तकैत रहथि। गूजन मुँह तकैत देखि कहलथिन—'मुँह की तकैत छेँ मिस्टर, उप्पर अखाढ़ झमाझम

झमाझम, एमहर सारि सरहोजिक काड़ा छोरा झनाझन झना-झन, चूल्हि पर चढ़ल सासुक लोहिया टनाटन टनाटन आ ताहि पर सँ पाछाँ पाछाँ गोपिका सभक कंठ सँ मलारक लहरी. कोन लङ्टावा जनउक सप्पत खाकऽ कहैत छिऔक, जिनगी मे पहिले पहल भेटतौक आ फेर कहिओ नहि भेटि सकतौक ओ आनन्द······अपने बराबरि डोपटा सँ मुँह झँपने नहूँ नहूँ जखन डेग उठेबें तखन जे मोन मे गुदगुदी लगतौक से तोहर सप्पत इन्द्रासनक सुख अवेर्थ (व्यर्थ) बूझि पड़तौक।'

गूजन ···पचपन साठिक बीच वयस······अखढ़ियल जवान, दोहरी हड्डी, सोटलदेह, दाँतक एक आध अलंग झड़ल, पुरान टाटक बाँसक सट्टा जकाँ एक आध दाँत झुकलो, माथक दस पाँच टा कारी केश ई गवाही देबाक हेतु प्रायः रहि गेल जे हम सब समाङे पहिने एही रंगक रही। खुटिआयल दाढ़ी आ कपचल मोछ कपड़ा झाड़ै वला बूरूस (ब्रश) सँ जहाँ धरि मोलायमे कहक चाही। आइ सँ तीस वर्ष पूर्व कोना गूजन विआह करै गेल छलाह, मोन मे नाचि गेलनि 'कोबर घरक टाट पर लिखल पुड़ैनिक पातक संग कोंढ़िआयल कमल आब फुलैबा लै तब फुलैबा लै आकुल, उत्सुक, उताहुल।' नोसिआनी मे सँ एक चुट्टक्का नाक मे दऽ आँखि मूनि लेलनि, अपन अतीतक चित्र देखऽ लगलाह······विआह······द्विरागमन······सूधूक जन्म ······आङनवालीक मृत्यु······आँखि सं दू बुन्द नोर धरती

पर खसि पड़लनि। ने जानि से स्त्रीक करुण स्मृति मे अथवा नोसिक चुटुक्का डबल रहबाक कारणेँ। जानथि गूजन, जनथिन भगवान। मुनचुन मुदा संयोग श्रृंगारक वर्णन ओ विप्रलम्भक अभिनय देखि, विस्मय विमुग्ध रहि गेलाह।

गूजन पहिने गड़गड़ैलाह आ गोठ फोलि अङपोछाक खूँट सँ आँखि ओ नाक पोछलनि आ तखन आँखि निड़ारि कऽ मुनचुन दिस तकलथिन।

मुनचुनक विस्मय देखि गूजन कहि बैसलथिन—'दशमी बृहस्पति, एही आखाढ़क इजोड़िया मे लीलाधरझाक ओहिठाम लक्ष्मीपुरक दुलहा बनबह, तखन ने गृहलक्ष्मी औथुन। ई चानि पर जे घनगर औंठिआयल केश छह, तकरा फेर ऊड़हु पड़तैक। चल मर्दे, एहिना होइत छैक, ई संसार थीक की?' एहि एक प्रश्न मे जेना अपन जीवन-दर्शनक व्याख्या कऽ गेलाह। उठिकऽ ठाढ़ होइत अङैठी मोड़ कैलनि, अङपोछा सँ पोन परक धोतीकेँ झाड़ि, चलि पड़लाह। मुनचुन कहलथिन—'हम पोखरि दिस सँ भेल अबैत छी।' गूजन मूड़ी घूमा मुनचुन दिस तकलथिन तँ पश्चिम क्षितिज पर दिनकरो केँ सन्ध्याभिमुख देखलथिन, हिनको अपन मातृहीन सूधू मोन पड़ि अयलनि, टोल दिस बिदा भऽ गेलाह।

मुनचुन बाध दिस बिदा तँ भेल, किन्तु अन्तर मे बिहाड़ि उठि गेल छलैक......विवाह......जीवनक सबसँ पैघ मोड़......

एक दिनुक हेतु नहि, वर्ष दू वर्षक हेतु नहि, जीवन भरिक हेतु ..
जीवन संगिनी.... आचार मे, विचार मे. रुचि मे, अभ्यास मे, शील मे, स्वभाव मे, देखब मे, बूझब मे, कथनी मे, करनी मे, प्रवृत्ति मे, निवृत्ति मे कतहु कानो प्रकारक विरोध रहला सँ कुरूप जीवन, घृणित जीवन, वीभत्स जीवन, नारकीय जीवन....... दू आत्माक मेल मे एक दम सामञ्जस्य चाही, जेना साइकिलक चेन ओ क्रंक वा फ्रीह्वीलक दाँत मे सामञ्जस्य रहैत छैक। एतेक पैघ प्रश्नक समाधान मे एतेक जल्दी किएक ? एतेक आतुरता कथीक ? एहन हड़बड़ी कोन ? विवाहक दिन पर्यन्त निश्चित ... जकर विवाह तकर अभिमतोक प्रयोजन नहि ?' बाध मे आगाँ दिस बढ़ैत मुनचुनक आँखिक सोझाँ मे एक बिड़रो नचैत ठाढ़ भऽ गेलनि, जाहि चक्कर पर खऽढ़ पात जकाँ उधिआइत मनक संकल्प विकल्प नचैत बूझि पड़लनि, बूझि पड़लनि बहुत रास धूरा उड़ैत-उड़ैत हिनक कान, नाक, आँखि, कपार सब भरि देलकनि अछि।

कोनहुना लोटा मे भरल पानि केँ धूरक कात मे हेड़ाय, मुनचुन पोखरि अयलाह। यद्यपि माटि सं हाथ मटिअबैत छलाह, लोटा मँटिअबैत छलाह, किन्तु बूझि पड़ैत छलनि जेना अपने हाथेँ अपन भविष्य पर माँटि लेपि रहल छी। विचार अयलनि-'निश्चय बाबू लीलाधरझा केँ वचन दऽ देलथिन अछि, तैं तँ विवाहोक दिन स्थिर कैल गेल अछि।'

पिताक वचनक पूर्ति ... रामक आदर्श नाचि गेलनि, पिताक सुखक काल्पनिक महल ... महाभारतक भीष्म स्मरण आबि गेलथिन, माता पिताक सेवा... श्रवणकुमार मोन पड़लथिन. अपन भविष्य... समाजक वर्तमान शत-सहस्र युवकक नारकीय जीवन सोझाँमे चित्रित होमऽ लगलनि। एक इच्छा होइनि 'पोखरि मे डूबि जाइ', दोसर इच्छा होइनि 'गामसँ कतहु पड़ा जाइ', किन्तु अभ्यस्त पैर आङन दिस अयलनि आ अनायास अपना कोठली मे जाय धड़ाक दऽ अपना ओछाओन पर खसि पड़ला।

बहुतोकाल धरि निद्राक आवाहन करैत रहलाह, इच्छा होइनि जे एहन घोर निद्रा होइत, एहन घोर निद्रा होइत जे अपन कोनो सुधि बुधि नहि रहि जाइत, निद्रा ...घोर निद्रा...महा निद्रा ... एहन निद्रा जकरा कोरा सँ कहिओ मनुष्य नहि उठैत अछि।

किन्तु निद्रा.... , ई तँ बेर पर सब सँ अधिक वञ्चना करैत छैक। मुनचुन ई करोट ओ करौट फेरैत रहिगेला। सोड़ह, सत्रह वर्षक किशोर, जीवनक एतेक पैघ समस्याक समाधान, कहाँ धरि सोचि सकैत ? अन्त मे ओकर बुद्धि साफ जबाब दऽ देलकैक। दरबज्जा दिसुक केवाड़ फोलि टोल दिस टहलि देलक।

आषाढ़ मास, छलिहआयल मेघ, मृगशिरा एक पैघ अछार बरसि चुकल छलैक। धरतीक कठोरता मृदुताक दिस उन्मुख छल, ठाम ठीम खत्ता खुत्ती मे पानि देखि, बेंङ केँ रहले ने जाइत छलैक, मुनचुन टोल दिस बढ़ल जाइत छल आ गाछी सँ रख-

बारक 'ठ सँ निकसल बरहमासाक धुनि पुरिबाक लहरिक संग कान मे टकरा जाइत छलैक। अकस्मात् मोन मे भेलनि जे गूजन छथि धूर्त लोक, कदाच हँसी कैने होथि... स्मरण करै लगलाह जे हमरा ओहिकाल हिंचकी तँ ने होइत छल... मोन पड़ि अयलथिन हरिमोहन बाबू, मोन पड़ि अयलनि टोटमा, मोन पड़लनि मैट्रिक परीक्षा, मोन पड़लथिन श्री कान्त संगी। ओ हुनके दलान पर पहुँचि गेलाह।

श्रीकान्त हिनक सहपाठी, अपना श्रमक बलेँ ट्यूसन कऽ अपने पढ़ैत, तैँ ओकरा मे थोड़ेक आत्म-विश्वास, साधारण रहन-सहन, बोल-चाल कम, गुम्मा लोक, किन्तु कर्तव्यक प्रति सजग। संयोग सँ श्रीकान्तक दलान पर टोलक पाँच सात व्यक्ति आरो छलथिन। वातावरण मे ने जानि किएक स्तब्धता छलैक, प्रायः एहि सँ पूर्व हिनके विवाहक चर्चा ओहिठाम चलि रहल छलनि, हिनका अबैत देखि वातावरण क्रमहि स्तब्ध भऽ गेल छलैक। हिनका पहुँचला पर स्तब्धता केँ भंग करैत श्रीकान्त कहलथिन—'आबह मुनचुन, बहुत दिन जीबह, एखन तोरे चर्चा होइत छलह। कहह विआह दान कोना की कऽ रहलह अछि ?'

मुनचुनक ओ शंका दूर भऽ गेलनि जे गूजन धूर्त्त छथि तेँ हँसिओ कऽ सकैत छथि। अपना केँ संयत करैत कहलथिन—'अपन समाज एखन ततेक विकसित नहि भेल अछि, जाहि समाज मे रहि, वर आ कन्याकेँ अपना विवाहक सम्बन्ध मे बूझल रहैक।'

श्रीकान्त कहलथिन—'सुनैत जाउ, वऽर कतै तँ गाय मे, मुनचुन केँ बुझलो ने छैक 'बिआह भऽ रहल अछि।'

भोजन कऽ सुपारी कटकटबैत गूजन आबि रहल छलाह मुनचुनक गप्प सूनि अबिते टोकलथिन—मिस्टर, फूसि कहता है, हम तो बाधे मे कहने था। मिस्टर ? चल मर्दे, एहिना होइत छैक। यैह थिकैक जीवन। एतबा कहैत जेना गूजन केँ सूतल सूधूक कानब सुनि पड़लनि, ओ चल गेलाह।

मुनचुन केँ चारू कात सँ लोक कहै लगलनि—'जौं रुपैए गनेबाक हो तँ मुनचुन सन वऽर पर दस हजार गना सकैत छी। चलथु सरेना पर, एही ठाम सौराठ। नहि कोनो तेहन धनीक 'विद्यामान' लोक सँ सम्बन्ध चाहथि तँ एम० ए०, बी० ए० धरि पढ़बाक खर्च, रेडिओ, साइकिल, फोल्टन पेन, सब देनिहार हजारो लोक भेटतनि। ई तर-घुसकी कथा तँ बलेल, मूर्ख, गोङ बेटा मे पटैबाक चाही, जे सरेना पर चढ़ने दाँत चिआरि देत। आ मुनचुन सन वऽर तँ सोनाक पजेबा थिकैक, मोतीक माला थिकैक, ओ ठीक हीरा थिकैक, जखने चाहत, तखने भजा लेत, मुदा जतऽ चाहत, ततऽ नहि।

लीलाधरझाक चरित्र केँ मकैक ठठेर जकाँ सब गोटे धुन्नी-धुन्नी करैत रहलाह, मुनचुन चुपचाप उठि आङन चल अयलाह। अबिते माय सोर कैलथिन—'आबह, भानस भेल छह।' आगाँ

मे थारी परसि देलथिन। ई ठामहि घूमि पैर धोलनि, मूड़ी गाड़ि भोजन करै लगलाह।

माय विशेष कऽ मसाला भरल करैल तरने छलथिन। करैल मुनचुनक प्रिय तरकारी। माइक हाथक सिनेहेँ रान्हल। हिनका ओकर प्रशंसा करबाक चाहिऐनि, आन दिन जकाँ मुँह पर प्रसन्नताक भाव जगबाक चाहिऐनि, किन्तु से सभ चुप्पी मे बिलागेल छलनि, माय टोकलथिन—'बाउ कतै कतै गेलाह, ककरा सब सं भेट भेलह? ओहि सब ठामक कुशल-छेम किछु ने कहलह। आन बेर कतहु सँ गाम अबैत छलाह तँ हमरा सबकिछु सुनबैत छलाह, एहि बेर तों जखन सँ अयलाह अछि, एकदम उदास देखैत छिअह। की बात थिकैक से कनेक कहबो करह।'

मुनचुन मूड़ी गाड़नहि उत्तर देलथिन—'सब ठामक कुशलछेम एके रंग, बड बढ़िञा।' माय मुँह तकैत रहलथिन जे आरो किछु बजताह, मुदा मुनचुन फेर मूड़ीगाड़ि कऽ खाय लगलाह।

माय केँ अन्दाज आबि गेल छलनि जे प्रायः ककरो सं बिआहक सम्बन्ध मे सुनलक अछि, तैं एतेक लोहछल मोन छैक। कतेकबेर एहन भेलैक अछि, जहाँ कतहु कोनो घरक लोक विआहक चर्चा कैलथिन की मुनचुन चोटायल गहुमन जकाँ फों फों करै लगैत छल। ओ चाहैत छलथिन जे बुझा सुझा कऽ मुनचुनकेँ मना लेब; मुदा रंग रूप देखि साहस नहि कैलनि। मुनचुन चुप्पे भोजन कऽ उठलाह, हाथ मुँह धो, अपन कोठली मे जाय पड़ि रहलाह।

आँखिक सोझाँ मे पुनः शिव मन्दिरक दृश्य नाचै लगलनि, 'छायाक पातर-छीतर, गोरनार देह, कारी कारी केश, पैघ पैघ पपनी वला कारी कारी आँखि...... सलज्ज अवनत मुख ...... हेड़ सँ पछुआ कऽ घूरि घूरि मन्दिर दिस तकैत......'मुनचुन थोड़ेक काल कल्पना लोक मे विचरण करैत रहलाह। जखन आँखि फुजलनि तँ पूर्व मे लाली छिटकि गेल छलैक।

यद्यपि पोखरिक घाट पर हाथो मटिअयबाक काल शिवानन्द सँ साक्षात्कार भेलनि, मुदा मुनचुन टोकलथिन-चाललथिन नहि। शिवानन्दे दतमनि बनबैत छलाह उपकरि कऽ ताहि मे सँ एकटा दतमनि दैत टोकलथिन—'कखन अयलाह हौ मुनचुन बाबू! देखने नहि छलिअह!'

मुनचुन घुघना लटकौनहि उत्तर देलथिन—'काल्हिए बेरू पहर। अहाँक कलमबाग दिस नहि गेल छलहुँ, आने आने दिस बझल रहलहुँ।'

शिवानन्द कहलथिन—'आब हमरा कलम बाग दिस जैबाक पलखति कोना भेटतह। आब तँ लक्ष्मीपुर हमरा कलम बाग सँ लऽग बूझि पड़तह.............।' मुनचुन केँ रहि नहि भेलनि। हुनका ई दृढ़ विश्वास छलनि जे हिनके लोकनि हमरा बाबू केँ परतारि सरतारि लीलाधरझाक ओहिठाम विवाह स्थिर करबौलनि अछि। मोन मे उमड़िते छलनि, अवसर पाबि कऽ मुनचुन मोनक सब विकार झाड़ि लेलनि। कहलथिन—'बूझल, अहाँ लोकनि अपन फानी नीक जकाँ लगौने छी, फनकी मे लस्सा

ततवा पुष्ट कऽ देल अछि जे शिकार बाझिकऽ उड़ि नहि सकैछ। आब हमरा सँ कहबाक कोन प्रयोजन ? बाबू हमर भोलानाथ छथिहे, अहाँ लोकनि अपन पाँचो आङुर घिउ मे डुबौने रहू।'

× × × × ×

ज्योतिषीजी केँ मुनचुनक रंग रूप देखि बहुत किछु अन्दाज लागि गेलनि। अपना मुँहे बेटाक सोझाँ मे विवाहक प्रस्ताव रखताह से युक्ति संगत नहि बूझि पड़लनि, तेँ मुनचुनक माय केँ भार देलथिन जे अहीं मुनचुन केँ बुझा सुझा कऽ बाट पर आनू।

मुनचुन जखने आङन अयलाह कि माय गोसाउनिक पूजा कऽ भगवतीक घर सँ बाहर भेल छलथिन। तुलसी मे जल ढारि दिनकर केँ हाथ उठौलनि, पैर तरक खड़ढ़ केँ चार पर फेकैत सोर कैलथिन—'बाउ ! आबह पनपिआइ कऽ लैह, तखन अपन कोम्हरो घूमै जइहऽ।'

मुनचुन पोखरि सँ स्नान कैनहि आयल छलाह। चुपचाप भनसा घरक ओसारा पर आबि, अपने सँ पीढ़ो, खसा बैसि गेलाह। माय अछिञ्जल वला पोखरिक पानि केँ फेकैत घैल सँ इनारक पानि एक लोटा देलथिन आ हीङु, मङरैल, मेरिचाइक फोड़न देल चूड़ा भूजल एकटा रिकबी मे आनि कऽ सोझाँ मे राखि देलथिन। मुनचुन केँ हीङु सँ बड़ प्रेम, रुचिक अनुकूल जलपान पाबि, मोन प्रसन्न भऽ गेलनि। ने जानि आइ हुनका

भूजल चूड़ा खैबाक इच्छा भेल छलनि से हुनक माय कोना बूझि गेलथिन। आधा सँ अधिक चूड़ा जखन फाँकल भऽ गेलनि तावत माय लग मे आबि बैसि गेलथिन आ स्नेह सँ पुछलथिन–भूजा नीक भेलह, नोन तँ ने बेसी पड़लैक?–'नहि बड़ बढ़िञा भेलैक अछि। तोरा बुतेँ से सब होइत छौक जे ....।' माय केँ यैह अवसर उपयुक्त बुझना गेलनि। ओ बीचे मे बात कटैत कहलथिन–'आब हम नहि सकैत छिअह, हमरा सूझै मे बितय होइत अछि, जहाँ कनेक झटकि कऽ चलू, इबर दबर कऽ काज करू कि लगले फक्क फक्क करै लगैत छी। से आब हमरा पर दया करह।' मुनचुन कहलथिन–'जाहि कोनो वैद्य डाक्टर सँ कहँइ लगले देखबा दिऔक। समस्तीपुरो मे डाक्टर लोकनि छथि, नहि तँ एक दिन दरभंगे चल...... –.....।'

माय कहलथिन–'आब हम डाक्टर वैदक औखद नहि खैबह। हमरा एकटा तेहन चाही, जे ई घऽर आसरमक भार हमरा माथ पर सँ उतरि जाय।'

—'से खबासनी छौके, कहँइ तँ एकटा ब्राह्मणक टेल्ह ताकि दिऔक जे भानस भात कऽ देल करतौक।'

—'तोँ हूँ अकरहर करैत छह। ई शहर बाजार थिकैक जे लोक भनसीया राखत?' माय उत्तर देलथिन।

—'तखन ई भार कोना उतरतौक?'

मुनचुनक प्रश्न सुनि माय कनेक मुस्कुराइत कहलथिन—'आसरम भार सुनने नहि छलिऐक जे भनसीया उतारैत छैक। आब बतहपनी छोड़ह, हम जेना कहैत छिअह तेना जँ उपाय कऽ दैह तँ कहिअह।'

मुनचुन केँ आभास अवश्य भऽ गेलनि तथापि ओ मातृ-स्नेह-बन्धन मे तेना निबद्ध छलाह जे 'नहि' कहबाक साहस नहि भेलनि। कहलथिन—'कह कोन उपाय कऽ दिऔक।'

—'खा हमरे सप्पत जे जे कहबह से करबह।'

—'की एक बिनु सप्पत खैने, आइ धरि जे कहलेहेँ से नहि करैत रहलिऔक अछि?'

—'हमरा सन दियामान तँ कम्मे लोक केँ छैनि जे बेटा अपना पाँज मे रहतनि, मुदा एखन जाबत सप्पत नहि खैबह तावत हम कहबह नहि।'

मुनचुन एहि पर हँसिकऽ कहलथिन—'से जँ तोरा आइ सपते खोअयबाक छलौक तँ चूड़ मे किएक ने सानि देलहिक?

—'अकट्टी नहितन!' माय हँसैत कहलथिन—'सप्पत कोनो फाँड़ा अँचारक मसाला थिकैक जे चूड़ा मे सानि दितिऐक?'

—'बेस तँ हे ले, छुच्छे तोहर सप्पत खाइ छी, जे कहबेँ से उपाय कऽ देबौक।' मुनचुनक एहि बात पर माय प्रसन्न होइत कहलथिन—'हमरा एकटा पुतहु आनि दैह, जकर ई घर आसरम थिकैक। एक आध बरख मे अपन काज-धन्धा, लूरि-व्यवहार,

असारी-पसारी केँ बुझतैक-सुझतैक-तखन हमरा पिनसिल दऽ देत । हम अपन राम राम करब, तोरा लोकनि अपन राजपाट चलबिहऽ आ आराम करिहऽ।

मुनचुन कहलथिन–'बेस, सौराठ सभा होइते छैक, जाइत छी एहि बेर आ तोहर मनोरथ पूर कऽ देबौक।'

'सौराठ सभा सँ हम अपन बेटाक विआह नहि होमऽ देब। हमरा सौराठ नहि धारलक। आइ हमरा कोन, जँ सब जीबैत रहैत तखन तोरा एखन विआहे ने करै दितिअह। बड़का बौआक विआह सौराठे सं भेल छलैक·····'एतवा कहैत कहैत मुनचुनक माइक आँखि डबडबा गेलनि–मोन पड़ि गेलनि उग्री, मोन पड़लथिन पुतहु, मोन पड़लनि पौत्र, मोन पड़लनि उग्रीक सासुरक साँठ-राज·······की की साँठि कऽ पठौलकनि, सब आँखिक सोझाँ ओहिना नाचि गेलनि, बूझि पड़लनि जे ई सबटा काल्हिए बीतल अछि। फेर मुनचुनक विआह, फेर ओ साँठ-राज, फेर ओ धूम-धड़क्का आ तकर बाद एक आशंका शरीरक तार तारकेँ झनझना देलकनि, इच्छा भेलनि 'मुनचुन केँ कोर मे लऽ आँचर तर कऽ झाँपि लेथिन जे फेर कोनो शक्ति हिनक मुनचुन केँ हिनका सँ नहि छीनि सकनि।' मुनचुन चूड़ा फँकैत छलाह आ माइक दिस तकैत छलाह। क्रमहि हुनका मुँह पर, अन्तर मे उमड़ैत करुणाक प्रवाहक कारणेँ परिवर्तित होइत भावकेँ पढ़ितो जाइत छलाह। माइक आँखि सँ झरझरा कऽ दस बीस बुन्द

नोर एना खसि पड़लनि जेना स्फटिकक टूटल माला मे सँ दाना सब छिड़िया गेल होइक। एही बुन्दक बाढ़ि मे मुनचुनक हृदयक समस्त दृढ़ता गलि गेलनि, संकल्प भसिया गेलनि। पानिक चोट सँ, करुणा सँ अवरुद्ध कण्ठ मे लसकल भूजल चूड़ा कें नीचा ससारि कऽ बजलाह—'तखन तोहर की इच्छा छौक, साफ भऽ कऽ कह ने.........'

माय आँचर सँ आँखि पोछलथिन, वामा हाथें नाक झाड़-लथिन, तखन आश्वस्त होइत कहलथिन—'हम ई काज घर-कथा सँ करब आ साँकड़ साँठब।'

मुनचुन कहलथिन—'तँ ताहि लेल के रोकैत छौक ? घर-कथा सँ जँ नीक ठाम पटि जाउक तँ कऽ ले।'

—'कथा सँ पटल छैक। कहाँदन तों ही कहैत छहक जे करबे ने करब।'

—'के कहलकौक अछि ?'

—'कहत के, तोहर लच्छन सँ बूझि, पड़ैत अछि।' तैं ने खुशी भऽ कऽ बजैत छह, ने मोने उछतगर छह, गुम्मी लधने छह। ओ तँ लक्ष्मीपुरक लीलाधरझाकें एक तरहें हँऽ कहि देलथिन। माय बाप तँ ककरो अधलाह नहिञे करैत छैक। सौंसे दऽर दुनिञा मे तों एक टा बेटा रहलहुन। आ तों जं कहल नहि मानलहुन तं कतेक दुख भऽ सकैत छैनि से तों अपनो बूझि सकैत छहक।'

मुनचुन कनेक उत्तेजित भेलाह, मुदा विवेक जेना हुनका वाक् पर लगाम लगा देलकनि। नरमे बोली मे कहलथिन—'लीलाधरझाक ओहि ठाम किएक ? कोन गुन देखिकऽ ?'

तावत ज्योतिषीजीक पूजा सम्पन्न भेलनि। ओ खराम खुट-खुटबैत पहुँचलाह आ अबिते कहलथिन—कोना कोना एहि गाम मे बसल छी, कोन कोन पराभव भोगने छी, से तँ अहाँ लोकनिक जन्म सं पहिलुके घटना थीक। एखनो कोना बत्तीस दाँतक बीच मे जीह जकाँ निर्वाह करैत छी, से अहाँ की जानै गेलहुँ। अहाँ तं नेना छी, खाइ छी, खेलाइ छी, दिन बीतल जाइत अछि। एतबा कहैत ज्योतिषीजी पिढ़ही खसा कऽ बैसि गेलाह। पुनः पुछलथिन—'जं माय बापक कथा मानी तं हम किछु कही।'

मुनचुन मूड़ी निहुरौने कहलथिन—'आइ धरि कोन एहन बात हमरा कहलहुँ अछि जे हम नहि मानलहुँ अछि?'

ज्योतिषीजी गौरवान्वित होइत कहलथिन—'आजुक युग मे एहि दृष्टि सं हम अपना कें अवश्य भाग्यशाली मानैत छी। विश्वासो रहैह छल, तथापि विवाह जीवनक एक एहन जटिल प्रश्न थीक, जाहि मे पूर्ण गंभीरता सँ सोचक चाही।'

मुनचुन उत्सुकता पूर्वक पिताक मुखाकृति देखि रहल छलाह, हुनका बूझि पड़लनि जेना ज्योतिषीजी कोनो भावना-लोक मे पहुँचल होथि। साओन भादबक आकाश जकाँ हुनक मुख परक

भाव-भंगिमा क्षण क्षण बदलि रहल छलनि, नाचि रहल छलनि आँखिक सोझाँ मे अतीत-जीवनक ओ दृश्य 'जहिआ ज्योतिषीजी एहि गाम मे घर बन्हने छलाह, कोन कोन तरहेँ लोक विरोध कैलकनि, कोना सबकेँ सम्हारलनि ।' फेर मोन पड़लनि उम्री ...... गोर अतन्त, पैघ पैघ आँखि, सोटल साटल देह, बेस पैघ कपार, वाम गाल पर छोट सन तिलबा । मोन पड़लनि उम्रीक उपनयन... महामहोपाध्याय लोकनि केँ पाता, हुनका लोकनिक आशीर्वाद, ओ भोज, ओ भात, ओ नाच, ओ तमासा, ओ व्यवस्था, ओ विदाइ आ ताहि बीच गौआँ लोकनिक बकठेना । मोन पड़लनि .... रजवाड़ा सभ मे भ्रमण, ओ सम्मान, ओ आदर ओ लक्ष्मीक कृपा । मोन पड़लनि ......छोटेक श्रम, आज्ञाकारिता, दिनराति एहि घर-द्वार धन-वित्तक संचयक हेतु आतुरता, फेर ध्यान गेलनि 'वर्तमान मे घटैत सम्पत्ति ओ प्रभाव दिस आ एक दीर्घ निसास लेलनि ।

मुनचुन पूर्ववत् पिताक मुखाकृति दिस देखि रहल छलाह । ज्योतिषीजी तखन कहऽ लगलथिन— सुनू हम आब बृद्ध भेलहुँ, एहि गाम मे हमरा अहाँक हित चिन्तन केनिहार बड़ थोड़ लोक अछि, सभक येह इच्छा रहैत छैक जे कोना अधलाह कऽ दिअनि । सोनेझा सँ सब दिन अश्वमाहिष रहल, हमही छलहुँ जे एहि गाममे निर्वाह कऽ गेलहुँ आ एखनो कऽ रहल छी । आब अहाँ बुतेँ निर्वाह करब कठिन भऽ जैत । ताहू मे एखन पढ़ैत

छी, सामाजिक छक्का पंजा सँ परिचय नहि भेल अछि। समाज मे रहि निर्वाह करब केहन कठिन होइत छैक, तकर ज्ञान नहि भेल अछि। दृष्टान्त आन ठाम नहि ताकऽ पडत। दिनानुदिन जे जे सिकस्त भेल जाइत छी तकर की कारण? कारण यैह जे जावत धरि समर्थ छलहुँ, शरीर मे सामर्थ्य छल, अपने सँ सब काज-धन्धा, खेत-पथार, माल-जाल, धीया-पूता सब कें देखैत छलहुँ ताहि पर सँ अपन शास्त्रीय-अनुशीलन मे लागल रहैत छलहुँ। जाहि प्रसादें एखनो ई सब देखि रहल छी। 'सड़लो भुन्ना तँ रोहुक दुन्ना,' से केहनो घटि गेलहुँ अछि, तथापि सम्पत्ति पर पडने तँ बिपत्तिएक आगमन होइत छैक। तखन अहाँक भविष्य चिन्तनीय भऽ जैत। सैह सब सोचि कऽ हम लीलाधर झाक ओहिठाम सम्बन्ध करब उचित बूझल अछि। ओ धऽने जऽने परिपूर्ण लोक छथि, ओ सब कारबार सम्हारि देबाक वचन दैत छथि आ संगहि कर्ज-बर्ज सधा देबाक हेतु उद्यत छथि। हुनकर धाख परोपट्टा मे छैनि, हुनको दहसति सँ लोक विद्दति करब छोड़ि दैत।'

फेर ज्योतिषीजी फुसुर फुसुर कऽ कहलथिन–'गामक लोक दूरि करबा लेल रंग विरंगक बात कहत, भड़केबाक चेष्टा करत आ काज बिगड़ि गेला पर पाछाँ थपड़ी पाड़त। से देखब, ताहि सब बातमे जुनि पड़ी! अनकर की बिगड़तैक? अपने अधलाह हैत।'

माता पिताक मनः स्थिति देखि कऽ मुनचुन कें विरोध करबाक साहस नहि रहि गेलनि। मनहि मन निश्चय भऽ गेलनि जे आब लीलाधरझाक ओहिठाम विवाह करहि पड़त, किन्तु अपना दिस सँ स्थिति स्पष्ट क राखी तँ नीक, से विचारि जँतले स्वर मे कहलथिन—'एतबा अवश्य जे हुनक प्रभाव परो-पट्टा मे छनि, किन्तु एखन जे किछु ओ कहि रहल छथि तकर पूर्ति करताह ताहि पर हमरा विश्वास नहि अछि। जे व्यक्ति समस्त जीवन धुरफन्दे मे बितौलक से एतेक पैघ झंझट अपना माथ पर उठा लेत से अनन्वित सन लगैत अछि। जावत धरि लोक कें अपन काज रहैत छैक—खास कऽ अवसरवादी लोक कें—तावत धरि ओ एहिना मधुर मधुर बजैत अछि, किन्तु एहन धूर्त लोक, जकरा चरित्रक कोनो ठीके नहि छैक, अपन काज सुतरि गेला पर फेर ओ हमर-अहाँक चिन्ता राखत अथवा अपन वचनक पूर्ति करत से कहाँ धरि संभव तकर नीक जकाँ विचार कऽ लेब पहिने उचित।'

मनुष्य जखन एहि प्रकारक अन्तर्द्वन्द्व मे पड़ि जाइत अछि तँ स्वभाव-सिद्ध छैक जे भावना उत्तेजित भऽ जाइत छैक। तँ एतबा बजैत बजैत मुनचुन क्रमहि उत्तेजित होइत जाइत छलाह, किन्तु 'एहन माता पिता, जे आइ धरि कोनो कटुवचन अमो सँ नहि कहने छलथिन' जनिका प्रसादें राजकुमार जकाँ एखन धरिक जीवन बितौने छलाह, तनिका समच उत्तेजित हैब

कतेक अनुचित थीक' से ध्यान मे अबिते चित्त केँ शान्त कैलनि आ सम्हरि कऽ पुनः बाजऽ लगलाह—'एतवा विश्वास मे कहिओ हमरा दिस सऽ स्खलन नहि भऽ सकैछ जे ई शरीर अहींक थीक, एकर स्रष्टा ओ पालक दूनू अहीं लोकनि छी आ तेँ हेतु यदि एकर संहारो अहीं लोकनि करबाक हेतु उद्यत होइ तँ हमर हस्त-क्षेप करब उचित नहि हैत। ई तँ तागधारी ब्राह्मण थिकाह, आ तनिका ओहिठाम विवाह मात्र करैबाक अभिलाषा अहाँ लोकनि केँ अछि, सेहो हमरे भविष्यक-हित-कल्पना सँ, ताहि मे हम विरोध करब तँ कुपुत्रे कहायब, किन्तु 'आदि विरोध नीक आ अन्त विरोध नहिं नीक' ई जे समाज-नीतिक सिद्धान्त छैक, ताहिं सिद्धान्तक कसौटी पर एहि सम्बन्ध केँ पहिने कसि ली से हमर आग्रह। हमर चित्त एखनहुँ सन्दिग्ध अछि जे जाहि लोभ सँ अथवा आशा सँ, भरोस सँ, विश्वास सँ, एकरा स्वीकार कैलहुँ अछि, कदाच तकर परिणाम विचित्र, अधलाह ओ लोक-विरुद्ध ने हो, जाहि सँ पछाति हाथ मलऽ पड़ै।'

ज्योतिषीजी विहुँसैत कहलथिन—'नहि नहि, से सन्देह जुनि राखी, हमरा प्रति बेचारे केँ श्रद्धा रहैत छैनि, भने ओ संसार मे आनक संग किछु करथुन, हमरा सँ वञ्चना नहि करताह। जँ दैवात् से कैलनि तँ निश्चय नरको मे हुनक वास नहि हेतनि।'

मुनचुन एक दीर्घ निश्वास लऽ कहलथिन—'बेस। हम दोषी नहि बूझल जाइ।'

—:o:—

४

झरिकान मुनचुनक मुँहें हँऽ सुनि कऽ माइक छाती सूप सन भऽ गेलनि, गोसाउनि कें सुनता पातड़ि देलथिन। कबुला कैने छलीह जे जखने मुनचुनक मुंहे हँऽ सुनब तखने 'हे भगवती अहाँ कें पातड़ि देब।' बड़ उल्लास सँ भरि टोल बैन परसल गेल आ ओही बैनक संग टोल भरि ई समाचारो परसा गेलनि जे 'मुनचुन लीलाधरझाक ओहि ठाम विवाह करब गछि लेलथिन।'

एमहर ओरिआन आरम्भ भेल, घोघटक साड़ी, पड़िछ-निहारिक साड़ी, लोटा, थारी मे भरि कऽ चिन्नी, बाटी, कम्मल, सतरंजी, उलैंच, गेड़ुआ, काँसाक पनबट्टी मे सिनुरक गद्दी, सिन्दूरदानक तामा, धूमन, पिठार, ध्रुव, आमक लकड़ी, गाइक घृत, चारू भाग सँ चारि गोटे जुटौलक।

तेरह गोटे बरिआती जैताह, तनिका सभक भानस-भात, सात गोटे हथधरी मे औथिन, तनिका सभक हेतु फराके असौ-जनिञाक ओरियान होमै लगलनि।

—:०:—

सौंसे टोलक स्त्रीगण मीलि कऽ तानि देलथिन, क्यौ तरकारी काटै लगलीह, क्यो बड़क घाठि तँ क्यो बड़ीक घाठि फेनै लगलीह, क्यो चिक्कस सानथि तँ क्यो बुनिया देथि, एक भाग नोनगर पटल,तँ दोसर भाग अनोनवला पटल,आरम्भ भऽ गेल। घर आङन धूआँ सं भरै लागल, चारू भाग छन्नर-मन्नर केर मधुर संगीत भऽ रहल छल। कोम्हरो सँ जीर - मङरैलक, कोम्हरो सँ हीङुक सुगन्धि वायु-मण्डल मे मीलि मीलि छुलाह ओ जिहलाह लोकक मुँहसँ लेर चुआ रहल छलनि। धीया पूताक उल्लास अपना ढंगक, बरिआती मे गेनिहार लोकक उल्लास अपना ढंगक, नव-नव गीत सिखने टोल परोसक नव नौतारि छौंड़ी ओ कनेञा लोकनिक उल्लास अपना ढंगक तथा वरक माइक मोनक उल्लास अपना ढंगक छलनि, किन्तु मुनचुन चुपचाप अपना कोठली मे बैसल गुम्म सुम्म चिन्ताक समुद्र मे डूबल छलाह। अन्तर मे द्वन्द्व चलि रहल छलनि। कखनहुँ भविष्यक प्रति आशंका मनक आकाश मे जेठक विहड़िया मेघ जकाँ कारी और समस्त वातावरण केँ एक बेर हरमेचि कऽ आम्रेड़ित करबाक लेल उमड़ल बूझि पड़नि आ कखनहुँ कऽ शिव मन्दिरक दृश्य गोर नार विजुरी सन चमकैत देह...... कारी कारी केश...... पैघ पैघ पपनीवला भाव पूर्ण आँखि,.... चमकि चमकि उठनि।

एक भाग सँ भाउजि लोकनिक एक झुण्ड घर मे हूलि गेलनि। ओ लोकनि सिखबै लगलथिन—देखब पढुआ बाबू,

सब सँ पहिने ठकबक देखाओत, तखन बेसन, तकर बाद केराक भालरि। ताहि सब बेर मे सम्हरि कऽ रहब, बेसन केँ घाठि नहि कहबैक, भालरि केँ पात नहि कहबैक। जँ से कहलिऐक तँ मौगी सब से ठहाका देत जे सुलतानगंजक सिखलाहा सब चतुरइ हँसीक ओहि बिहाड़ि मे सुखैल पात जकाँ कोमहर उधिया जैत से तकिते रहि जैब। माँड़रवाली भाउजि छलथिन सब सँ नवि। आइ धरि ओ हिनका सँ बजलो ने छलथिन, मुदा आनन्दक एहि लहरि मे हुनको नहिं रहल गेलनि। नमरल घोघ केँ कपार धरि ससारि, नाक पर सँ मड़ौत काढ़ि, कान लग फुसुर फुसुर कऽ कहै लगलथिन—'नैना योगिन काल मे कहत 'वाम छौ कनिञा दहिन छौ सारि' से तहिना रहैत छैक, ताहि बेर मे चुकने पण्डिताइ पानि मे पड़ल नोन जकाँ विला ने जाय।' चोप्तावाली भाउजि छलथिन बड़ उकठाहि, ओ अन्य-मनस्क देखि पाँजर मे आङुर भोंकि देलथिन तँ मुनचुन चौंकि उठलाह। ओ खिलखिला कऽ हँसैत कहलथिन—'हंऽ देखब छौंड़ी सब रहैत छैक रंग-रसिया, तँ सब शास्त्र पुरान ने ओहि ठाम घोसाड़ि देअय।'

एतेक भइओ गेला पर मुनचुनक ध्यान ओहि बात दिस नहि छलनि। हुनका ई धूम धड़ाका बूझि पड़नि ने हमर छाती फाड़ि देत। चोप्तावाली ठोर पर आङुर रखैत कहलथिन—लच्छन ने देखू, जेना 'हिनका एहि सब सँ कोन सरोकार.......।'

बीचे मे भुसकौल वाली भाउजि कहि उठलथिन—बूझि पड़ैत अछि क्यौ कहि देलकनिहें जे 'कनेञा कारी छैक ।'

चोप्ताबाली बाजि उठलीह—'ई मनुसा कनी टा खेलाड़ अछि, ई महादेवक मन्दिर पर जा कऽ कनेञा कें देखि आयल अछि से सुमिरन कऽ कऽ जी मे अहलदीली पैसल छैक। एतबा कहि आ फेर पाँजर मे आङुर भोंकि देलथिन। मुनचुन चौंकि उठलाह आ गिड़गिड़ाइत कहलथिन—'भौजी कल जोड़ैत छी, गोड़ लगैत छी, अकच्छ जुनि करी. हमरा नहि नीक लगैत अछि।'

हँऽ हँऽ कालिह सँ ने कहबनि पाँजरे मे सटल रहऽ, हमरा नीक लगैत अछि, ई कहैत लक्ष्मीपुर वाली चोप्तावाली कें ततेक जोर सँ धकेलि देलथिन जे— सब मौगी ढनमना गेलि, चोप्ता वाली खिखिआइत, ढनमनाइत मुनचुनक खाट पर जा कऽ खसलीह। ताहि पर पड़ल जोर सँ ठहाका।

मुनचुनक कोठली दोरुक्खा रहनि। ठहाका सुनिकऽ मुनचुनक माय आङन मे बाजि उठलथिन 'जाहि दाइ बहुआसिन लोकनि कें काज करबाक चाहिऐन से सब खिखिया रहलछथि। आइ काल्हुक नव कनेञा सब पुरुख कें झाँखुड़—बूझि लेलक अछि। दलान पर दस टा पुरुख पात बैसल दोना बनबैत छैक, तखन एना दोरुक्खा मे जा कऽ रड धुम्मस होइक !'

चोप्तावाली मुनचुनक माइक भर्त्सना सुनलनि तँ तामसें लेसि देलकनि। ओ भनभनाइत अपन विदा भेलीह—'एक

रत्ती बेटाक सङे लोक ठट्ठा केलकनि की बेटा श्रीखडएक गेँड़ी जकाँ खिआ गेलथिन। हमरो लोकनि बहुत दुलारू लोक केँ देखने छी। कोनो मोती चूरक लड्डू तँ नहि खिकथिन जे दाना झड़ै लगतनि।' ओ भनभनाइत अपन आङने दिस चल गेलीह। आर सब गोटे धड़फड़ाइत अपन अपन काज दिस चलि पड़लीह।

मुनचुनक मोन मे विचारक द्वन्द्व चलैत रहलनि — विवाह एक एहने जटिल बन्धन थीक, जाहि ब्रह्म-पाश मे पड़ि मनुष्य अपनहि हाथेँ अपना सुखक हत्या कऽ लैत अछि। मनुष्य कोखि मे जन्म लेलाक बादो परमार्थक हेतु अपना केँ उत्सर्ग करबा सँ असमर्थ भऽ जाइत अछि। 'स्व'क परिधि सँ उपर उठि यदि समाजक हेतु, देशक हेतु, संसारक हेतु, सब सँ पैघ मानवताक हेतु मनुष्य किछु करै चाहैत हो, तँ सब सँ पहिने ओकरा ई बन्धन स्वीकार नहि करक चाहिऐक।' की चुपचाप कतहु चलि दी? मोन पड़लथिन सुभाषचन्द्रबोस।

एहि बीच दलान पर होइत गप्पक ध्वनि कान मे पड़लनि— 'मुनचुन के नहि देखंत छिऐनि?' एहि प्रश्नक संग पिताक मुँहेँ देल उत्तर से हो सुनलनि— 'ततेक संकोचशील अछि मुनचुन जे माय जखन विवाह करबाक हेतु कहलथिन तँ लीलाधरझाक ओहिठाम विआह करबाक विरोध करितो छल,मुदा मूड़ी निहुरौने, आँखि उठा कऽ ताकत से नहि।'

—'की लीलाधरझाक ओहिठाम नहि करऽ चाहैत छथि ?'

—'नहि आब सहमत भऽ गेल। क्यौ क्यौ कान भरि देने छलैक जे ओ लङ्टाह लोक छथि, पाछाँ ठकि लेताह।'

— 'आब मानलनि की बलजोरी विआह करा रहल छिऐनि ?'

—'ओना बलजोरिओ करा दितिऐक तँ ओ से बेटा नहि थीक जे बापक प्रतिष्ठाक ध्यान नहि रखैत, मुदा माय कहलथिन आ हम अपन परिस्थिति बुझा देलिऐक तँ मानि गेल।'

पिताक मुहेँ ई उत्तर सूनि मोन जे कहैत छलनि कतहु पड़ा जाइ से आत्मा कहऽ लगलनि—'एहन वृद्ध पिताकेँ चिन्ताक अपार पारावार मे छोड़ि पड़ा जैब कृतघ्नता हैत। केहन केहन त्याग पिताक हेतु महापुरुष सब कऽ चुकल छथि। जनिक उज्ज्वल कीर्ति सं भारतीय इतिहासक पृष्ठ आइओ जगमगा रहल अछि।' किछु काल धरि मोन निष्क्रिय भऽ गेलनि, जेना निद्रितावस्था मे होथि। तावत आङन सँ किछु शब्दक ध्वनि कान मे पड़लनि—'मर, लीलाभरझा हिनका सँ छोट ब्राह्मण थिकथिन, तखन हुनका ओहिठाम साँकड़क भार किऐक सँठथिन ?'

पुनः एहि प्रश्नक उत्तर अपना माइक स्वर मे सुनि पड़लनि—'आब ओ छोट रहथु की पैघ, हमरा तँ सौँसे वंशक सुनचुने टा एक टा इजोतक टेम अछि, तखन हम अपन मनोरथ कहिआ पूर करब ?'

'वंशाक एक मात्र टेम,' मुनचुनक हृदय मे ई वाक्य-खण्ड फेर विचारक बिहाड़ि आनि देलकनि—'जीवन थीक की ? सुख दुखक सम्मिश्रण, कखनहुँ प्रकाश, कखनहुँ अन्धकार, स्त्री पुरुषक सम्मिलिते शक्ति तँ ई सृष्टि थीक ।' मोन पड़ि अयलथिन महात्मा गाँधी......ओ तँ विवाहिते जीवन बितौलनि, किन्तु एहि युग मे हुनका सँ अधिक त्याग, अधिक परोपकार दोसर क्यो कऽ सकल ? मानवताक उद्धार मे एहि सँ आगाँ क्यो बढ़ि सकल ?'

मुनचुन सोचैत गेलाह—'सम्पूर्ण वंशक एक मात्र आधार रहैत, शोक सँ जर्जर वृद्ध माता-पिताक वचनक उल्लंघन कऽ' यदि हम एखन पड़ा जाइ, तं हमरा सन कापुरुष, कुपुत्र, कृतघ्न मनुष्य के हैत ?'

फेर मोन मे प्रश्न अयलनि—'यदि कन्या अशिक्षिता होइक ?' मोन पड़ि अयलनि गण्डक कातक शिव मन्दिर, मोन पड़लनि ओहि वालाक आँखि मे उमड़ैत ओहि कालक भावनाक तरंगित प्रतिविम्ब ......गोर नार देह, कारी भौंर केश, पैघ पैघ पपनी वला कारी कारी आँखि......मन्दिरक द्वार पर क्षण मात्रक हेतु निर्निमेष दृष्टि ......निश्चय कैलनि 'यद्भावी तद्भविष्यति' जे विधाता हमरा भाग्य मे अशिक्षिते कन्याक संग विवाह लिखने होथि तँ तकरा के टारि सकैत अछि ?' मुनचुन एही प्रकारक

विचार-शृंखला पर चढ़ैत उतरैत रहथि आ ओमहर दलान परक दोसरे रवैया छल।

बरियाती मे गेनिहार लोक सब अपन अपन साज शृंगार मे भिन्ने अस्तव्यस्त छलाह। नवतुरिया सब कानी कटाबथि तँ बूढ़ पुरनिञा लोक सब अपन खिच्चड़ि मोछ केँ कपचा रहल छलाह। क्यो तौनीक जोगाड़ मे तँ क्यो पागक जोगाड़ मे फिफिआइत। नवका तूर अपना अपना जुत्ता पर पालिस पोतथि आ पुरान लोक बेर कुबेरक हेतु राखल अपन चमरउ जुत्ता मे अंडीक तेल दऽ रहल छलाह।

ज्योतिषीजीक चित्त सबारीक ओरियान मे लागल। घोड़ा रे, हाथी रे, टमटम रे, साइकिल रे, आ वर केँ खड़खड़िया पर लऽ चलबाक विचार स्थिर भऽ गेल छलनि।

समस्त आशा - आकांक्षाक एक मात्र केन्द्र-विन्दुक हेतु मनुष्यक हृदय मे जाहि प्रकारक उल्लास रहैत छैक, अनन्त ऐश्वर्य सम्पन्न रहलो उत्तर अनेक पुत्र सँ मण्डित पिताक हृदय मे ओहि प्रकारक उल्लास कहाँ सँ आबि सकैत छैनि।

बरिआती लोकनि सजि-धजि कऽ पहुँचैत गेलाह। रंग विरंगक ठोप चानन, ओढ़ावा-पहिरावा, क्यो चमेली, क्यो आमला, क्यो भृंगराज तँ क्यो नेवोक सेंट देल तिलक तेल पोचकारने, सौंसे दलान विविध प्रकारक सुगन्धि सँ आमोदित भऽ रहल छल।

द्वितीय महायुद्धक प्रभाव सम्पूर्ण बाजार पर ततेक भयानक रूपें पड़ल छलैक जे महगी सुरसा जकाँ अपन मुख-विस्तार कैने चल जाइत छल। टाकाक आगाँ वस्तु जात भेटब दुर्लभ छलैक। बड़का सँ बड़का लोक टाकाक अछैत बेर पर बेइज्जति होमऽ लगैत छल। ओ तँ ज्योतिषीजीक प्रभावे तेहन छलनि जे बरिआती सँ लऽ हथधरी मे अयनिहार लोक धरिक समुचित स्वागत सत्कारक हेतु यावन्तो साधन जुटि गेलनि। पहिने तँ बरिआती गेनिहार लोक डटबैत गेलाह–बड़ बड़ी, दही-सकड़ौरी। अफड़ि अफड़ि खाइत गेलाह। सब लोक अकसक। पछाति हथधरी कैनिहार सात गोटे पहुँचैत गेलथिन। हुनका लोकनिक विलक्षणता हुनके मे छलनि। यदि 'प्रणम्य-देवता' पढ़ने होइ तँ भीमेन्द्र गजेन्द्रक कल्पना कऽ लिअऽ, किन्तु ज्योतिषीजी आमे जुटौने छलाह तँ रंग विरंगक। एक प्रकारक आम दू सँ तेसर ककरो नहि ससरि सकलनि। जर्दा, जर्दालू, बम्बइ, मालदह, गुलाबखास, लक्ष्मीश्वर भोग, गोपाल भोग, ई सब तँ कलमी आम सब ठाम उपलब्ध होइत छैक, किन्तु सरही आम रंग विरंगक जुटौने छलाह जेना केसिया केरवी, बाँस तरक केरवी, मुलुकजीत, मिसरी कत्तल, चिनिञा पछाड़, विष्णुभोग।

सातो गोटे जी जान अरोपि कऽ भोजन करैत गेलाह। एकटा अगत्ती छौंड़ा ज्योतिषीजीक नजरि बचाकऽ एक गोटे कें एकटा आम दऽ देलकनि, सुपारी सँ कनेके पैघ। बड़का नरइ मे ई

आम होइत छैनि, नाम एकर अपूर्व छैक, सुगन्धि सँ तँ ई मातल रहैत अछि। एक टा आम घरक कोनो कोन मे धऽ दिऔक भरि घर आमोद पसरल रहत, किन्तु जे ई आम मुँह लगौलनि तनिक दुर्दशा भेले छनि। चिन्हार-जनार लोक तँ ई आम बड़ सावधान भऽ खाइत अछि। जँ एकरा मुँहठी काटिकऽ नीक जकाँ उपरका रस नहि गारि दौक तँ चोभा मारैत लगैत छैक सुरसुरी, आ खोंखैत खोंखैत लेर-पोटा चलऽ लगैत छैक तेँ ओकर नाम छैक ....ओह, एहि आमक नाम नहिएँ सुनी तँ कोनो क्षति ? एहन अश्लील नाम नहि बूझी सैह नीक। मुदा आब अहाँक उत्सुकता यदि बढ़ले जाइत हो तँ सुनि लिअऽ, परन्तु पछाति हमर दोष नहिं दी। नाम थिकैक एकर पहुनपदौना। से अन्त मे आग्रह पूर्वक ओहि सात मे एकटा पाहुन, जे कनेक बटुकोनि छलथिन, तनिका धरा देलकनि। खैबाक इच्छा तँ नहि छलनि, कारण कचौड़ी तरकारी पँचमेर मधुर, केरा, कटहर, दही सकड़ौरी आ ताहि पर सँ ओतेक आम खैने छलाह। ओना नहि ससरनि तँ अँचारक रेती दऽ दऽ जीहक धार केँ तेज कऽ खैने छलाह, किन्तु जखन ई आम पात मे पड़लनि तँ एकर सुगन्धि प्राण मे समा गेलनि। एतनी टा काया देखि साहस कैलनि आ मारलनि चाभा। चाभा लगबैत जे हुनक दुर्दशा थीक से देखितहिं बनै, कहैत नहि बनै। ई आम परसनिहार बारिक तँ आम परसि, घसकि देलक, मुदा ओ बेचारे आम खैबा सँ आहि दिन सपते खने हेताह।

ज्योतिषीजीक मोन विकल भऽ गेलनि, ओ तँ खोंखैत खोंखैत बोकरि बोकरि भरलनि। अन्तमे मुँह सँ गाडजि चलऽ लगलनि, नेर-पोटा चलऽ लगलनि, भरि आङन मे हड़बिड़ो उठि गेल। 'कोन गोत कोन माङर,' आङन मे एक दिस अरिछनि-परिछनि केर उल्लास छल आ दलान पर एहि पाहुनक आकुल-व्याकुल मोन ओहि उल्लासक बीच बूझू पाकल जौ मे पाथर पड़ि गेल। बहुत काल धरि एहि मे सब लागल रहल। ई आम के परसलक तकर पते नहि लागि सकलनि। हुनका कतेक पंखा हूँकल गेल, ठण्ढा पानि ढारल गेल, तकर तँ वर्णन नहि हो।

जेना तेना अन्त मे ई शान्त भेल। बरिआती लोकनि तैयार होइत गेलाह। एहन विलक्षण बरिआती महादेबेकेँ गेल होइनि से संभव भऽ सकैछ। एमहर तँ एहि तरहक बरिआती बिदा भेल। ओमहर हथधरी मे आयल व्यक्ति आगाँ बढ़ि गेल छलाह। साँझ मे आठ बजैत बरिआती लोकनि लीलाधर झाक दलान पर पहुँचैत गेलाह।

पहुनपदौना आमक चर्चा लक्ष्मीपुर मे बड़जोर सँ छल। ओकर बदला लेबाक भावना से सभक मोन मे उमड़ि रहल छलैक। तेँ लीलाधरझाक दलान सरिआती सँ भरल छल। बरिआतीक पहुँचिते सरिआती दल सँ एक पिकी मारलकैक से बूझि पड़लैक जे कानक पर्दा फाटि जैत। एहि पहिले पिकी पर सभक मुँह सूख-पाक होमै लगलनि। गाम परक खायल बड़-

बड़ीक गर्मी तँ एतबे पर उतरि गेलनि। मुनचुन जे स्वागतक ई पहिले विधि देखलनि तँ ताही सँ भविष्यक बहुत कल्पना कऽ बैसलाह। एखनहुँ हुनका मोन मे भेलनि जे पोखरि दिस जेबाक लाथें कतहु पड़ा कऽ चल जाइ, किन्तु एक बेर माता-पिताक अभिलाषाक वेदीपर अपन समस्त आशा-आकांक्षा होमि चुकल छलाह, तैं मोन मसोसि कऽ रहि गेलाह।

कोनहुना तँ संस्कृतेक विद्यार्थी छलाह, रटलाहा सूक्ति सब स्मरण होमै लगलनि.... बिवाहो जन्म मरणञ्च यदा यत्र भविष्यति.... लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः...' पुनः एहि भाग्य-वाद वा अदृष्टवाद पर मनहि मन शास्त्रार्थ होअऽ लगलनि.......
'भाग्यवादी कायर होइत अछि, भाग्येक भरोसें जिनगी भरि बैसल रहि जाइत अछि। यैह भाग्यवाद भारत कें गर्त मे धकेलि देलक।'

मुनचुन अन्तर्द्वन्द्व मे डूबल छलाह आ एमहर बरिआती सरिआती मे बतकुट्टनि चलि रहल छलनि। सरिआती मे सँ एक वृद्ध........ अवस्थें वृद्ध, मुदा स्फूर्ति मे युवको मे नवयुवक। भारतक जमीदारी जकाँ एक दाँत उन्मूलित, अन्तर एतबे जे जमीदारी उन्मूलनक बाद जमीदार लोकनि कें मुआवजा भेटलनि, हिनका एक-एक दाँत कुहरा कऽ संग छोड़ने छलनि। ज्ञानेन्द्रिय ओ कर्मेन्द्रिय सब विरोधी गुटक सदस्य जकाँ शरीर सँ विद्रोह करबाक हेतु उद्यत। साधारणतः ई बुझबाक चाही जे

दाँत टूटल....... चोकर सन मुँह, पपनी धरि पाकल,......चाम घोंकचल, डाँड़ भूकल, मूड़ी कपैत...... जेना सिहकी मे पिपरक पात डोलैत अछि। एक किशोर सँ पूछि देलथिन—'कखन अयलहुँ ?'

—थोड़ेक काल भेल अछि।

—एतनी काल मे एतेक टा भऽ गेलहुँ ? धन्य कही अहाँ क.......सरिआतीक ठहाका मे आगिला शब्द विलीन भऽ गेल। हँसीक पूर। लहरि शान्त भेला पर किशोर उत्तर देलकनि... 'ओ हमरे माय बाप केँ धन्य कही, जँ अहाँक माय बाप रहि-तथि तँ ओही ठाम......।' बरिआतीक ठहाका दलान केँ आन्दोलित कऽ देलक।

मुनचुन सोचि रहल छलाह.......'अपने जैब नेपाल, कपार जैत संगहि,' अन्तर विद्रोह कऽ रहल अछि जे एखनो समय छैक, एहन ठाम सम्बन्ध नहि करी, मुदा पिताक प्रतिष्ठाक रक्षाक हेतु कर्त्तव्य, भाग्यक नाम पर ओहि विद्रोह केँ दबा दैत अछि। कहल छैक—'उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मीः' हम अवसर पर चूकि रहल छी।' मुनचुनक विचार-सूत्र टूटैत नहि छलनि ओ सोचैत जाइत छलाह......'जेहने बातावरण मे नेना केँ पालल जाइत छैक, ओकर संस्कार ओहन हेबे टा करैत छैक। कन्यो एहने उद्धत ने होइक ...?' मन पड़लनि शिवमन्दिर...गोर-नार देह, कारी कारी केश, पैघ पैघ पपनी सँ झाँपल कारी भौर

आँखि ... .. । आगाँ मे आज्ञा पानक डाला अयलनि । विधि वाद सुरू भऽ गेल । ज्योतिषीजी एकके ठाम एक सँ एक टाका विधि व्यवहारक नाम पर दऽ देलथिन । साँकड़क भार आङन गेल ।

एक कात मे निर्लिप्त भावें बैसलि छाया देखि रहलि छलि.... 'सोटल साटल देह....शिवमन्दिरक द्वार....कात मे अगराइत बहैत चल जाइत गण्डक... पैंघ पैंघ आँखि कुंचित केश...आयताकार कपार.... पावसक शैशव जेना क्षितिजक छोर पर कारी कारी मेघक रेखाक रूप मे देखि पड़ैछ, तहिना मोछक पम्ह । संगी सहेलीक झुंड आबि, लीरीबीरी कऽ देलकैक । गोसाउनिक गीत आरम्भ भेल । मैथिल ललनाक कंठ-स्वर सं झंकृत भऽ उठल—जय जय विषहरि हरिअ दुरित मति, करिअ मनोरथ पूर हे । तुअ परताप जगत परिचारित जनु ग्रीषम मधि सूर हे ।

आम-मडु बिआहल गेल । पड़िछनि लै मुनचुन कें उठा कऽ लऽ गेलनि । मूर्तिवत् विदा भेलाह । अपने नमछर, विधि-करी भुट्टि, तैं जतेक काल नाक पकड़ने रहलनि ततेक काल मन मे ओहने अनुभव होइत रहलनि जेहन अनुभव दू दाँतक नाथल बच्छा कें टायर गाड़ी मे जोतने बहलमान गाड़ी कें खाधि मे ने लऽ जाय ताहि डरें राशि कसने होइक ।

शुभ शुभ कऽ मुनचुनक संग छायाक गेंठबन्धन भऽ गेलनि ।

—:०:—

५

ज्योतिषीजी सन षट्कर्मी लोक, विवाह सन संस्कार मे कोनो प्रकारक अविधि कोना होमै दितऽथिन ? मुनचुन एक दिन पहिने चौर करौने छलाह आ एकभुक्त कैने छलाह। विवाहक दिन गाम सँ अभुक्ते चलल छलाह। ओहू मे बकठेना लागि गेलाक कारणेँ तीन घण्टा विलम्बे भऽ गेल छलनि। तथापि रातिक एगारह बजैत बजैत विवाहक विधि सम्पन्न भऽ गेलनि। वेदी तर सँ उठाकऽ उतरवरिया पुवरिया कोनचड़ मे एक सुन्दर सुसज्जित, विनु केवाड़क, घर छलैक, ओहि मे आनि कऽ मुनचुन केँ बैसाय देलकनि।

गोड़ पचासेक धीआ पूता चारूकात सँ घेड़ने छलनि। चारूकात सँ प्रश्नक वर्षा होइत ...'अहाँक की नाँव थीक ठाकुर,.... अहाँ ककर बेटा छी.... अहाँ केँ कै टा बहिन छथि.... सभक विआह भऽ गेलनि कि कुमारिओ छथि....ओह, हिनकर बहिन कुमारि नहि छथिन, हिनकर माइए एखन कुमारि छथिन....

अहाँक माइक की नाम थिकनि ... अहाँक बाप सँ अहाँक माय कतेक दिनुक जेठ छथिन ... अहाँक पितिआइनिक विआह भेलनि ताहि मे अहाँक बाप ढोल बजौलथिन की पिपही.... ... अहाँक बाप कन्यादान कैलनि आ अहाँ बहिनदान किएक ने करैत छी...बजैत छी किएक ने... मुँह मे कोनो धीआ पूता.... फिरि देलक अछि ?' इत्यादि इत्यादि।

डेढ़ दिनुक सहल, वेदीक धूँआँ सँ लाल भेल आँखि, अनिच्छा-पूर्वक भेल जीवनक ई एतेक महत्वपूर्ण घटना, मनक उद्विग्नताक हेतु पर्याप्त छलनिहें, ताहि पर सँ एहि प्रकारक अंट संट प्रश्न, गारिक वर्षा, इच्छा होइनि जे एकदम एकान्त मे रहितहुँ। ठीक तकर उनटा स्थिति छलनि ताहि सँ मोन आरो उद्विग्न भेल जाइनि। एक शब्द कोनो प्रश्नक उत्तर मे नहि कहलथिन। हिनक चुप्पी देखि धीआपूता अपन प्रक्रिया मे उन्नति कैलक... क्यो टीक नोचि लेलकनि, क्यो तौनी घीचि कऽ देह पर सँ लऽ कऽ चल गेलनि। एक तँ स्वभावतः क्रोधी लोक, ताहि पर सँ एहि प्रकारक उछन्नर, किन्तु तथापि मुनचुन भृंग द्वारा स्पर्श कैल भिंगुर जकाँ स्तब्ध, अपन स्थान पर बैसल रहलाह।

एही बीच एक व्यक्ति एक टा लोटा आनि कऽ देलकनि आ कहलकनि—'ठाकुर, ई सकड़ौरी तावत पीबि लिअऽ, बरिआती सब खा लैत छथि, तखन अहूँक प्रबन्ध भऽ जाइत अछि।'

भूख लागल रहबे करनि, हपसि कS लोटा उठौलनि ओ घटाक घटाक तीन चारि घोंट पीबि गेलाह की सकड़ौरीक बुनिया दाँत मे अभड़लनि। ओहि पर दाँत बैसबैत मोन विकृत भS गेलनि। तखन जे स्वादलनि तँ ओ दूध नहि बूझि पड़लनि। थूकि कS देखैत छथि तँ चीनी दS पिठार घोरल आ बुनियाक स्थान पर बकरीक नेड़ी दहाइत। एहि पर छौंड़ा सब मारलक ठहाका। ठहाकाक संगहि मुनचुन लोटा उठाय जुमा कS माँझ आङन दिस फेकि देलथिन, बैसल छौंड़ा-छौंड़ीक झुण्ड आरो जोर सँ खिलखिला उठल।

मुनचुनक शेषनाग जागि उठलथिन। ऊठि सोझे दलान दिस विदा भS गेलाह। हिनका माँझ आङन मे पहुँचिते स्त्रीगणक उमड़ैत समुद्र मे हिलकोर आबि गेल, क्यौ एमहर पड़लीह आ क्यौ ओमहर। पछवरिया घरक ओसारापर ठाढ़ि सासु चार सँ दूधऔंटा ओड़िका उतारैत छलथिन से अंग भको भंग छलनि, जमाय कें देखिते लुद्द दS ठामहि बैसि गेलथिन। तावत घरक चुलहा पर चढ़ल दूध उधिया कS थोड़ेक खसि पड़लनि,.... ध्यान मे अयलनि—'सब टा छाल्हिए उधिया कS चूल्हि मे चल गेल.... क्षोभ भेलनि जमाय पर...एना घरहुलका कुकुर सन कतहु जमाय होइक...कोबर पहुँचलैक की नहि तावत हुलहुल करै लगलैक... तामस भेलनि अपना पर ...हम केहन अपरोजकि छी जे ओड़िका विनु उतारने दूध कें चुलहा पर चढ़ा देलिऐक.... फेर अफसोच भेलनि चूल्हि पर खसल छाल्ही देखि कS।'

एही बीच लीलाधरभाक जेठ बेटा सतीश आङन पहुँचलथिन आ एक ललकार ओहि छौंड़ा सब कें देलथिन—'वनहुल्लुक सब नहितन। सब खड़ हानक बथान एही ठाम बनि गेलनि अछि ?' मुनचुन दिस सकरुण दृष्टिएँ ताकि पुछलथिन--'ठाकुर, की भेल ?'

—'हैत की ? विनु केवाड़ वला उदाम-घर मे आनि कऽ बैसाय देलहुँ अछि, ताहि पर सँ पुछैत छी—ठाकुर की भेल ?'

मुनचुन अनुकृति करबा मे बेस निपुण, तैं सतीशेक उच्चरित ध्वनि मे हुनके सन मुखाकृति कऽ कहलथिन—'ठाकुर की भेल।' हुनक आकृति ओ बाजब कें देखि, सूनि सिरकी तर सँ तकैत नवकनेआ ओ नऽव नौतारि गामक बेटी सभक बीच हँसीक मधुर ध्वनि किलकिला उठल।

सतीश हाथ पकड़ने सोझे कोबर घर मे लऽ जाय बैसा देल-थिन। अपने बाहर गेलाह कि मुनचुन चट दऽ घरक केवाड़ मे बिलैया ठोकि लेलनि।

ई जे एकान्त चाहैत छलाह से भेटि गेलनि। आश्वस्त भऽ खाट पर चितंग भऽ पड़ि रहलाह आ ठेही उतारबाक बुद्धिएँ मृतकासन मारि—दूनू पैर कें जोड़ि तानि—लेलनि।

सतीश जे उग्र रूप मुनचुनक देखलथिन तँ आँखि पर सँ विश्वास हटल जाइनि। समीपक गाम आ दूनूक छात्र-जीवन रहलाक कारणें परस्पर परिचय पहिने सँ छलनि। ओ यैह सब तर्क-वितर्क करैत दलान दिस घूरि अयलाह—'प्रतिभा

सम्पन्न रहितो, हम जतेक गंभीर युवक बुझैत छलिऐनि से हमर भ्रम छल ?' घर सँ उठि माँझ आङन मे चल आयल देखि सतीश केँ मुनचुनक गंभीरताक एकदम विपरीत बूझि पड़लनि। एही विचार-तन्तु पर मन केँ एकाग्र कैने सतीश दलान धरि अयलाह आ चोट्टहि बरियाती सब केँ खोऐबाक प्रबन्ध मे आङन चल अयलाह।

मुनचुन मृतकासन छोड़ि दहिना करोटेँ घुरलाह तँ उतरवरिया टाट पर नजरि गेलनि। ओहि पर बाँसक बीट, कमलक कोढ़ी, पुड़ैनिक पात,महफा मे बैसल वऽर कनेञाक चित्र अंकित, नीचा दृष्टि गेलनि तँ पातिल मे अखण्ड दीप जरैत, ओहि प्रेम-प्रदीपक साक्षी रूप लग मे हाथी पर चढ़लि गौर आ शिवक प्रतीक पुड़हर राखल।

मुनचुन मनहि मन चित्र सभक विश्लेषण करै लगलाह— 'विवाह ओ बाँसक बीट मे कोन सरोकार ? .. हँऽ विवाहक बाद बाँसे जकाँ कोपड़. बाँसे जकाँ कड़ची ... धीया-पूता......नाति नातिन ...ढेनमा-ढेनमी.... जंजाल - जपाल'।

'कमलक कोँढ़ी ओ विबाह मे कोन सम्बन्ध ? हँ अरुणोदयक प्रतीक्षा मे बैसलि कोँढ़ी पूर्ण विकसित हैबाक हेतु समुत्सुक अछि। जीवन मुकुलित कमल थीक। प्रकृति ओ पुरुषक मेल जीवनक पूर्णतारूपी मधुर-मिहिर थीक, जाहि सँ ई जीवन पूर्ण प्रफुल्लित होइत अछि।'

'पुड़ैनिक पात ओ विवाहक कोन सम्बन्ध ?.... हूँऽ जीवन सरोवर मे बोहिआइत रहितो पुड़ैनिक पात जकाँ निर्लिप्त रहि बन्धन स छुटबाक एक उपाय ।'

'महफा ओ जीवन मे कोन सम्बन्ध ? हूँ एक दिन एहि पार्थिव शरीरक चरम परिणति एही रूप मे श्मशान दिस अग्रसर होइत ।.... ..'छोड़ बाबुल का घर, आज पी के नगर ...' कण्ठ सँ अनायास ध्वनित भऽ गेलनि ।'

दू क्षण ई तन्मयता रहलनि । पुनः दृष्टि गेलनि पातिल पर, पातलिक अर्द्ध निमीलित दृष्टि सँ बहराइत प्रकाश पर, प्रकाशक टेम पर, टेमक आधार पर अर्थात् स्नेह पर अर्थात् जीवन रूपी अखण्ड-दीप, स्नेहक अजस्र - स्रोत रहला सन्ताँ केहनो बिहाड़ि मे जरैत रहि सकैत अछि ।

सब सँ बाद मे नजरि पड़लनि दीपो पर-'मनुष्यक आकृति मे माॅटिक बनाओलि एक नारी,'-जीवन मे आबय वला समस्याक प्रतीक ओ बूझि पड़लनि । नजरि पलटलैन तँ खाटक ऊपर कोनो चतुर कलाकारक तूलिका सँ चित्रित देखि पड़लनि पार्वत्य-शृंखला, हरित भरित वन, आ ओहि पार्वत्य-शृंखला केँ तोड़ि बहैत एक निर्झर.... फेर कण्ठ अनायास गुनगुना उठलनि.......' 'यह जीवन क्या है ? निर्झर है ।'

कोबरक घर रहैक दोरुक्खा । पछुआति दिसक केवाड़ी पर थपथपाहटि सूनि पड़लनि''' '''अकानलनि तँ चूड़ी ओ मंजीरक

क्षीण-ध्वनि कान सँ टकरा गेलनि। सतर्क भऽ उठलाह आ केवाड़ फोलि देलथिन। केवाड़ फोलैत जे घर मे प्रवेश कैलक से एक नारी मूर्ति, सोड़ह सत्राह वयस, धनुषाकार घनगर भहुँ, ठाढ़ छुरिया नाक, पीठ पर बेस पैघ दू टा केशक जुट्टी लटकैत, आँखि मे काजर, कान मे सोनक एक चमकैत गहना, गोर शरीर, कारी ब्लाउज ओ पीअर छपुआ साड़ी पहिरने, पान सँ रङल ठोर, कपार पर छोट सन टिकुली साटल, पूर्ण स्वस्थ शरीर, मुनचुन सँ देह-दशा मे बीसे, न्यून नहि, आँखि मे करुणाक अद्भुत भाव हिलकोर मारैत।

ओ प्रवेश कैलक आ तुरत घूमि केवाड़क किल्ली बन्द कऽ देलकैक। मुनचुन अवाक् जे ताकि रहल छलथिन से दूनू हाथेँ दूनू हाथ पकड़ि घिचने आनि कऽ ठेलि देलकनि आ खाट पर राखल सीकीक बीअनि केँ नचबैत कहलकनि–'ठाकुर, ई तँ हमरा नहि चिन्हने हैताह ? चिन्हताह कोना ? एखन हिनका जकरा सँ सम्बन्ध भेलनि अछि तकरो ने चिन्हने होइथिन; अनका कोना चिन्हथिन ? एखन धरि क्यो खैबाक पुछारि नहि करऽ अयलनि अछि ?'

मुनचुन विस्मय-विमुग्ध, ओकर जबाबक छबि छटा देखि रहल छलथिन। वस्तुतः मुनचुन केँ जीवन मे कहिओ ओ समय नहि भेटि सकलनि जे छौंड़ा सभक सँग धूरो माटि खेलायल होथि। स्त्रीगणक बीच बैसबाक अवसर तँ सहजहि कहिओ ने आयल छलनि। गामो पर छुट्टी तुट्टी मे आबथि तँ भाउजि लोकनि

रेड़ने फिरथिन आ ई पड़ायल फिरथि। टोल मे रहथिन एक टा बड़कीं भौजी। हुनका आङन सँ बड़ अपेक्षा-पात, समय-समय पर आम, कटहर, सजमनि, कदीमा, साग, भाँटा अर्थात् जनिका बाड़ी-झाड़ी मे जे उपजनि से परस्पर आदान-प्रदान चलिते रहनि। ई जँ गाम आबथि तँ बड़ स्नेह सँ कहिओ पन-पिआइ तँ कहिओ भोजन करवथिन। जखन ई आठे नौ वर्षक रहथि तँ कहिओ काल बड़की भौजी कहथिन-'पढ़ आ बाबू, आइ राति मे अहाँक भानस हमरे आङन मे हैत। एही ठाम खा पीबि कऽ हमरे आङन मे सूति रहब, प्रात खन अपना आङन चल जैब।'

एतबा सुनैत मुनचुन छिलमिला कऽ पड़ाथि-'हम अहाँक आँङन मे राति कऽ नौत नहि खा सकैत छी, आङन मे सूतब से की हम मौगी छी?' ओ सोर करैत रहि जाथिन आ ई पड़ायल पड़ायल दलान पर आबथि। कखनहुँ कऽ बड़की भौजी हिनका आङन बूलै अबथिन तँ हिनका बजाय हिनका माय कें कहथिन-'सुनैत छथि काकी, आइ पढ़ आ बौआक भानस हमरे आङन मे होइत छैनि, ओही ठाँ खाकऽ राति मे सूति रहथिन, भिनसरे चल औथिन, एखन हिनकर चाउर नहि लगवथुन,' तँ मुनचुन छिलमिलाइत दलान पर पड़ाथि—'हमर चाउर नहि लगैबे तँ हम भुखले सूति रहबौक।'

एहि तरहक जकर जीवन रहलैक अछि, ताहि मुनचुनक हेतु आजुक दिन, ताहू मे आजुक राति, ओहूमे ई क्षण, अविस्मरणीय क्षण छलनि। ओही नारीक प्रश्न-सूचक दृष्टि मे नजरि स्थिर भऽ गेलनि आ प्रश्न बिसरि गेलनि जे पुछने छलनि। ओ देखैत चल जाथिन 'ओकर रूप...... ओकर... प्रवेश...... ओकर आत्मीयता......ओकरा बोली मे मिश्रित-माधुर्य आ फेर प्रश्न सूचक दृष्टि। बुझना गेलनि कोमलताक चित्र यदि बनाओल जाय तँ प्रायः एहने हेतैक।'

मुनचुनक तन्मयता केँ भंग करैत, लुखिया मुस्कुराइत कहल-कनि—'किएक एना गुमसुम बैसल छथिन ठाकुर, एहन मारूख आँखिएं हिनका कोना ताकल जाइ छैनि? चिन्ता कथीक होइत छैनि! हमर छाया हिनका आँखि मे बसल रहतनि, मोन मे घुलल रहतनि। हीरा अछि हमर बहिनपा। हमरा सँ दू बरखक छोटि अछि, मुदा दू देह एक परान अछि। ने हम बुझैत छिऐक जे हम जेठ छिऐक आ ने ओ बुझैत अछि हम छोटि छिऐक। नेना सँ दूनू गोटे एक ठाँ खैलहुँ एक ठाँ खेलैलहुँ। हमरो विआह मे ओ दिन राति जी हुजूर रहैत छलि, तखन हम कोना ने ओकरा विवाह मे रहबैक? दौड़ले गेलहुँ हें आ माय सँ छुट्टी लऽकऽ दौड़ले चल अयलहुँ। हमरा तँ होइते छल जे ई एखन कतहु कोन मे एकसरे माछी मारैत हैताह। मोन अगम-अथाह मे पड़ल हैतनि। हमरा बहिनपा केँ भरि मुँह गप्प करबाक सेहन्ता

तँ नहिञो पूर भेलनि, मुदा भगवान हमर मनोरथ पूर कैलनि जे हिनको सन वऽर हमरा बहिनपा कें भेटलथिन ?'

मुनचुन कल्पना-लोक सँ उतरि समतलमे आबि गेल छलाह। कहलथिन—'हिनका बहिनपा कें गप्प करबाक सेहन्ता किऐक ने पूर भेलनि ?'

—'दुर बुढ़बा मनसा सँ लोक की गप्प करतैक ? कोना सौख भेलैक बुढ़ारी मे फेर घुनेस पहिरबाक से ने जानि। अइ मे हमर बहिनपे भागमन्ति अछि ?'

'अहाँक नाम की थीक ?'

—'माय बाप कें एकटा नीक नामो ने भेटलैक जे रखैत। सोचने रही जे विआह हैत तँ घरेवाला कें कहबैक एकटा नीक नाँ राखि देबऽ, मुदा से रस बूझै बला रहै तखन ने, ओइ धम-धुस्सर कें की कहल जाय।'

—'बूझि पड़ैत अछि अहाँ अपना विवाह सँ बड़ असन्तुष्ट छी।'

'असन्तुष्ट की रहब। भगवान पूर्व-जन्म मे जकरा कपार मे जे लिखने रहैत छथिन तेहने ने होइत छैक।'

—'मुदा अहाँ अपन नाम कहलहुँ नहि।'

—'लाज होइत अछि। अहीं एकटा नीक नाँ ताकि दिअऽ।'

—'से हम पाछाँ ताकि देब। एखन अहाँ कें लोक की कहैत अछि से तँ कहू।' मुनचुनक उत्सुकता जेना बढ़ैत गेलनि।

—'लुखिया।' एतबा कहैत लुखिया मूड़ी निहुरा लेलक। मुखमण्डल आरक्त भऽ गेलैक। संकोच आँखि कें बन्द कऽ देलकैक, किन्तु नाम सुनलाक बाद मुनचुनक मुँह पर प्रतिक्रियाक केहन भाव अबैत छैनि से जनबाक उत्सुकता ओकरा अधिक काल मूड़ी निहुरौने नहि रहऽ देलकैक।

मुनचुन कें लुखियाक मुँह पर बदलैत भावक अनुमान लागि गेलनि। नाम ओ नीक लगलनि वा नहि, से ओ जानथि, किन्तु कहलथिन—'लुक्खी दाइ,' बहुत सुन्दर नाम अछि······अहाँ खूब फुर्तिगरि हैब। ई नामे फुर्तीक सूचक थीक। हमरा फुर्तिगर लोक बड़ सोहाइत अछि। धिम्मड़ लोक सँ हम पड़ाइत रहैत छी।'

—'ठाकुर हमरा सन कनेञा होइतनि तँ हिनका नीक लगितनि ?'

—'से एतेक जल्दी मे हम नहि कहि सकैत छी। केहन कनिञा हमरा नीक लागत से हम अपनहुँ ने बुझैत छिऐक।'

तावत ककरो पदध्वनि कोबर घर दिस अबैत सुनि पड़लैक, तँ लुखिया चट दऽ ऊठि आङन दिसुक केवाड़ कें फोलि देलकैक।

केवाड़ फोलि देखला उत्तर पदध्वनि एमहर अबैत तँ नहि देखि पड़लनि, किन्तु सुनि पड़लनि बरिआती लोकनिक भोजन करैत कालक ललकारा, जेना कोजागराक राति मे पचीसी होइत हो।

बरिआती मे गूजन सेहो गेल छलाह। विनोदी लोक रहबाक कारणेँ अधिक सँ अधिक ठाम लोक हिनका लइए जाइत छलनि आ सब ठाम ई अपन प्रत्युत्पन्नमतित्व सँ आनन्द आनन्द कऽ देथिन। गूजन केँ नीक जकाँ बूझल जे लक्ष्मीपुर लङटाह गाम अछि, उछन्नर बड़ करैत छैक तेँ आरो सम्हरि कऽ गेल छलाह। छलाह एकदम मूर्ख, मुदा चलता पुर्जा आ थोड़ेक दिन कानपुर आ कलकत्ता मे दरबानीक काज सेहो कऽ आयल छलाह, ताहि सँ बजबा भुकबा मे आरो फरहर रहथि। दू वर्ष एक टा हाई स्कूल मे चपरासी सेहो रहथि। कुल कुदरति ई छौ वर्ष गाम सँ बाहर रहलाह, ताहि मे थोड़ेक अङरेजी शब्दकेँ तोड़ि मड़ोरि कऽ अपना कण्ठ मे पोसि रखने रहथि। गाम सँ बाहर एक बेर गेला, फेर जे घूरि कऽ अयलाह तँ समस्तीओपुर नहि गेल छलाह। बरिआती मे साफ लत्ता कपड़ा चाही से संयोग सँ धोती पुरान रहनि, खीचै काल नीक जकाँ मसकि गेलनि। पहिरि कऽ गाम गमाति जैबाक योग्य नहि रहि गेलनि। तँ टोल मे ककरो सँ माङि कऽ लाले धोती पहिरि कऽ बरिआती गेल रहथि।

जखने लाल धोती देखलकनि तखने सँ हिनका वृद्ध-बटुक नामेँ सम्बोधित करऽ लगलनि। एक टा बी० ए०क विद्यार्थी सरिआती मे छलाह। ओ लुच लुच अधिक करथि। जखने सँ बरिआती पहुँचल की ओ अपन योग्यता - प्रदर्शन करबाक हेतु आफन तोड़ै लगलाह। गूजन केँ एकर अन्दाज लागि गेलनि तँ

अपना दिस सोर कैलथिन जे अहाँ केँ जे किछु पुछबाक हो से हमरा सँ पूछू।

—'अहाँ की पढ़ने छी ?'

—'कोदराष्टक आठो अध्याय, महिषी-महिमा पन्द्रहो सर्ग, बड़द-व्याख्यान-मालाक सताइसो भाग आ वात्स्यायनक सम्पूर्ण काम सूत्र.......................'

—'तखन हम अहाँ केँ की पूछब। अहाँ केँ जे पुछबाक हो से पूछि सकैत छी।'

—'अहाँक की सब पढ़ल अछि ?'

—'हम बी० ए० मे पढ़ैत छी।'

—'तखन तँ खाउर मे सँ एको टा प्रश्नक उत्तर अहाँ बुतेँ पार नहि लागत।'

—'से की ?'

—'सेकी नहि, हमर प्रश्न—अहाँक हेतु 'ढेकी' सन भारी हैत। बी० ए० मे पढ़निहार विद्यार्थी केँ हम की पूछू। हम तँ एको बीत जमीन बीआ सँ आबाद नहि करैत छी, खाली खाउर सँ आ अहाँ भेटलहुँ तँ बीए। बेस, कहू तँ-'डिक्सनरी डी फैट गुड फ़ेडी दी सैंटी लैट थट्टी टू पटना एण्ड फिफ्टी टू कैलक़ाटा।' विद्यार्थी केँ मुँह तकैत देखि गूजन फेर कहि उठलथिन—'हम पहिने कहलहुँ जे खाउर मे सँ एको टा उत्तर अहाँ नहि दऽ सकब। हमरा फैक्ट्री मे एक बेर बड़ा लाट चिम्बरलेन आयल

रहथि तँ ओ अङरेजी मे हमरा कहलनि। हम उत्तर देलिऐनि—'यू डी फिफ्टी टू, ग्रैण्ड मदर लैण्ड गौड वाइट दैट फैक्ट ऐक्ट हण्डर दी ब्लण्डर औफ टीप टौप गुड बेड कैट भेरी गुड फैट मैट रैट औन सैट।' बड़ा लाट गुम भऽ गेलाह। कहलनि—'टुम हिन्दुस्टानी अङरेजी बोलटा भेरी गुड बैड।' अङरेजी जननिहारक संख्या नगण्य छल। गौरव सँ उद्ग्रीव होइत गूजन दलान परक सब लोक पर एक नजरि घुरौलनि तखन फेर कहलथिन—'हम पहिने कहलहुँ जे हाई अङरेजी अहाँ की बुझबैक। बेस एकटा बीए मे सँ पुछैत छी। उठान नहि हारै लागी।'

विद्यार्थी कहलथिन—'अहाँ जनैत छी एक अच्छर नहि आ अगबे अङरेजी दड़रने जाइत छी।'

गूजन फेर बाजि उठलाह—'अच्छा कहू—'आइ डौन्ट नो' माने की होइत छैक।' विद्यार्थी कहलथिन-मैं नहीं जानता हूँ।

—'आ दुर छी, मुसलमानी भाखा मे की बजैत छी, अपना माय बापक भाखा मे कहू।'

—'हम नहि जनैत छी।'

—से तँ हम पहिने कहलहुँ जे अहाँ भुसकौलक टाड़ी छी। जखने हम देखलहुँ-नमरल चुरकी, आधा मोछ, कानी काटल, आ ढेका भरि पोन पसरल, तखने बुझलहुँ जे अहाँ घरक आँटा गील करैत छी, बापक हड़िरा ढील करैत छी। सब मारलक

ठहाका। गूजन गौरव सँ फेर नजरि नचाय भीत लागि ओठङि गेलाह।

छौंड़ा सब तखन सं गूजन पर कनखड़ल छल। भोजनक काल मे सब ओलि सधा लेबाक हेतु भूमिका बान्हि चुकल छल। बारिक लोकनि जँ किछु परसऽ आबथि तँ चारू भाग सँ ओ सब कहऽ लगैक हाँ हाँ हां हाँ हिनका नहि दिऔनि, सब दूरि जैत, ई की मनुक्ख थिका जे मधुर खैताह।' गूजन मटिऔने जाथि।

जखन दूध उठलैक तँ एक टा छौंड़ा दू छिम्मड़ि केरा बेस मोटगर पात मऽकऽ धऽ देलकनि। गूजन ओकरा दूधक बाटी मे मुट्ठी सँ दबलथिन तँ चेङा माछ जकाँ कूदि कऽ बाहर चल गेलैक। धुरखुड़ लग ई बैसल छलाह ओ धुरखुड़क ओहि पार गीत-गाइनि सभक झुण्ड बैसल छल। ओकरा पिछड़ैत देरी गूजन कूदि उठलाह—'इह् जेना देखले रहैक।'

सरिआती दिसुक वातावरण गम्भीर भऽ गेलैक, तावत बट्टा भरि दूध गुजन एके छाक मे पीबि गेलाह। आब की छल, हिनका दूध देने जाइनि आ ई पीने जाथि। अन्त मे जखन दूधक टोटा होअ लगलैक तँ एक वृद्ध जन बारिक कहि उठलथिन— 'बूझि पड़ैत अछि हिनका माइओक दध भरि इच्छा नहि भेटल छैनि।'

गूजन सेहो संकल्प कैने छलाह जे कोनो ने कोनो वस्तु मे घरबैया कें बिनु देखार कैने नहि छोड़बनि।

छलैक अकालक समय आबि गेल अवश्य। बिनु परमिट सँ तेल, चीनी, कपड़ा तँ दुर्लभ छलैके जे एमहर साधारणो वस्तुक मोल आकाश छूबि रहल छलैक। ओ तँ लीलाधर झा सन कलामी लोक तें कथूक भान नहि होमऽ देलथिन।

जखन बरिआती लोकनि दलान पर पहुँचल छला तखन जेना सत्कार भेल छलनि, से बहुत गोटेक सेहन्ते पूर भेल छलनि। जाहि तौलिया लऽकऽ खवास पैर पोछने छलनि, तकर कोमलताक अनुभव कऽ गूजन मनहि मन कूही भेल छलाह जे एहि सँ तँ मुँहो पोछब भागमन्ते कें जुड़तैक आ ताहि लऽकऽ लोकक पैर पोछि अङपोछा कें बेइज्जति कैल जा रहल छैक। तुरत ठण्ढा सरबत आ ताहि पर सँ खोआ भरल पड़ोरक मोरब्बा, पिस्ताक बर्फी, घृत मे तरल काजूक नोनगर भूजा, जे० बी० मंघारामक विस्कुट, रेड लेबुल चाह, ताहि सँ सब बरिआती परितृप्त भऽ गेल छलाह। चाननक धूपबत्ती जे जरि रहल छलैक, ओकर आमोद सँ लोकक हृदय आप्यायित छलैक।

अन्त मे एहि तरहक सत्कार आरम्भ हैत तकर ककरो कल्पनो नहि भेलनि। गूजन कहि उठलथिन—'से आइ माल हो वा मनुक्ख, मुदा भरि छाक दूध पिआबै पड़त।'

अन्त मे लोहिया उझीलि देलकनि की ताही पर पड़ल हहारो। ओही हहारोक शब्द सुनचुन ओ लुक्खीदाइ कें केवाड़ फोलैत देरी सूनि पड़लनि। लुक्खीदाइ कें विश्वास भऽ

गेलैक जे एखन बरिआती लोकनिक भोजन मे आङनक लोक तेना कऽ ओझरायल अछि जे एमहर अयबाक पलखति ककरो ने हेतैक। तें ओ अपन गप्पक क्रम कें आगू बढ़ैबा मे कोनो क्षति नहि बुझलक। केवाड़ी कें फुजले छोड़ि खाट लग घूरि आइलि आ मुनचुनक आकृति पर दृष्टि गड़ा देलकनि। दू क्षण तं मुनचुनक दृष्टि टिकलनि, मुदा बूझि पड़लनि जे अन्तर मे एक प्रकारक आम्रेड़न भऽ रहल अछि। जीवन मे ई पहिल दिन छलनि जे कोनो सजीव नारी-मूर्तिक आँखि मे दुइओ क्षणक हेतु हिनकर आँखि पड़ल छलनि। आँखि मिलमिलबैत कहलथिन—'सोझे रूप सँ सुन्दर रहने जीवन नहि ने चलैत छैक। रूप तँ अस्थिर वस्तु थीक, महाग अस्थिर, दोसर प्रकृतिक विधान एहन विचित्र छैक जे कोन क्षण मे रूप-सौन्दर्य कें बिगाड़ि देत तकर कोन ठेकान? तैं जोवन कें सुखमय रखबाक हेतु आन्तरिक सौन्दर्य चाही, शील, विनम्र स्वभाव, जोवनक प्रति निष्ठा ओ अपना प्रति विश्वासक संग आत्म-सन्तोष चाही। तेहने लोक भेटि जैत ई तँ बड़ भाग्यक बात थीक। जीवन मे ई पर्व भेल अछि नहि। तैं एखन हम अपनहुँ ने बुझैत छिऐक जे केहन कनिञा पसिन्न पड़त।'

प्रचण्ड देहात मे पलॉल, जन्म सँ गमारि लुखिया, मुनचुनक ई जीवन-दर्शन नहि बूझि सकलनि, किन्तु बात सब नीक लगलैक अवश्य। मनहि मन ओ सोचि गेल—'एहन वऽर भगवान

हमरा दितथि तँ कतेक सुखी रहितहुँ।' अकस्मात् ओकरा अपन पतिक स्मरण भेलैक—'स्थूल शरीर, पैँतालिसक वयस, तिलकल केश, फलकल नाक, फूलल गाल, लटकल धोधि, भीतर जरैत वासनाक निधू भुम्हुर-आगि, वज्र सन पंजा....जहिना गट्टा पकड़लकैक तँ बूझि पड़ल रहैक जे हाथ मे हथकड़ी क्यौ पहिरा देलक अछि ? 'ओह ! जीवन एक विडम्बना, ... नारी जीवन, पराधीन जीवन... ढेङ तर पड़ल दूबि सन उसट्ठ जीवन......' मोन वितृष्णा सँ भरि गेलैक,.... करुणा शरीरक रोम-रोम केँ झनझना देलकैक...एक शून्यता मनक आकाश मे व्याप्त भऽ गेलैक, एकाएक भेलैक जे मुनचुनक उन्नत-वक्ष पुर मूड़ी गाडि कऽ आइ भरि इच्छा कानि लितै जाहि सँ मोनक समस्त आक्रोश नोर क संग बहि जइतैक ... 'सोआइत नोर नोनगर होइत छैक !'

अकस्मात् धम्म दऽ विधिकरी भोजनक ठाँव करै पहुँचि गेलथिन। साठिक वयस, झोखड़ल शरीर, पाकल केश, टूटल दाँत, खिन्न काया, निस्तेज आँखि, किन्तु यैह रहथिन विधिकरी ... विधिकरी अर्थात् काम-कलाक प्रथम शिक्षिका ...। अबिते लुखिया केँ बैसल देखलथिन तँ बाजि उठलीह—'तों छें एहि ठाम, हमरा तँ होइत छल जे ठाकुर सूति रहलथिन। भूखेँ पिआसेँ पित्त आँट भऽ गेल हेतनि। एक टा टिकजरुआ वरिआती छैक से दुनू लोहिआ दूध पीबि गेलैक। मार बाढ़नि, कोन पेट मे अँटलैक मुँह झौंसा केँ ?' फेर ओ ठाँव करै लगलीह।

रातिक डेढ़ बजैत छलैक। आब एखन एकान्त रहबाक संभावना नहि देखि, लुखिया हाफी कैलक आ उठि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि। मुनचुन चुटकी बजबैत पुछलथिन—'जाइ छी ?' बेस, जाउ। घड़ी देखैत मुनचुन फेर कहलथिन-'रातिओ बहुत भेलैक, डेढ़ बाजि रहल छैक। कनेक सुधि बुधि राखब।'

लुखिया पुछलकनि—'चुटकी किएक बजौलथिन ठाकुर-'

—'बूढ़ पुरान लोक कहैत छैक जे हाफी भेला पर, प्राणवायु कें बहरैबाक डर रहैत छैक। तें चुटकी बजौला सँ ओकर शमन भऽ जाइत छैक।'

—'हमरा सभक प्राणक कोन मोल....।'

'सब सँ बेसी मोल रहितो, बहुत कें अपना नहि बूझि पड़ैत छैक।' मुनचुन उत्तर देलथिन आ जेना विचार-लोकमे डूबि गेलाह।

कोनो नारीक प्रसंग आइ पहिल दिन छलनि जे ओ सोचने छलाह। ओ निस्तब्ध-शून्य मे दृष्टि गड़ौने बैसल रहलाह आ लुखिया-'दीदी, आब जाइत छी'-कहि नहूँ नहूँ पैरें घर सँ बाहर भऽ गेलि। बूढ़ी ठाँव, पीढ़ी-पानि सेहो करैत छलीह आ हिनका दूहू गोटेक भावनाक गंभीर अध्ययन सेहो करैत छलीह।

लुखियाक चल गेला पर मड़ौतक तरे सँ कहलथिन—'ठाकुर ई छौंड़ी बड़ खेलाइलि छैक। सटतनि तँ जोंक जकाँ धऽ लेतनि, से देखिहऽथि।'

× × × ×

प्रातः काल बरिआती लोकनि सूतिकऽ उठैत गेलाह तँ गूज-नक ओछाओन पर किछु घृणित वस्तु हेड़ायल छलनि। माँछी भरि इच्छा भनर भनर कऽ रहल छलैक। गोटागोटी नवयुवक मण्डलक सदस्य उपस्थित होमऽ लागल। दलान थहाथहि भरि गेल। बरिआतिओ लोकनि नाक भहुँ टेढ़ करैत।

एक टा छौंड़ा बाजि उठलैक—'ओतेक दूध कतहु मनुक्ख केँ पचैक। देखिऔन वृद्ध-बटुक फूटि गेलाह।'

दोसर कहि उठलैक—'दूध छलैक गाढ़ आ अँतरी पातर'''' दल मारलक पिहकारी। जाहि पर बूढ़ बुढ़ानुस लोक सब सेहो जूटि गेलाह। ज्योतिषीजी पोखरि दिस गेल छलाह, ओहो घूरि कऽ अयलाह। दलान पर ततेक काँउ माँउ होइत छलैक जे ककरो गप्प क्यो ने सुनैक। दलान परक समाचार आङनो पहुँचल—'जे बरिआती दूध पिलकै से छेरि छेरि भरलकैक अछि।' धीया पूताक झुण्ड टूटल कोबर दिस। मारलक केवाड़ मे धक्का। मुन-चुन उठलाह तँ झुण्ड घर मे हूलल–'भाइ रे भाइ, ठाकुरक बरिअ-तिआ छेरलकै रे भाइ'—क नारासँ कोबर घर आन्दोलित भऽ उठल।

सूति कऽ उठैत देरी ई आन्दोलन देखि मुनचुनक चकरी गुम्म रहि गेलनि। खरामक बदला जूता पहिरि सोझे दलान दिस विदा भऽ गेलाह।

गूजन केँ कखनहुँ कऽ अपना पर सँ विश्वास हटिओ जाइनि। ओ मोन पाड़थि'''फल्लाँ ठाम एतेक रावड़ी पीने रही,

फल्लाँ ठाम बहत्तरि टा मालदह आम खैने रही''' '''यार ककाक श्राद्ध मे सेर भरि घी पीबि गेल रही''' ''' कहिओ किछु नहि भेल, आइ ई कोना भेल ?' अपना कनेको आभास नहि भेल ! ओ अपने हाथेँ, ई बूझक लेल जे 'पेट तँ ने फूलल अछि,' पेट के ठोकलनि, की छौंड़ा सब मे सँ क्यो टीपि देलकैक-'वृद्ध बटुकक पेट तँ नङाड़ा भऽ गेलनि अछि, देखहुन अपने ठोकि रहल छथि ।' दोसर कहि उठलनि -ओ वृद्ध बटुक ! 'नङाड़ा लकड़ी सँ बजाओल जाइत छैक ।' तेसर कहलकैक 'मुँह की तकैत छह ! बालचन सँ एक रत्ती लकड़ी मङा दहुन । ताहि पर मारलकैक पिहकारी । ओही पिहकारीक बीच एक भाग सँ ज्योतिषीजी आ एक भाग सँ मुनचुन पहुँचल छलाह ।

पहिने तँ दृश्य देखि कऽ मुनचुनक मोन घृणा सँ भरि गेलनि, मुदा दुर्गन्धिक कोनो संचार नहि देखि हुनका किछु सन्देह भेलनि । ओ ओछौनाक लग मे गेलाह, कनेक झूकि कऽ देखऽ लगलथिन तँ फेर एक टा छौंड़ा कहि उठलनि 'सूँघिए कऽ छोड़ि देबैक की .... ।'

मुनचुन कँ किछु अनुमान भेलनि । ओ ललकि कऽ कहि उठलथिन—'ठट्ठोक सीमा होइत छैक । निश्चय ई किछु आन वस्तु थीक ।'

तखन तँ बेरा बेरी झूकि कऽ सब देखऽ लागल आ सब एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत गेलाह जे वस्तुस्थिति किछु भिन्न अवश्य

अछि। होइत होइत भण्डा फूटल जे वृद्ध बटुक केँ अपदस्थ करबाक हेतु भीजल खऽरि केँ दूध मे घोरि कऽ गूजनक ओछौना पर उभीलि देल गेलनि अछि।

आब तँ बरिआती लोकनिक पारा से डिग्री पर पहुँचि गेलनि। सब अपन मोटरी - चोटरी बन्हलक, उठि कऽ विदा भेल। लीलाधरझा प्रतीकारक बदला मे मुँह छुआओन मात्र कऽ एक कात बेसि रहलाह। लोक सब चलि देलक आ संगहि मुनचुनो विदा भेलाह। ज्योतिषीजी बूझथि जे अड़िआतने जा रहल अछि। मुनचुनक कहल बात पर किछु कऽ विश्वास भेनाइ आरंभ भऽ गेल छलनि। पूर्ण निस्तब्धता छल। गामक सीमा पर पहुँचलाक बाद ज्योतिषीजी मुनचुन केँ कहलथिन— 'आब अहाँ घूरि जाउ।'

मुनचुन उत्तर देलथिन—'सब लोक असभ्ये छैक, एहि ठाम रहब तँ हमर प्राण चल जैत।' तकर बाद ओ बकरीक नेड़ी आ पिठार बला घटना सुना देलथिन।

ज्योतिषीजी केँ मनहि मन विस्मय अवश्य भेलनि, किन्तु मोनक भाव केँ दबबैत विहुँसैत कहलथिन—'सासुर मे एहिना धूर्ता करैत छैक, एहि सब लै नहि अगुताइ। चतुर्थीक प्राते अहाँ केँ विदा कऽ देथि से हम सगूनक भारक संग चिट्ठी लिखि देबनि। अहाँ चल आयब।'

मुनचुन अत्यन्त विह्वल स्वरेँ कहलथिन—'चतुर्थी - ततुर्थी

सब गामे पर हेतैक। हम आब एहि ठाम नहि रहब।'

ज्योतिषीजी कतेक बुझा सुझा कऽ मुनचुन कें घुरौलनि। मुनचुन जँ घूरि कऽ ससुरक दलान पर अयलाह तं सुनलनि—'बरिआती लोकनि रूसि कऽ चल गेलाह तँ हमर की बिगाड़लनि। हमरा तं सोहागोक डाका बाँचि गेल—'लीलाधरझा दलान पर बैसल लोक सं हँसि हँसि कऽ कहि रहल छलथिन।

—:o:—

६

आषाढ़ बीति रहल छलैक। आजुक गुमकी संसार कें उसीनि कऽ सिद्ध कऽ देबाक पाछाँ लागल छल। यद्यपि राति धरि भुँइ-सोहरा पुरिबा पेन्सिलीन जकाँ लाख शीशीक हिसाबें बहैत छल, किन्तु मउहक काल मे मौगी सँ उजबुज करैत कोबर घर, केरा पकैबाक ओहि खाधि सँ कनेको न्यून नहि छल, जाहि मे तुरन्ते क्यौ धूकनि दऽ आयल होइक।

वर कनेञाक जोड़ी केहन ठीकसँ बैसलैक अछि, तकर विश्लेषण स्त्री वर्ग मे भऽ रहल छल। संगहि वरक नख-सिख-निरीक्षण, पुनि एक एक अंगक वैशिष्टिय क वशद-व्याख्या, सेहो चलि रहल छल।

मुनचुन कें रातिए मे खैबाक काल विधिकरी सिखौने छल-थिन—'हे ठाकुर, क्यो आवनि तँ उठि कऽ ठाढ़ होइहऽथिन''' माथ पर सँ तौनी ओढ़ने रहिहऽथिन''''''लवलव कऽ ककरो बातक उत्तर नहि देबऽ लगिहऽथिन''''''टहलै बूलै जाथि तँ

माथ पर पाग रखिहऽथि'''' जनिका गोड़ लागऽ कहिऐनि तनिका गोड़ लगिहऽथिन'''' —आइ काल्हुक हुलबुलिया जमाय सब जकाँ हुल-हुल नहि करिहऽथि'''' ''''हिनका बापक माथ-पाग बड़ ऊँच छैनि आ ससुरो केँ दस टा लोक मे एक टा परतिष्ठा छैनि, तकरा नहि डुबबिहऽथि'''' ''''अइ गामक छौंड़ी सब बड़ अलगी छैक, से आकरा सब सँ लट्टा-पट्टी नहि करिहऽथि'''''' अनेरो कोनो आगि उठा देतनि,' आदि आदि।

कोबर घर मे बेरा बेरी लोक आयल जाइनि आ मुनचुन विधिकरीक आदेशानुसार माथ सँ तौनी ओढ़ने ऊठ-बैस करैत छलाह। एहि गुमकी मे तौनो ओढ़ने व्यायाम कैला सन्ता हुनक स्थिति ओ अपने मुँहे कहितथि तखने बुझितहुँ अथवा अपना मोन मे अपने अनुमान लगाबी तखने। सम्पूर्ण शरीर घाम सँ तीतल छलनि। नित्य सूर्योदय सँ पूर्व स्नान कैनिहार मुनचुन, भरि चतुर्थी स्नानो नहि कऽ सकताह आ ताहि पर सँ एना जँ सिद्दति भेलनि, तँ निश्चय कविवर यात्रीजीक पद दोहराबै पड़तनि—'कोवर मे गमकै छथि दुलहा गोड़ल आम जकाँ।'

एही बीच लुखिया सेहो पहुँचलि। मुनचुन केँ तर बतर देखि जेना ओकरा नहि रहल गेलैक। ओ कतहु सँ बीअनि ताकि अनलक आ खाट लग बैसि, खाटक पौआ पर दहिन बाँहि रोपि ओकरा नचबै लागलि।

मुनचुन चट बाजि उठलाह—'बीअनि होइत अछि समदर्शी', ओ अपना चारूकातक लोक केँ समान लाभ पहुँचबैत अछि, आ पंखा थीक सामन्तवादी, जकरा हुँकैत रहौक से आनन्द मे मग्न आ जे हुँकैत रहौक से घामे बहल जाइत। तेँ हमरा बीअनिए सोहाइत अछि।'

एतेक काल धरि मुनचुन गुम्मी लधने बैसल छलाह, जेना कोनो झाँखुड़ मे बैसल होथि, किन्तु लुखिया केँ देखि जेना निर्जन सँ मनुक्खक बीच आबि गेल होथि। हुनका बिसरि गेलनि जे लब-लब नहि बजबाक चाही। हुनका आश्चर्य भेलनि एहि बात पर जे एतेक गोटे तँ बैसलि छलीहे, मुदा माउगि सब नहि, धुरखुड़ सब, ककरो ई नहि फुरलनि, आ लुक्खी दाइ अबिते एहि आवश्यकताक अनुभव कैलनि। आनक आवश्यकताक अनुभव करबे तँ नागरिकता थीक!

फेर मोन पड़लन्हि विधिकरीक वाक्य--'ई छौंड़ी बड़ खेलाइलि छैक, सटतनि तँ जोंक जकाँ धऽ लेतनि, से देखिहऽथि।' ओकर क्रिया सँ एहि वाक्यक कतहु सामञ्जस्य बैसबे ने करनि। हुनक मोन एही अन्तर्द्वन्द्व मे डूबि गेलनि। चारू भाग नजरि पानि पर पड़ल तेल जकाँ दहाइत रहनि आ लुखियाक लग आबिक डूबि जाइनि।

आन आन लोक तँ आन आन गप्पसप्प मे लागल छल, मुदा बूढ़ो पोतो लुखिया आ मुनचुनक गति-विधि पर तरेतर

नजरि चौकस कैने रहथि। लुखियाक खाट सँ सटि कऽ बैसब, बीअनि आनि क हूँकब, मुनचुनक दृष्टि लुखिया पर आबि अँटकब, ई सब अनसोहाँत लगनि। तेँ मुनचुनक ध्यान अपना दिस आकृष्ट करबाक उद्देश्यें कहि उठलथिन—'ठाकुर मउहकक कौर उठैबा सँ पहिने रूसि रहिहऽथि।'

मुनचुन रुसनमा रहबे करथि। गाम पर अथवा सुलतानगंज मे जहाँ किछु भेल की सनकि उठलहुँ आ चुपचाप फेर पड़ि रहलहुँ। तेँ हिनका भेलनि 'क्यौ हमर रुसबाक अभ्यासक प्रसंग चर्चा कऽ देलक अछि, ताहि पर व्यंग्य करैत छथि।' तेँ मुसकु-राइत पुछलथिन—'के कहलकनि अछि जे हम रुसनमा छी?'

—'से नहि कहैत छिऐनि। सासुर मे मउहकक काल मे लोक रूसि रहैत अछि आ जखन सासु ससुर औंठी, घड़ी, गाय, महीस ई सब गछैत छैक, तखन जाक कौर उठबैत अछि।'

मुनचुन आत्म-गौरवक अनुभव करैत कहलथिन—'बाबूक कमैला सँ जे सेहन्ता नहि पूर भेल से सासुर मे रुसने-फुलने हैत! लाबथु हमर पेटी हम औंठी देखा दैत छिऐनि।'

उपनयन मे हमरा कान मे कुण्डल, कण्ठ मे कण्ठा, बाँहि पर चकुठा, हाथ मे मट्ठा सब किछु सोनेक देने छलाह आ हम सब रातिमक रातिए मे बाहर कऽ फेकि देलिऐनि, तखन ओही बेर लालगंज वला सँ हाथी दाँतक माला आ सोनेक औंठी बाबू मङ्वा देलनि। एखन धरि ओही पर गायत्री जप करैत छी।

हम अरारा ब बू सँ किछु मङबे ने केलिऐनि तखन अनका सँ मङबनि ?'

बूढ़ो पीसी कनेक अप्रतिभ भऽ गेलीह । मउहकक बाद टोल मे वरक चर्चा अनेक रूपें छल······'देखबा सुनबा मे वऽर बड़ सुन्नर······नाक बेश ठाढ़······आँखि बेश पैघ पैघ······आँखिक डिम्हा केहन साफ, उज्जर, दप दप······पुतली केहन कारी भौंर ······कतहु कतहु कमल पत्री रेघा······पपनी केहन घनगर······ कपार बेश चाकर······केश केहन सुन्नर······स्वभाव केहन मधुर······बोली केहन मधु······ठोर केहन पातर······हँसी केहन सोहनगर······एखन पम्हें अबैत छैनि······देह मे संकोच कतेक······पुरान लोक जकाँ दोपटा ओढ़ने केहन संच मंच······ जहाँ क्यौ गेल तँ चट दऽ उठिकऽ ठाढ़ हैब······खाली कनेक धनिकपनीक गौरव······धनीक कोन छथिन, तखन कमौआ बापक पूत अवस्से······से फेर कोनहुना भलमानुषक बेटा······ एहन सीटल काज गाम मे एखन धरि ककरो ने भेलैक अछि ।'

× × × ×

गूजन जकरा सँ लाल धोती माङि कऽ लऽ गेल रहथिन तकरा ई गऽछि कऽ जे लक्ष्मीपुरक विदाइ मे सँ एक खण्ड बदला मे देब, चाहे ओ एहि सँ नीक होइक अथवा अधलाह । मुदा लक्ष्मी-पुरक घटनाक वर्णन जखन कनकपट्टी मे पसरल तँ गूजनक सब प्रत्युत्पन्नमतित्व गाय चरबै चल गेलनि । धोती जखन आपस

करै गेलथिन, तखन जतेक दूर मे दूध खरि लागि गेल छलनि ततेक दूरक रंग उखड़ि गेल रहैक, धोती भटरङ भऽ गेल रहैक। तेँ ओ बिदाइ वला धोतीक माङ कैलथिन। ओकरे सफाइ दैत काल सोझमतिया गूजन ओ खरिवला घटनाक वर्णन सुना देलथिन। संगहि ईहो कहि देलथिन जे ओहि ठाम ड़ा सब कहै जे एतेक दूध कतहु पचैक।'

आब गूजनक हेतु दूध पचबाक चर्चा गारिक विषय थीक। तेँ जे सोझाँ मे चर्चा करैत छैनि तकरा गरिअबैत छथिन आ अरबद्धि कै छौंड़ा सब कचकचबैत छैनि। आब ओ लोकक खेलौनिञा भेल छथि।

ज्योतिषीजी तँ ततेक त्रुब्ध छलाह जे आगाँ की करक चाही तकर निर्धारण अपन बुद्धि कइऐ ने सकनि। ज्योतिषीजी कें जतबे त्रोभ लक्ष्मीपुरक लोकक क्रिया पर छलनि ततबे त्रोभ बरिआती लोकनिक तुनुकि कऽ बिदा हैबा पर। सब गोटे जखन उठि कै बिदा भऽ गेलथिन, तखन लीलाधर झाक कर्त्तव्य छलनि जे त्रमा मङ्गितथिन, किन्तु से ओ तेना भऽ नहि कहलथिन जेना कहबाक चाहिऐनि। तखन यैह कोना कहितथिन जे शान्त होइत जाउ ? तेँ ईहा गौआँ लोकनिक संग देलथिन।

× × × ×

आब सगुनक भार पठैबाक प्रश्न पर विचारक संघर्ष आरंभ भेल। कतेकक मत जे एहि प्रकारक धर्कटक ओहि ठाम अपेक्षा

रखनहुं कोन फल ? कतेकक मत जे आगाँ भऽ कऽ अपने झगड़ा ठानब तँ अपने घट्टी मे रहब, जतेक जे गछने छथि से नहि देताह। कतेकक मत जे विधि भरिक सामग्री अवश्य पठा देलजाय, कारण जे कनेआक विवाह तँ दोहरा कऽ नहि हेतैक।

मुनचुनक माइक इच्छा जे मुनचुनक दोसर विवाह अगिले शुद्ध मे करा देल जाइनि आ लीलाधरझा जे 'भेल विआह मोर करबह की' सोचि रहल छथि से डेबथु अपन बेटी केँ। पाँचे वर्ष मे बूझि जैथिन।

एहि समस्त संघर्षक बीच ज्योतिषीजी एहि निष्कर्ष पर पहुँच-लाह जे सगूनक भार खूब ठाठ-बाट सँ साँठल जाय जे समाज केँ बूझि पड़ैक आ सोड़हमे दिन द्विरागमन कराय अपन पुतोहु केँ अपना घर मे लऽ आनी। आब तँ ओ लीलाधरझाक बेटी नहि, ज्योतिषी श्रीधर्मानन्द ठाकुरक पतोहु भेलीह। लोक-लज्जा हमर, माथ-पाग हमर, इज्जति आबरू हमर, लोक-वेद हमर, ज्योतिषीजी फड़िछा कऽ सभक सोझाँ मे कहलथिन आ सर्वसम्मति सँ निष्कर्ष मान्य भेल।

चतुर्थीक भारक ओरिआन शुरू भऽ गेल। रजवाड़ा सब मे विदाइ मे भेटल रेशमी कपड़ाक कोनो कमी रहबे ने करनि। बीकानेर नरेशक ओहिठाम वला पाँच सौ टाका मूल्यक पटोर, पन्ना नरेशक ओहिठाम वला पाँच अशर्फीक माला आ एमहर

अगड़म बगड़म मे तीन सौ नगद टाका खर्च कऽ ज्योतिषीजी सत्रह गोट भारक ओरियान कैलनि। मरि गामक लोक देखि कऽ मुक्त कण्ठें प्रशंसा करैत गेलथिन जे 'लक्ष्मीपुरवला धनाढ्य रहथु, मुदा मोट खैनिहार, मोट पहिरनिहार लोक सब छथि, एकर मोल ओ सब की बुझथिन।' एक आध गोटे टिपलथिन- 'हमरा जनैत एतेक साँठ उसार मे खर्च करब सब पानि मे फेकब थीक, वानर की जानै गेल आदक स्वाद।' गौओं भार देखि दंग दंग रहि गेलाह, दुसबाक योग्य कोनो वस्तु ककरो देखबा मे नहि अयलनि।

लक्ष्मीपुरक नाम सुनि कऽ भरिआ सब चौंकैत छल, ताहू मे हिनका लोकनिक जे दुर्दशा भेल रहनि से जानि ओकरा सभक देह सिहरैक, मुदा जखन सांनेझा आश्वासन देलथिन, तखन भरिआ सब भार उठौलक। किन्तु लीलाधरझाक ओहि ठाम पहुँचिते ओकरा सभक प्राण उपरे रहि गेलैक। लीलाधरझा भार देखिते 'अग्निश्च वायुश्च' भऽ गेलाह। लगलाह आङन आ दरवज्जा एक करै—'हम छोट बभना छी जे हमरा ओहिठाम ई एकटा गहना फेकि देलनि अछि! छौंटै काल खाली भल-मनसाहते छँटैत जैताह आ लत्ता कपड़ा यैह। बाप पितामहक अमलक ई पटुआक साड़ी पठौलनि अछि, जेना हम सब पटोर देखनहि ने रहिऐक। हम पहिले कन्यादान कैलहुँ अछि, सब ठाम सँ इदागरी विदागरी भेल अछि। दस गामक लोक वेद,

धीया-पूता सब आयल अछि, ककरो वास्तें एक टुकरो कपड़ा लत्ता नहि, सब केहन मुँहठा हैत? दश गाम मे सर-कुटुम्ब छथि, एको टाकऽ भार नहि पठैबनि तँ की कहैत जैताह! एहि फांड़न सं हमरा की हैत? हमरा लोक की कहत?'

एमहर आङन मे स्त्रीगण अँकुरी टेढ़ करै लगलीह। छीया, छीया, दही मे जोड़नो ने देबै अबैत छैक, 'गे मार बाढ़नि कनक पट्टीक मौगी सब कें, केरा मे कनेक चूनो ने लगा भेलैक, गे दाइ, गे दाइ! गौरी पूजाक ओरियान जे घिनाष्टक छैक।' मिला जुला कऽ ज्योतिषीजीक कैल खर्च - वर्च पानि मे चल गेलनि, यशक बदला मे अयशे टा भेलनि।

जखन भरिया चिट्ठी देलकनि तँ से पढ़िते लीलाधरझा सिनु-रिया आम सन मुँह बना लेलनि। कान कुकुअबैत सगूनक भार लऽ गेनिहार भरिआ कें ललकैत कहलथिन—'औ दुःखन खबास! कहि देबनि जे वरक विदाइ कन्याक बापक सुविधा सँ होइत छैक, वरक बापक सुविधा सँ नहि। एखन ठाकुर कें आँखि उठि गेल छैनि, ओ जखन आराम हेतनि आ हमरा सुविधा हैत तखन हम विदा करबनि।'

खबास कहलकनि—'सरकार ई बात तं सोझो मुँहें कहल जा सकैत छलैक, तखन एना ललकि कऽ कहबाक कोन काज? अहाँ अपन कुटुम्ब सँ फड़िछा लेब, हम सब तँ जेहने तावेदार हुनकर तेहने तावेदार अहाँक।'

लीलाधरझा बेटा केँ सोर करैत कहलथिन—'भरिआ सब केँ आध सेर कऽ चाउर सिदहा, पाव भरि कऽ चूड़ा जलखै आ दू आना कऽ पाइ विदाइ दऽ दहक।

भरिआ सब एक दोसरा क मुँह ताकै लगलैक। भरि बाट जे मनसूबा बन्हैत आयल छल—'एहन तीमन, एहन तरकारी, एना आम, एना कटहर खाइत जेब, से मनसूबा टिनही बरतन जकाँ लगले सेरा गेलैक।

सगूनक भारवला भरिआ कहलकनि—'सगूनक भरिआ केँ तं सरकार धोती होइत छैक।'

चट दऽ उत्तर देलथिन—'पहिने जाहि पोन पर लाल धोती पहिरब तकरा धोबिआ घाट सँ धोआ आनू। 'गाम मे नोते ने आ बेलाही नोत' मालिक केँ धोती पहिरबाक सेहन्ता रहिए गेलनि आ ई धोती पहिरिकऽ जैताह!'

× × ×

ओहि प्रकारक गर्मी मे विवाहक तेसरे दिन मुनचुनक आँखि उठलनि से एहेन इस्स सँ बिस्स देखल नहि। चतुर्थी दिन कलशक जल सँ स्नान नहि करा कऽ मात्र मार्जन भेलनि। जीवन मे-जहिआ सँ ज्ञान भेलनि—'कहिओ आँखि उठल होइनि से स्मरण नहि होइत छलनि।'

एक टा चिट्ठी मुनचुनोक नामे छलनि। पढ़ताह से आँखि ताकिए ने होइनि। कछमछा कऽ रहि गेलाह। गामक चिट्ठी मे

की कहाँ लिखल हैत। तेँ सार सँ पढ़ायब अभीष्ट नहि भेलनि।

चतुर्थीक राति मे शिवमन्दिरक ओहि मूर्ति केँ... गोरि नारि .... छुरिया नाक.............. कारी भौर केश......पैघ पैघ घनगर पपनीवला आँखि.... उछतगर कपार... बिजुरी सन देह... पातरि-छीतरि... सोटलि - साटलि... भरि आँखि देखबाक बेर मे मोन अहुछिआ काटि कऽ रहि गेलनि।

आगाँ कऽ चिट्ठी दैत आँखि मुननहि कहलथिन—हमर ई दुर्भाग्य जे कतेक दिन सँ फेर देखबाक लालसा रखनहुँ आइ हम नहि देखि सकैत छी। मुँह बजाओनक विधि मे पहिने हमर ई काजे कऽ दिअऽ। स्त्री तँ अर्द्धांगिनी कहबैत छैक। दूनू गोटा केँ मिलाकऽ तँ चारि आँखि अछि, ताहि मे दुइए टा ने उठल अछि, दू टा तँ ठीके अछि। पढ़िऔक तँ चिट्ठी मे बाबूजी की लिखलनि अछि।

छाया एहि अप्रत्याशित घटना सँ परम असमंजस मे पड़ि गेलि। आँखि हिनक बन्द देखि, भरि आँखि हिनका देखलक, मुदा—'जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।'

किछु क्षणक स्तब्धता केँ भंग करैत मुनचुन फेर निवेदनक स्वर मे कहलथिन—'अनको सँ पढ़ा सकैत छलहुँ, किन्तु बाबूजीक चिट्ठी थीक, तेँ अपने पढ़ब संगत बूझि पड़ल। एहि ठामक व्यवहार सँ हुनका लोकनि केँ केहन क्षोभ भेल हेतनि से कल्पना कऽ लिअऽ। तेँ अनका सँ चिट्ठी पढ़ा लेब उचित नहि

बुझलहुँ आ अहाँ तँ आब अपन छी।

—'से की हम बंगालिन छी जे चिट्ठी पत्री लिखब पढ़ब ?'

—'किएक बंगालिने सब लिखैत पढ़ैत छैक ? अपना ओहि ठामक लोक लिखैत पढ़ैत नहि छैक ?' मुनचुनक मोन मे बिहाड़ि उठि गेलनि,–'अहाँ कें लिखऽ पढ़ऽ नहि अबैत अछि ?' मुनचुन आतुर स्वर मे पुछलथिन।

—'हमरा गाम मे मौगी सब नहि लिखैत छैक। ओकरा की मास्टरनी बनबाक छैक की डाकदरनी ?'

मुनचुन आरो उत्सुकता सँ हाथ लऽ कऽ हंसोथि कऽ गट्टा पकड़ैत कहलथिन—'सत्ते कहैत छी ?'

—'सब सँ पहिल बात जे जिनगी मे कहलहुँ से फूसि कोना कऽ कहितहुँ।'

ई उत्तर सूनि मुनचुन आकाश सँ खसलाह। हुनक कल्पना क महल क्षण मे भूमिसात् भऽ गेलनि। अतीतक आतंक हुनक सम्पूर्ण चेतना कें चिड़रो जकाँ मचोड़ि कऽ राखि देबै चाहनि। एक दीर्घ उच्छ्वास लैत ओ गेडुआ पर चितंगे खसि पड़लाह आ खाटक कोन पर माँझ घरक खाम्ह लागि छाया ओठङि कऽ बैसलि से बैसलिए रहि गेलि। कखन दूनू गोटा कें निन्न भेलनि से क्यो नहि बुझलथिन।

अशिक्षित समाज.... अशिक्षिता कन्या.......रुचि मे, विचार मे.... शुचि मे, आचार मे.... शील मे, स्वभाव मे.... प्रवृत्ति मे,

निवृत्ति मे.... आहार मे, व्यवहार मे, बूझब मे सूझब मे.... सब मे अन्तर, सब मे भिन्नता... अशान्त जीवन.... उद्विग्न जीवन... घृणित जीवन... नारकीय जीवन........।

स्वप्न मे देखलनि, की जागल मे सोचलनि, से मोन नहि पड़नि, किन्तु प्रातः काल सँ निन्न टुटलनि तँ ओह विचार-तन्तु मोन मे ओझरायल भेटलनि। मोन वितृष्णा सँ भरि गेलनि। पैर मे गुज दऽ लगलनि तँ हँसोथि कऽ देखलथिन। छाया सुतलिए छलि। उठबैत कहलथिन—'जावत धरि अहाँ केँ अन्तरक ज्ञान नहि भऽ जाय तावत धरि अहाँक मुँह नहि देखी, प्रायः ताही हेतु हमर आँखि भगवान बन्द कऽ देलनि अछि।'

उत्तरक बिनु प्रतीक्षा कैनहि खराम पहीरि टकटोरैत दलान दिस विदा भऽ गेलाह। छाया अलसायल आँखिएँ तकैत रहि गेलनि।

दलान पर लीलाधरझा सूति उठिकऽ तमाकू चुना रहल छलाह। मुनचुन अपना संग जे एक टा छौंड़ा खबासी मे गेल रहनि तकरा उठबैत कहलथिन—'चल चुल्हबा, जल्दी पोखरि दिस सँ भऽ आउ। आइ एखने गाम चलब।'

'गाम चलब?' लीलाधरझा प्रश्न कैलथिन।

—'हँऽ हमर आँखि एहि ठाम नहि छूटत। हम आइ गाम चल जैब।'

—'की बुझैत छिऐक जे रेलवे स्टेशनक मुसाफिर खाना मे छी,

जखन मोन हैत उठि कऽ चलि देब ?'

—'जहलो मे त नहिञे छी जे जखन समय पूरत तखन छूटब।'

—'सासुर जहलो सँ बत्तर होइत छैक आ स्वर्गों सँ बढ़ि कऽ। अपन लूरि मुँह चाही।'

—'हम ने ककरो कोनो अपराध कैलिऐक अछि जे जहल मे रही, ने एखन ई संसार छोड़ि कऽ स्वर्ग जैबाक अभिलाषा अछि। हम अपन जन्मभूमिए मे रहै चाहैत छी। "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"।'

—'हम ज्योतिषीजी नहि ने छी जे जखन मुँह सँ जैह खसत सैह पूर करै लागब। हमरा जखन सुविधा हैत तखन बिदा करब।'

—'हम विदाइ माङी तखन ने ? हम सोझे चल जाय चाहैत छी। से आइ हम चलले जैब।'

जमायक ई गप्प सूनि लीलाधर झा नवका बझाओल हाथी जकाँ हुमड़ि उठलाह—'अहाँ सबठाम एक्के रंग बुझैत छिऐक, से भ्रम दूर करू। हमरा लग मे बतहपनी नहि चलत। हम केहन केहन बताह कें हड्डी मे ठोकि कऽ सोझ कैने छी।'

यद्यपि ससुर जमायक बीच एना गप्प नहि होइत छैक, किन्तु एहि प्रसंग लीलाधरझा अपना कें बहुत प्रगतिशील बुझैत छलाह। एक तँ हुनक स्वरे टाँट छलनि, साधारण रूपें बाजथि

तँ बूझि पड़ैक जे ललकि रहल छथि। तखन, ललकि कऽ जँ बजैत छल हैताह तँ केहन बूझि पड़ैत छल हेतैक, से मोने मोन बूझि जाइ जाउ।

एकरा मर्यादाक उल्लंघन बूझी अथवा ककरो उद्दण्डता, एहि हेतु मुनचुन कें दोषी बूझिऐनि अथवा लीलाधरझा कें, किन्तु दोष एतबा अवश्य भेलैक। ससुरक मुहें हऽड़ीक नाम सूनि मुनचुन तिलमिला उठलाह।

एक तँ माय बापक कतेक देबें सेबें जीवैत एक मात्र बेटा, दोसर संस्कारक तीव्र रहलाक कारणें एहि प्रकारक शासन सँ मुनचुन कें कहिओ भेट नहि। ओना ओ मातापिताक संस्कार एवं पारिवारिक वातावरणक कारणें पूर्ण अनुशासित छलाह, किन्तु ससुरक ललकब सूनि उखड़ि गेलाह–'हमरा पर अनुशासन करबाक भार प्रायः हमर पिता अपने कें नहि देने हैताह। हम स्वभाव सँ लाचार छी। आइ धरि एना डाँटि कऽ हमरा क्यो ने कहैत रहल अछि। हम निवेदन करब जे एहि स्वर मे हमरा संग नहि बाजल जाय।'

लीलाधरझा कें एहि पर जे कनेक क्रोध भेलनि से हुनक मुखाकृतिए देखने बूझल जा सकैत छल। आब एहि क्रोधक प्रतिक्रिया कोन रूपें व्यक्त कैल जाय से ओ असमंजस मे पड़ि गेलाह। एना मुँह लागल हुनको क्यो उत्तर नहि देने छलनि। जमायक रुखि देखि कऽ सहमऽ पड़लनि। तें हुनक मुखाकृति कोइल–

पद्दू आम सन भऽ गेलनि। ओहि ठाम सं उठलाह आ घोड़ी पकड़ि कऽ कसलनि। आङन मे स्त्री कें एकान्त मे बजाय की कहाँ कहलथिन आ गाम सँ चलि देलनि।

मुनचुन गेलाह पोखरि दिस, तावत ई निकसि गेल छलाह। घुरला पर मुनचुन आङन जाय अपन वस्तु जातक सङोर करै लगलाह। स्त्रीगण मे हलचल मचल। बूढ़ी पीसी पहुँचलीह आ बुझबै लगलथिन—'ससुर गाम सँ कतहु गेलथिन अछि। बिनु हुनका पुछने कोना जइथिन...... पहिल यात्रा मे लोक सीमा नहि टपैत छैक.... आँखि से उठि गेल छैनि... आ संसार मे एहन कतहु ने होइत छैक जे बिआह कऽ वऽर हाथ डोलबैत अपन गाम चल जाइत छैक........ हिनकर बाप तँ सोड़हे दिनक भीतर द्विरागमनो कऽ देबाक हेतु चिट्ठी देलथिन अछि।' जँ ताहि सभक मादे किछु बूझऽ सूझऽ गेल होथिन... एना बताह जकाँ लोक नहि करैत अछि...........।'

मुनचुन एक ठाम बसहा जकाँ मूड़ी डोलबैत रहलाह 'नहि, हम आब एहि ठाम किन्नहुँ ने रहि सकैत छी।'

सासु, सारि, सरहोजि, टोलक लोक सब कहैत कहैत थाकि गेलनि, मुदा मुनचुन कें 'कतबो डोलाउ हमरा कटिए धार' वला बात। सब थाकि कऽ जखन हारि गेल तावत लुक्खी दाइ कोम्हरो सँ पहुँचलि।

मुनचुनक लाल आँखि, ओकरा रुमाल सँ बारंबार पोछैत,

कखनहुँ कऽ मिलमिला कऽ तकैत, धीआ पूता, मौगी मनुसा सँ घर भरल। हिनक सार सतीश, से एक भाग अप्रतिभ भेल ठाढ़, चुल्हबा अपन ओछाओन बिछाओनक मोटा बन्हबा मे लागल।

लुखिया अबिते पुछलकनि—'मर, कोन तमाशा लागल छैक? ठाकुर, की भेलनि अछि जे एना मोन मे उचाट लागि गेलनि, से कहथु—'

—'उचाटक कारण एहन अछि जकर घोषणा हम एहि ठाम नहि कऽ सकैत छी।'

—कतऽ कहि सकैत छथि?

—अहाँ केँ कहि सकैत छथि।

—'बेस तँ सुनथु, जमाय आ शालग्राम एक होइत छथिन, अपूज नहि जाइत छथिन। ई चलले जइहथि, खाली दू लोटा पानि ढारि, मुँह ऐँठा लेथु, हमरा कहिओ दिहथि आ तखन जँ विचार होइनि जे चल्ले जाइ, तँ चल जइहथि।'

मुनचुन केँ लुक्खी दाइक प्रस्ताव स्वीकार भेलनि। मोन मे जे औनाइत छलनि तकरा व्यक्त करबाक आतुरता प्रस्ताव स्वीकार करबाक हेतु बाध्य कऽ देलकनि।

स्त्रीगण मे बूढ़ी पीसीक व्याख्या सँ ई अर्थ लगाओल गेल—'एतेक लोक कहलथिन तकर कोनो मोजर नहि आ ई छौंड़ी लुखिया सब सँ महान्, सब सँ गिरथाइनि?'

लुक्खी दाइ सोचलनि जे एखन मोन गरमायल छैनि, स्नानक बाद गप्प सप्प मे जखन ठण्ढा जैतनि की लगले मानि जैताह।

चुल्हबा मोटा फोलि धोती बाहर कैलकनि, सतीश तेल आनि देलथिन, मुनचुन देह हाथ पोछै गेलाह आ लुक्खीदाइ गौरी पूजाक ओरिआन कऽ छाया कें तैआर कैलक। गीत भेल, नाद भेल, गौरीक पूजा भेल, जलखइ पहुँचलनि तँ लुक्खीदाइ बीअनि लऽ बैसलि। बूढ़ी पीसी दुआरि पर ठाढ़ि छलीह। लुखिया पुछलकनि—'आब कहथु ठाकुर!'

मुनचुन उनटि कऽ तकलनि तँ बूढ़ी कें ठाढ़ि देखलथिन। कहलथिन—'जखन एकसर रहतीह तखन कहबनि।'

लुखिया बूढ़ी पीसी सँ कहलकनि—'दीदी, अहाँ तावत आङनक काज करू गऽ।'

—'हँऽ है दाइ, बूढ़ पुरान एहिना सबकेँ जहर होइत छैक, आ ई नवारी सब दिन रहितो ने छैक। कथी लै आँखि मे गड़ैत छिअह, हे लैह जाइत छी। बिधिकरी होअऽकाल किएक ने बजलीह? तोरे बना दितिअह।'

बूढ़ी पीसी मुँह कान चमकबैत चल गेलीह। तखन मुनचुन पुछलथिन—लुक्खीदाइ, अहाँ कें लिखऽ पढ़ऽ अबैत अछि?

—'आब थोड़ेक कऽ टऽ कऽ......। किऐक?'

—'अहाँक बहिनपा कें अबैत छैनि!'

—'से किऐक?'

—'देखू हमरा पिता सँ कहल गेल छलनि जे कन्या अपर पास अछि आ हिनका अऽ पऽ रऽ सेहो नहि अबैत छैनि। कहू हमरा संग कतेक पैघ विश्वासघात कैल गेल? हमर जीवन केहन नारकीय हैत तकर कल्पना करैत हमरा शरीरक नाड़ी नाड़ी मे विजली छूबि दैत अछि। आब एको क्षण एहिठाम रहब हमरा सह्य नहि अछि'

—'सुनथु, ई गाम एखन धरि गेल गुजरल छैक। जाहि ठाम बेटो कें पढ़ायब ततेक आवश्यक नहि बूझल जाइत छैक ताहि ठाम बेटी कें पढ़बाक कोन भरोस? मुदा हम ई कहैत छिऐनि जे सम्बन्ध भऽ गेलनि तकरा आब ई तोड़ि सकैत छथिन? जँ हमर बहिनपा कोनो विश्वासघात कैने होथिन तँ तनिका सँ बदला लेबाक जेना इच्छा होइनि से लऽ लिहऽथिन, मुदा 'खेत खाय महींस आ मुँह चूरल जाय पड़रूक' से हिनके कोना उचित बूझि पड़ैत छैनि? हम तँ सब लोकक आँखि बचा कऽ कोनहुँना आब अक्षर लिखलहुँ अछि। बहिनपो कें नहि कहने छिऐक। एहि ठामक लोक खिधांस करैत छैक जे लोक की बंगालिन थीक जे लिखत पढ़त। तहन यैह कहथु जे हमर बहिनपाक एहि मे कोन दोष जे ओकरा बनिसार मे देबै चाहैत छथिन?'

मुनचुन स्तब्ध भेल सब बात सुनलनि आ गंभीर विचार मे पड़ि गेलाह। लुक्खीदाइ फेर कहलथिन—'ई लिखल पढ़ल छथि,

आब यैह चेष्टा करथु जे बहिनपा केँ पढ़ा देथुन। हम हिनका वचन दैत छिऐनि जे जतबा हम जनैत छी ततबा बहिनपो केँ सिखा देबैक। ताहि सँ बेसी जिनगी भरि तँ हिनका सङे रहतनि, जेहन चाहताह तेहन बना लेताह।'

मुनचुन केँ सब बात जुगलतगर लगलनि। किन्तु एक टा आशंका भेलनि जे वंश परम्परा जेहन देखि रहल छिऐक ताहि अनुसारेँ स्वभाव तँ उत्कट हैबे करतनि। पूछि बैसलथिन—'अहीं सन ओहो बुधियारि होथि तखन ने?'

लुक्खीदाइ तँ कृतार्थ भऽ गेलि। मनहिमन सोचलक-हमरा प्रति ठाकुरक केहन सिनेह, केहन विश्वास छैनि। एक बेर ध्यान अपना जीवन दिस गेलैक ... एक दिस मुनचुन केँ देखलक ... सौम्य मूर्ति, नम्रताक अवतार, मधुसन मधुर बोल, नेनुसन कोमल अग, पैघ पैघ आँखि, ठाढ़ नाक, पातर ठोर, अधरक मुस्कान मे अपूर्व मादकता.... फेर अपन स्वामी पर ध्यान गेलैक—'स्थूल शरीर.... तिलकल केश... फूलल गाल... लटकल धोधि.... भीतर जरैत वासनाक निधू आगि... भुम्हुर आगि.... बज्रसन पंजा...' ओह जीवन एक विडम्बना.... नारी जीवन .. पराधीन जीवन.... एक शून्यता समस्त जीवन केँ आक्रांत करैत देखि पड़लैक।

मुनचुन पनपिआइ कऽ हाथ धो चुकल छलाह। पान सुपारीक सराइ आगाँ मे आनि कऽ रखैत कहलथिन—'तावत ई

आराम करथु आ हम बहिनपा सँ गप्प करै जाइत छी।

लुक्खीदाइ चल गेलि आ मुनचुन तौनी ओढ़ि खाट पर पड़ि रहलाह। हुनक अन्तर मे रंग विरंगक भावना सब उमड़ै लगलनि। जीवन मे जैह चाहैत छलहुँ सैह नहि भेल। कखनहुँ कऽ माय पर क्षोभ होइनि तँ कखनहुँ कऽ बाप पर आ कखनहुँ कऽ अपना पर कोध होइनि तँ कखनहुँ कऽ ससुर पर।

माय पर क्षोभ होइनि जे विवाह सन सम्बध मे जतेक गम्भीरता सँ सोचबाक चाही से नहि सोचलक, तेना कानै लागलि जे हमर सरस्वतीए मन्द पड़ि गेलीह, ने ओ ओना कनैत ने हमरा फाँस लगैत। बाप पर क्षोभ एहि हेतु भेलनि जे आजुक युग मे लोक केँ एहन सोझ-मतिया नहि रहबाक चाही। लगले सभक बात पर विश्वास कऽ लेब आ पाछाँ पछताइत रहब ताहि सँ की लाभ? अपना पर क्रोध होइनि एहि हेतु जे शिव-मन्दिर मे देखलाक कारणेँ मोनक संकल्प मे कनेक मनेक दुर्बलता आबि जाइत छल आ ससुर पर क्रोध होइनि एहि हेतु जे जखन कन्या अशिक्षिता छलनि तखन तेहने कोनो धनीकक बेटा सँ बेटीक विवाह करवितथि जे सोन सँ बेटी केँ छारने रहितनि आ बड़का टा कुंजीक झाबा लटकाय दितनि जे गिर-हतनी बनलि आङन मे कूदलि फिरितऽथिन।

आ सब सँ अन्त मे एखनहुँ एक टा दुर्बलता घेड़ि लैनि जे आन ठाम जँ विवाह होइत तँ लुक्खीदाइ सँ परिचय कोना

Scanned by CamScanner

होइत ? फेर लुक्खीदाइक ओ स्वरूप—सोड़ह सत्रह वयस.... धनुषाकार घनगर भहुँ.... छुरिया नाक... पीठ पर सोहरैत दू टा जुट्टी.... काजर कैल आँखि मे अद्भुत करुणाक भाव हिल-कोर मारैत... स्मृति-पट पर नाचै लगलनि।

किछु काल एही भावना मे डूबल रहलाह। फेर जेना कोनो संस्कारवश हृदय मे धक्का लगलनि—किन्तु लुक्खीदाइ सँ परिचय भेला पर हमरा समस्याक समाधान कोन भेटल ? लुक्खीदाइ क प्रति हमरा हृदय मे आकर्षण किऐक ? रूपक आकर्षण ? शीलक आकर्षण ?... कोनो आकर्षण हो, एहि भावना कें पवित्र भावना नहि कहल जा सकैत अछि। तखन की, एक असहाय, अपना जीवन तँ असन्तुष्ट नारीक असन्तोष सँ अनुचित लाभ उठैबाक आकर्षण ? ओह !!! धिक्कार हमरा, धिक्कार हमर कलुषित भावना कें।

लुक्खीदाइ उठलि जे छाया सँ सब हाल बूझी, किन्तु ओकरो मोन मे द्वन्द्व आरम्भ भऽ गेल छलैक—'बहिनपाक प्रति ठाकुरक चित्त एक दम उदास छैनि.... हमरा हेतु तँ ऐह उदासी वरदान सिद्ध भऽ सकैत अछि... बहिनपा सँ ओ जतेक दूर हटल जैताह हमरा सँ ततेक समीप.... किन्तु... किन्तु समीप अयला सँ हमरा की लाभ ? ठाकुरक रूप - माधुरी हमरा अन्तर कें एना किएक हिलोरि दैत अछि, हम किएक आकुलताक अनुभव करैत छी.... हुनका सँ फराक रहि सुन्न किएक बूझि पड़ैत

अछि.... की ठाकुर हमरा स्वीकार करताह.... यदि स्वीकारो करताह तँ समाज स्वीकार करत ? किन्नहुँ ने.... किन्नहुँ ने, तखन ? तखन, संसार एतेक टा छैक, हमरा लोकनिक निर्वाह नहि हैत ? यदि एक बूढ़क गर्दनि मे एक अनाथ कन्या केँ घण्टी जकाँ बान्हि देब अन्याय नहि, तखन एक बूढ़क तिरस्कार कऽ, परित्याग कऽ मनोभिलषित पुरुषक संग नवीन सम्बन्ध अन्याय ? कथमपि नहि। एखन बहिनपा सँ गप्प नहिएँ करब नीक, ... मुदा जँ फेर आइ हमरा पूछथि, की बहिनपे केँ पुछथिन, तखन तँ हमरा प्रति अविश्वास भऽ जैतनि। कम सँ कम रातुक घटनाक वर्णन बहिनपाक मुहेँ सुनिए लेब आवश्यक। ओ साँझे छायाक लग चल गेलि आ बुलबाक लाथेँ आङन सँ दूनू बहिनपा विषहराक थान दिस फुलबाड़ी मे चल आइलि।

मुनचुन रहि गेलाह, दिन पर दिन बीतै लागल, बूढ़ी पीसी जहर पीने रहथि—'सभक नाक ने कटि गेल ..आजुक छौंड़ी से हुनक गुरूआइनि ओकर कथा पर रहलाह आ हमरा लोकनिक मोल मडुआक दोबड़ ? एही द्वारेँ आब बूढ़ी पीसीक ध्यान ठाकुर दिस सँ एकदम हटि गेलनि। मुनचुनक आँखि गर्मीक कारणेँ उठल छलनि आ लोक जलक स्पर्शो नहि करै दैत छलनि। परिणामतः आँखि ऊन सँ दून होइत गेलनि, अपनो परिचर्या नीक जकाँ करताह से ताहि योग्य नहि रहि गेलाह।

लुक्खी दाइ दिन राति परिचर्या मे लागलि रहैत छलनि।

बीस दिनुक समय एहिना तऽरे तऽर बीति गेलनि। ई दूनू बहिनपा पंचमी पूजक हेतु संगहि सब दिन जाही जूही तोड़ै, संगहि रहै। खाइत खेलाइत कोना दिन बितलैक से नहि बुझल-कैक। खाली मुनचुनक लेखेँ एहि बीसो दिन सूर्योदय नहि भेलनि, किन्तु लुक्खी दाइक परिचर्या हिनका पीड़ा पर मलहमक काज करैत रहलनि।

मधुश्रावणी सँ एक दिन पहिने लीलाधर झा घूमैत घामैत गाम पहुँचलाह तँ कनफुसकी करैत बहिन (बूढ़ी पीसी) की कहाँ कहलथिन। ओ सोझे कोबर घरक बाहर ठाढ़ भऽ जतेक जे फुरलनि से बजैत गेलाह–'हम की जानय गेलहुँ जे ज्योतिषीओ पण्डितक बेटा एहन उडण्ड होइत छैक जे तीनू कुलक नाक कटबैत छैक। हम तँ सोन कीनै गेलहुँ, से आँखि पर तेहन अनहर जाली लागल छल जे सोनक दाम मे भ्रम सँ रोल्ड गोल्ड कीनि अनलहुँ। हमर दोष नहि, दोष ई छायाक कपारक। बेस, जिनगी मे ई लीलाधर कतेक केँ सम साउङि कैलनि अछि, केहन केहन लण्ठ, बदमाश, लुच्चा केँ ठीक करैत देरी लगबे ने कैल हमरा, आ एकटा ज्योतिषी पण्डित केँ सोझ करब कोन कठिन अछि ?'

मुनचुन कोबर मे गुम्हड़थि, मुदा लुक्खी दाइ हुनका मुँह पर हाथ देने कहनि 'ठाकुर, हिनका हमरे सप्पत थिकनि, हमरे कोंढ़

करेज खाथि जे एक शब्द बाजथि। काकाक स्वभावे एहने छनि। ओ अपन बाजि भूकि लेथिन चल जइथिन।'

मुनचून कें एहि गर्जनक किछु अर्थे ने लगनि। किन्तु लुक्खी दाइक सप्पत पर ई चुप्पे रहलाह। मधुश्रावणीक विधि दोसर दिन एकदम भिनसरे छलैक। कनेब्राक विधि नहि मारल जाइक तें विधि मात्र पुरैबाक हेतु साँझ मे दू गोट भार गाम सँ पहुँचलनि। संगहि एकटा चिट्ठी छलनि। सगूनक भार पहुँचा कऽ गेल भरियाक मुँहें लक्ष्मीपुरक वर्णन सुनि जे ज्योतिषीजीक हृदय पर चोट लगलनि से वैह जनैत हैताह। ओही आक्रोशक कारणें पंचमी मे एक टा भार पठौने छलथिन, मुदा ओहि दिन लीलाधर झा गाम मे नहि छलाह। मधुश्रावणीओ मे विधिं मात्रे पुरौने छलथिन।

मधुश्रावणी दिन कन्या कें सासुरक अन्न खायब अनिवार्य रहैत छैक, तें एक मुट्ठी अँकुरी छायाक माय बाहर कऽ लेलथिन मे तँ दूनू भार लीलाधरझा फेरि दितऽथिन।

दूनू भरिया कें गरिअबैत कहलथिन—'उठा भार हमरा ओहि ठाम सँ, चिन्हलहुँ हम भलमानुस कें... ....।'

भरिया कहलकनि—'सरकार, अपन भरिया कऽ कऽ भार पठा दिऔनि, हम सब भार फेरि कऽ कोना लऽ जैब।'

लीलाधरझा एक घड़मेच्चा मारैत कहलथिन—'बड़ सरकारक सार बनलाह अछि। जेना अनलें तेना लऽ जो।'

भरिया चिट्ठी बाहर कऽ दैत कहलकनि—'ई मुनचुन बौआक चिट्ठी थिकनि ... ।' लीलाधरझा चिट्ठी हाथ सँ लऽ चिर्री चिर्री कऽ फाड़ि कऽ फेकि देलथिन। भरिया अपन भार उठौलक आ चलि देलक।

लुक्खी दाइक द्वारेँ मुनचुन क्रोध केँ दबने तँ रहलाह, मुदा क्रोधक अतिशयता मे अन्त मे मनुष्य कानऽ लगैत अछि, खास कऽ विवश भऽ जँ क्रोध केँ पचबै पड़ैक तखन। से मुनचुन अपन विवशता सँ ततबा करुणार्द्र चित्त भऽ गेल छलाह जे दूनू आँखि सँ बसोधारा नोर बहऽ लगलनि। लगलाह फफकि फफकि कऽ कानऽ। धीरे धीरे लोक करमान लागि गेल। लोकक हूलि देखि लुखिया ओहि ठाम सँ चलि देलक। ओकर अनुपस्थितिक लोक चर्चा कैलकैक तँ बूढ़ी पीसी टीप देलथिन–'ओकरा मनुगन्ह लगैत छैक, ओ एखन मनुक्खक आगम देखि कोना रहैत ?' बूढ़ी पीसीक टिप्पणी पर एक मौगी दोसर दिस तकलक। आँखिए आँखिए ककरा संग ककरा कोन गप्प भेलैक से जानै ओ सब, मुदा थोड़ेक काल मे एकाएक कऽ सब चल गेलि। कोबरक घर खाली होइत देखि, मुनचुन हँथोड़िया दैत उठि कऽ केवाड़क बिलैया बन्द कऽ लेलनि।

राति मे भानस भेल पड़ल रहि गेल। लाख चेष्टा कैल गेल मुनचुन बिलैया नहि फोललथिन। जकथक जे जहिना छल से तहिना रहि गेल। धीरे धीरे आङन निस्तब्ध भऽ गेल।

दू बजैत राति मे लघुशंका करबाक हेतु बाहर भेलाह। जखन घूरि कऽ अयलाह तँ खाट पर अबिते ककरो शरीरक स्पर्श भेलनि। चौंकि उठलाह। सूनि पड़लनि—'ठाकुर हम छी'। —'लुक्खीदाइ। एतेक राति कऽ किएक ?'

—'ठाकुर, सेहन्ता होइत अछि जे पहिल दिन हिनक आँखि जेहन देखने रहिऐनि तेहन आँखि फेर कहिया देखबनि। कनेक्ना तँ एक रंगक भेटबौ कैलनि, मुदा हिनका सन सोन बऽरक हेतु ई घर नहि नीक भेलनि। साँझ खन हिनका कनैत देखि हमर कोँढ़ फाटँ लागल तेँ हम पड़ा गेलिऐन। हिनका मोन मे कोनो आन भावना तँ ने भेलनि ?

—'अहाँक प्रति आन भावना कोनो पाथरे सन हृदय बाला केँ भऽ सकैत छैक। हमरा हृदय मे अहाँक हेतु कोन स्थान अछि से हमही जनैत छी। अहाँक ऋण सँ कोना उबरब ?'

—'हिनका तकर चिन्ता छैनि आ हमरा होइत अछि जे जखन ई चल जैताह तखन हम कोना जीबैत रहब।' एतबा कहैत लुक्खी दाइक हृदय भरि अयलैक, आो अपन मूड़ी मुन-चुनक छाती मे गाड़ि सुसुकि सुसुकि कऽ कानै लागलि।

मुनचुनोक हृदय भरि आयल छलनि। एक मोन होइनि जे पाँज मे समटि हमहुँ भरि इच्छा कानि ली। किन्तु फेर सूतल चेतना जागि गेलनि—

बाल्य अवस्था सँ जे दृढ़ संस्कार

तकर न हो परिवर्तन वा परिहार (एकावली परिणय)

मुनचुन सम्हरलाह आ आश्वासन दैत कहलथिन –लुक्खी दाइ, राम सीता केँ आजन्म वनवास दऽ देलथिन जे प्राणो सँ प्रिय रहथिन। जनिका संग चौदह वर्ष रने वने आ किछु दिन अयोध्या सन राज प्रासाद मे दुख सुख भोगैत रहलीह। से सीता यदि ओहि अनन्त वियोग केँ सहबे कैलनि, तखन हमरा अहाँक भेट तँ समय समय पर होइते रहत। अहूँ तँ ओही सीताक भूमि मिथिला मे जन्म लेलहुँ अछि। अहाँ अपन आदर्शक रक्षा किऐक ने कऽ सकैत छी ? उठू, चैतन्य करू, हमरा बूझि पड़ैत अछि जे आङन दिस केवाड़ लग क्यौ ठाढ़ अछि।'

लुक्खी सचेत होइत उठलि आ मुनचुनक दूनू हाथ केँ पकड़ि चूमि कऽ सोझे चल गेलि। मुनचुनो केवाड़ी बन्द कऽ भारी मोने खाट पर आबि पड़ि रहलाह।

भिनसर जँ सूति कऽ उठलाह तँ लुक्खो दाइक आङन दिस हल्ला सुनलथिन। लोक कहि रहल छलैक—सुतले मे बूझि पड़ैत अछि साप काटि लेलकैक।

लुक्खी दाइ मुनचुन लग सँ जे आङन गेलि से बाट मे ओकरा पैर मे किछु अभड़लैक, फेर विसबिसाय लगलैक, मुदा मोन ततेक भारी छलैक जे आँचर सँ मुँह झाँपि पुरिवाक आगर पर जाकऽ सूति रहलि। निद्रा...घोर निद्रा... महा निद्रा....।

भरि टोलक लोक लुखियाक आङन मे मिस पड़ैत छल। लुखियाक माय जोर जोर सँ कहि कहि कानि रहल छलथिन— 'हम पहिने कहलिऐक जे एहि बहुखौका सँ हम अपन बेटी नहि बिआहब से क्यौ ने मानलक। ओ बहुखौका तँ फेर बिआह कऽ लेत, मुदा हमर सूगा बेटी केँ आनि दे रे नगरक लोक सब।'

मुनचुन केँ सूति कऽ उठैत देरी ई शब्द कान मे पड़लनि, हुनका आँखिक सोझाँ अढ़ाय तीन घंटा पूर्वक दृश्य नचैत रहनि, ओ अपना केँ नहि सम्हारि सकलाह। पोखरि दिस जे खबसाक संग विदा भेलाह से सोझे गाम चल अयलाह।

७

नवविवाहिता मैथिल कन्याक मधुश्रावणी सन पावनि, जकरा मधुस्रावणी सेहो कहैत छथि कवि बन्धु। अङरेजी मे हनीमून (Honeymoon) एकरे कहैत छथिन कतेक साहित्यिक

बन्धु। जखन समस्त वातावरण मधुमय रहबाक चाहैत छल, छायाक मधुश्रावणी विषश्रावणी भऽ गेलनि। लुखियाक मृत्यु सँ एक भयानक वातावरणक सृष्टि भइए गेल छलैक, मुनचुनक अकस्मात् अन्तर्द्धान भऽ गेलाक कारणेँ दोसर उदासी व्यापि रहल छल। पूजाक बेर बीति चुकल छलैक, एक भाग मृतक पड़ल, दोसर कात गीत नाद की हैत, चुपचाप छाया गौर पूजि लेलक आ ओही ठाम बैसलि रहि गेलि।

अपना जीवन मे जाहि महाशून्यताक अनुभव ओकरा भेलैक ताही सँ जीवनक भयानकता ओकरा अन्तस्तल केँ आन्दोलित करै लगलैक। आइ ओ की सब कहबाक हेतु ओरिआ रखने छलि से सब मोन मे ओरिअयले रहिगेलैक। एहि चौदह पन्द्रह वर्ष जीवन मे जकरा संग सतत रहलि, दू शरीर एक प्राण छलैक, से चिर-संगिनी आइ एहन बेर मे ओकरा त्यागि सर्वदाक हेतु चल गेलि छलैक जखन ओ जीवनक दुआरि पर भीतर जैबाक हेतु एक टा पैर उठौनहि टा छलि।

छाया सोचने छलि जे आइ मुनचुन सँ दृढ़ता पूर्वक वचन-बद्ध हैतनि—'हम छौ मास मे अहाँ केँ पत्र नहि लीखी तँ जिनगी भरि अहाँ हमर मुँह नहि देखब।' आ से दृढ़ता छलैक बहिनपाक भरोसेँ। आह! सेह बहिनपा एना ओकरा छोड़ि, चलि देलकैक? शिव मन्दिरक द्वार पर जाहि मूर्ति केँ ओ अपना हृदय मे प्रतिष्ठापित कैने छलि से सर्वस्व ओकरा

प्रात भऽ गेलैक आ फेर महादेव से छीनि लेथिन ? छाया हाथी पर चढ़लि गौर कें उपालम्भ देबै लगलनि—अहाँ अपन महादेव ककरो दऽ सकैत छिऐक ! जँ क्यौ छीनि लेअय तँ छीनै देबैक ! हमहूँ अपन देवता कें अपना सं नहि छीनै देब ।

× × × ×

आगाँ आगाँ मुनचुन आ पाछू पाछू चुल्हवा लोटा डोलबैत कनक पट्टी मे उपस्थित । मुनचुनक आँखि देखि ज्योतिषीजी चकित रहि गेलाह । टोल भरि मे बिजुली जकाँ समाचार पसरल—'आइ मधुश्रावणी थिकैक, मुदा मुनचुन लक्ष्मीपुर सँ चल अयलाह अछि । गाँटबे गाँटबी भरि टोलक लोक दलान पर थहाथहि भऽ गेल ।

'आइ किएक चल अयलहुँ... कोना चल अयलहुँ... कखन घूरि कऽ जैब... पहिल यात्रा मे सीमा उल्लंघन किऐक कैलहुँ .... बिदा कहिया करताह ...', प्रश्नक वर्षा चारू कात सँ होमै लगलनि ।

मुनचुनक की मनःस्थिति छलनि से के जनैत छल । आँखिओक वेदना सँ अधिक तीव्र वेदना मनक छलनि । सब प्रश्नक एकमात्र उत्तर देलथिन—'आँखि बड़ बिस्तार भऽ गेल तेँ चिकित्सा करबाक हेतु काल्हि सुलतानगंज चल जैब ।' आ वस्तुतः प्रात होइत ओ सुलतान गंज बिदाइओ भऽ गेलाह ।

गाम पहुँचि कऽ ओहि दिन पोखरि मे डूब दऽ दऽ खूब

नहैलाह, साँझ होइत होइत आँखिक स्थिति मे अद्भुत सुधार भेलनि। ककरो मुँहेँ सुनल छलनि जे डुब्बी मारि कऽ आँखि तकला उत्तर बड़ आराम होइत छैक। ई से खूब कैने छलाह।

भोजन करै काल माय पुछलथिन—'जे चिट्ठीक उत्तर किऐक ने दैत छलाह ?'

लक्ष्मीपुरक सबटा खेहा ओ अपन आँखिक दुःस्थिति क वर्णन सुना देलथिन।

माय प्रतिक्रिया स्वरूप एतबे कहलथिन—"कतबो कौआ गंग नहाबी कौआ तैयो कौए" ताँ जे कहलह से बात धरि सत्ते, आब बूझि पड़ैत अछि जे एहन लोकक संग सम्बन्ध नहि करक चाही। बेस, हमर की बिगाड़लनि अछि ? बिगड़ल-निहेँ अप्पन। अगहनेक शुद्ध मे तोहर दोसर विआह करा दैत छिअह।

मुनचुन ने प्रतिवाद कैलथिन ने स्वीकारे, कहलथिन एतबे—'मोन छल जे अङरेजी कालेज मे नाम लिखबितहुँ, मुदा एहि वर्ष आब शास्त्रीएक परीक्षा दऽ देब, अगिला साल देखल जेतैक। कालिह सुलतान गंज जाइत छी, कोनो डाक्टर सँ आँखियो जँचबा लेब।'

राजपुतानाक महाराज पन्द्रह टाका मासिक दीते छलथिन, विद्यालय सँ दस टाका छात्र वृत्ति सेहो भेटैत छलनि। हृदयक ओहि समस्त बिहाड़ि केँ धैर्य ओ साहसक मुट्ठी मे कसि कऽ

षान्हि, मुनचुन अध्ययन मे अपना कें तेना रमा लेलनि जे पछिला घटना क्रमहि मोन सँ बैसाड़ छोड़े लगलनि। कखनो कदाच एकान्त पड़थि तँ कखनहुँ लुक्खी दाइक ओहि रातुक कानब आ कखनहुँ कऽ चतुर्थीक राति मे छायाक वाक्य—'सब सँ पहिल बात जे जिनगी मे कहलहुँ से फूसि कोना कहितहुँ'—स्मरण होइनि आ ओहि वाक्य मे ध्वनित सरलता ओ निश्छ-लता पर मोन अँटकि जाइनि।

किन्तु समयक गर्त्त मे क्रमहि ईहो सब विलीन होमै लगलनि।

× × × ×

लुखियाक अन्तिम संस्कार सँ निवृत्त भऽ जखन साँझ मे टोलक लोक सब जूटल तँ लीलाधरझा जमायक प्रसंग टिप्पणी करैत बजलाह—'रूसि कऽ, बिनु पुछने चल गेलाह तँ हमर की बिगाड़ि लेलनि ?'

क्यौ टोक देलकनि—'भलमानुस सब बिकौआ होइत अछि, जँ ज्योतिषीजी दोसर बिआह करा देलथिन तखन, तँ....... ।'

तखन त की ? आब ओ युग जमाना गेलैक जे चट दऽ दोसर बिआह भऽ जैतनि। नेपाल अथबा लंका तँ बेटाक बिआह नहिंये करौताह, करौताह कतहु एही लोक मे, से जे जेमहर जाह से एतबा चर्चा गामे गाम कऽ दहुन जे बेटा झनकाह छथिन, महाग अवण्डु, क्यौ कतहु गछबे ने करतनि

आ जँ कतहु क्यौ गछियो लेलथिन तँ पता लगा कऽ विआह सँ पहिने कन्यागतक हाड़ तोड़ि अस्पताल पहुँचा देथनि। लड़ैत रहिहथि मोकदमा।' एतबा कहि लीलाधरझा एक कठहँसी हँसलाह आ कहलथिन—'अपन अपन कपार होइत छैक। हम सोचि रहल छलहुँ जे खूब सीदल बिदाइ देबनि। हमरा तँ एखन ओहू चिन्ता सँ मुक्ति भेटि गेल। ततबे नहि, लोक कहैत छैक—बरक माय नव नगरा, हमरा सँठती मधुश्राबणी', हम सँठबनि कोजागरा' से मधुश्राबणीक भार भरि गौआँ देखबे कैलहुँ, हमहूँ, कोजागरा मे पन्द्रह टा टाका चुपचाप पठा देबनि.... ...।'

—'आ जँ पन्द्रह टा टाका नहि लेथि?'

—नहि लेताह तँ ओहि दिन समस्तीपुर जाय भरि पेट खा लेब आ बूढ़ा ज्योतिषीजी केँ रस पठा देबनि, अपन दूनू बेकती भरि छांक पीबि लिहथि।

सारांश ई जे मुनचुनक चल गेला पर लीलाधरझा केँ विषादक कोन कथा, थाड़ बहुत हर्ष भेलनि। 'जे रोगी के भावै से वैदा फरमावै' ई तँ चाहिते छलाह जे आरंभे मे विरोध भऽ जाय जाहि सँ वर बिदाइ सँ सेहो बाँचि जाइ।

दू मास बितलाक बाद ज्योतिषीजी लीलाधरझा केँ भेट करबाक हेतु चिट्ठी लिखलथिन। लीलाधरझा चिट्ठीक अनुसार भेटो करै अयलथिन।

—'कर्ज वर्जक सम्बन्ध जे कहने छलहुँ से आब की कऽ रहल छी ?'

ज्योतिषीजीक प्रश्न सूनि लीलाधरझा उत्तर देलथिन—अपने जखन तैआर होइ तखने चलि कऽ सब टा जमीन जाल हमरा नामें फर्जी कऽ देल जाय, तखन महाजन लोकनि जँ टोकथि तँ हमर दलान देखा देल जाइनि।

—'अर्थात् ...'

—'अर्थात् जखन कुल सम्पत्ति अपने हमरा नामें लिखि देब, तखन ओहि कर्जक दावेदार हम रहब, आ हम महाजन लोकनि सँ फड़िछा लेब।'

—'एकर अर्थ तँ ई भेल जे हम सब टाका बैमानी कऽ लिऔक।'

—'जथा जाल जखन हमरा नामें रहत तँ अपने ओहि दोष सँ मुक्त रहब ?'

—'टाका हम नेने छिऐक, तखन दोष सँ मुक्त हम कोना रहब ?'

—'तखन अपनेक की इच्छा अछि ?'

—'हमर इच्छा ? ज्योतिषीजी कहलथिन—'हमर इच्छा यैह अछि जे अपने महाजन सभक टाका हमरा सोझाँ मे गनि दिऔक, जनिका हैण्डनोट बना देने छिऐनि से हैण्डनोट फाड़ि देथु आ जनिका जमीन भरना देने छिऐनि से भरना दस्तावेज

आपस कऽ देथु।'

—'आ हम तुम्मा चुट्टा ली, कोनो महन्थक स्थान मे धुनी रमा दी ?' लीलाधरझा मुह विकृत बनबैत कहलथिन।

—'अपनेक आशय ?'

—'हमर आशय नहि, अपनेक आशय थीक। हमर बुद्धिएँ चलब नहि, आ अपनेक बुद्धिएँ तँ हमरा यैह करै पड़त। बाबाक बलेँ फौदारी तं सबके करै अबैत छैक, जखन अपना कपारक सोझाँ चूल्हि जरैत छैक तखन ने असलका ताव केर पता चलैत छैक।'

—'एतेक टा जीवन बितौलहुँ से अनका भरोसेँ नहि।' ज्योतिषीजी कनेक उत्तेजित होइत कहलथिन। 'जँ पहिने बूझल रहैत जे एतेक नीक लोक छी जे एहि बुढ़ारी मे हमरा बैमानीक पाठ पढ़ायब तँ एहन काज नहि ने करितहुँ।'

—'आ हमरो जँ बूझल रहैत जे अपनेक पुत्र महकारीक फऽड़ छथि तँ हमहूँ अपना कन्याक गरदनि एना अपना हाथेँ हलाल नहि ने करितहुँ।'

ज्योतिषीजी छलाहे ततेक शान्त स्वभावक लोक जे सहमि कऽ रहि गेलाह। सोचलनि—'कुटुम्ब केँ अपना दरबज्जा पर बजौने छिऐनि, तखन जँ अपने उखड़ि जैब तँ समाज मे दुर्यश हैत। तें एतबे कहलथिन—'आब अपने केँ नीक जकाँ चिन्हलहुँ, यद्यपि मुनचुन पहिने सँ चिन्हैत छलाह। बेस अपने

हमर चिन्ता जुनि करो। ईहो दस बीघा आस्था अछि से अपने बाहुबलक उपार्जन थीक। एही मे सँ दू बीघा बेचि कऽ मुनचुन केँ निकर्ज बना देबनि। नेनो भऽ कऽ ओ जे कहलक आ ओकर बात टारलिऐक तकर परिणाम भोगल। किन्तु एतबा कहि दैत छी जे हमरा संग वंचना कैनिहार केँ बाबा वैद्यनाथो देखिते हेथिन।'

बाबा वैद्यनाथक नाम सूनि लीलाधरझा तड़ङ्लाह—'बाबा वैद्यनाथ सँ तँ अपनहि टा केँ परिचय अछि। हमरा लोकनि केँ तं ओ जनिते ने छथि। वेस, बूझल जे भलमानुसो लोक कुटुम्ब केँ दरबाजा पर बजाय एना बेइज्जति करैत छथिन।' एतबा बाजि ओ उठि कऽ चलि देलनि।

पहिने तँ मुनचुनक माइए टाक प्रस्ताव छलनि जे मुनचुनक दोसर विवाह करा देल जाइनि, मुदा आब बाप सेहो समर्थक भऽ गेलथिन।

मुनचुन शास्त्री - परीक्षाक फार्म भरि गाम पहुँचलाह तँ गाम परक दोसरे सूर—किच्छुहो, अगहनेक शुद्ध मे ई काज भऽ जाय जकरा मास दिन समय।

मुनचुनक सोझाँ जखन द्वितीय विवाहक प्रस्ताव अयलनि तँ ओ पहिने थोड़ेक गंभीर भऽ गेलाह। हुनका स्मरण भेलनि पहिने लुक्खी दाइ आ तकरा बाद ओकर वाक्य–'हमर बहिनपाक एहि मे कोन दोष, जे ओकरा बनिसार मे देबऽ चाहैत छथिन?

खेत खाय महींस आ मुँह चूरल जाय पड़रूक ?' ओ माता पिताक प्रस्तावक प्रतिबाद कैलनि आ कहलथिन जे एक बेर डोर सिन्दूर पठबिऔनि ताहि पर की उत्तर दैत छथि से बूझि लिअऽ।

'राखथु अपना बेटी केँ अपना कपार पर जन्म भरि, हमरा ओहि ठाम सँ एक टा कौआो नहि जैतनि।' माय कहि उठलथिन।

'ओ परम अविवेकी लोक छथि। एखन ठेहिआय दिअनि पाँच सात वर्ष तखन देखल जेतैक।' पिताक मन्तव्य छलनि।

मुनचुन दूनू गोटा केँ यैह उत्तर देलथिन जे एक बेरि अहाँ लोकनिक कहला पर, इच्छा नहिओ रहैत, विरोध करितो, बेरि-बेरि चेताउनि देलाक बादो, विवाह कऽ लेलहुँ। आब हम नेहोरा करब जे हमरा एहि प्रसंग अपना जे नीक बूझि पड़ैत अछि सैह करै दिअऽ आ हम जे कहैत छी सैह अहूँ लोकनि करू। अन्यथा हमरा कपार मे जे ई कलंक लिखल हैत जे माय बापक कथा मे नहि छथि से पूर हैत।

दूनू गोटा केँ अपन हारल छलनि तेँ स्तब्ध भऽ गेलाह। प्राते खन डोर सिन्दूर लऽ हजाम के पठौलथिन। द्विरागमनक दिन पचीस दिन छलैक।

डोर सिन्दूर देखैत देरी लीलाधरझा जे हजमा पर मारमार कऽ छुटलथिन से ओकर मुंह तँ विदाहल मडुआक खेत सन भऽ गेलैक। ओ नाङड़ि ठाढ़ कैलक।

मुनचुन केँ एकर अनुमान पहिनो सं किछु छलनि, किन्तु

जानिए कऽ पठौने छलथिन। हजमाक घुरला पर पिता कहल-थिन—'हम तँ कहलहुँ जे ओ परम अविवेकी लोक छथि।'

मुनचुन उत्तर देलथिन-'कहलहुँ अवश्य, किन्तु बहुत पछुआ कऽ, जखन तीर हाथ सँ छूटि गेल छल। हम तँ ताहि सँ पहिने कहने छलहुँ। हमरा एक टा प्रयास आर करऽ दिअऽ।'

द्विरागमनक दिन सँ पाँच दिन पहिने ई सासुर पहुँचलाह। सबके आश्चर्य भेलैक। सूर्यास्त प्राय समय छलैक। मुनचुन साइकिल सँ जाबत उतरथि ता लीलाधरझा उठि आङन चल गेलाह। आङन सँ जे बहरैलाह से अंगा जुत्ता पहिरने। घोड़ी पकड़लनि आ कसि कऽ बिदा भऽ गेलाह। मुनचुन केँ गोड़ो लागै नहि देलथिन।

आङन मे स्त्रीगण तँ चारू कात सँ नोचि कऽ छोड़ि देल-कनि—'दुर जो! केहन दरेग भेलनि, जे लुखिया ओना सेवा करनि से मुइल पड़लि आ चुपचाप चलि देलनि... लोक कहैत छैक जोतखी पण्डित आ तकर बेटा कतहु एना करैक।' बूढ़ी पीसी क टिप्पणी छलनि। सरहोजि रहथिन बुझनुक। ओ बूढ़ी पीसी केँ टोक देलथिन—'से जुनि कहथुन दीदी, लिखल पढ़ल लोकक विचारे दोसर होइत छैक। तेँ ने ठाकुर बिनु बौसने अयलथिन अछि, कोनो मूर्ख रहितनि तँ बूझैत जइतऽथिन। हम तँ ठाकुर केँ धन्यवाद दैत छिऐनि। विवेकी लोकक बाते दोसर होइत छैक।'

भतिज पुतोहुक वाक्य बूढ़ी पीसी कें चिड़ैतो सँ बेसी बीत लगलनि, ओ उठि कऽ चलि देथिन।

मुनचुन ककरो बातक कोनो उत्तर नहि देलनि। चुपचाप नहाथि, खाथि आ कागत कलम लऽ भरि दिन किछु लिखैत रहथि।

एहि पाँच दिन मे ओ छायाक पूर्ण परीक्षा लऽ रहल छलाह, अपन छायाक, निर्दोष छायाक, लुक्खी दाइक बहिनपा छायाक, शिव मन्दिरक द्वार पर हृदयासन पर अधिष्ठित भेलि छायाक अग्नि परीक्षा।

पुरुषोचित कर्तव्य थीक जे जकर पाणि-ग्रहण कैलिऐक अछि, तकर निर्वाह जीवन भरि करी। नहि, जँ ओ स्वयं ई इच्छा नहि राखै तँ, तखन अहाँ त्यागि सकैत छिऐक। एही कर्तव्य बुद्धि सँ मुनचुन एक निष्कर्ष पर पहुँचलाह।

आइ द्विरागमनक दिन थिकनि, लीलाधरझा गाम घूरि कऽ नहि अयलाह अछि, ओ अन्तिम प्रयास करताह।

राति मे जखन निस्तब्धता अयलैक तँ मुनचुन छायाक सोझाँ प्रस्ताव उपस्थित कैलथिन—'हमर ई अन्तिम प्रयास थीक, यदि एहि मे विफल भेलहुँ तँ तकर परिणाम हमर दोसर विवाह... सेहो बरख दू बरख नहि, मास दू मास नहि, एहि पाँच दिन मे.... हमरा अहाँक सम्बन्ध बिधाता करा देलनि तकरा ने आब हमर बाप काटि सकैत छथि ने अहाँक बाप... अहाँक

बहिनपा कहने छलीह 'हमर बहिनपाक कोन दोष जे अहाँ हुनका बनिसार मे देबनि'। नैहर बनिसार थीक, माने जहल थीक .. एहि जहल सँ बहरेबाक एकेटा बाट अछि जे एखन हमरा लोकनि साइकिल सँ चुपचाप अपना गाम चलि दी। आइए द्विरागमनक दिन थिक। आजुक बाद काल्हि से नहि भऽ सकैत अछि।

छाया केँ ई आकस्मिक प्रस्ताव स्तम्भित कऽ देलकैक। ओ दू क्षणक हेतु अचेत भऽ गेलि। एकाएक ओ गौर केँ उठाय खोँइछ मे रखलक, कोबर घरक अङनइ मे राखल धानक बोझ सँ चारि टा राङी रामदुलारीक शीश सुड़रि खोंइछ बनौलक आ मुनचुन दिस ताकि एहन भाव व्यक्त कैलक जे हम प्रस्तुत छी।

कोबर घर सँ पैर उठबैत छायाक आँखि सँ दू बून्द नोर झहरि गेलैक, जेना आइ पर्यन्त जाहि कोर मे खेलाइत धुपाइत ओ पालित भेल छलि ओहि कोर एवं भूमिक प्रति श्रद्धा - सिक्त अन्तिम अर्घ्यदान कऽ रहलि हो।

छाया केँ प्रस्तुत देखि मुनचुनक हृदयाकाश सँ उमड़ैत कारी कारी घन घटा झंझाक एक झोँक मे छिन्न भिन्न भऽ गेलनि। हुनक विश्वास दृढ़ सँ दृढ़तर होइत गेलनि जे छाया हमरा हेतु छाया रहतीह, गरल नहि।

ओ साइकिल उठौलनि, दशमी तिथि छलैक चन्द्रमा अलसा-

यल, उँघाइत अन्धकारक दोहरि तर सुटकल सुतबाक उपक्रम मे जा रहल छलाह आ मुनचुनक साइकिल अबाध गतिएँ लक्ष्मीपुर सँ कनकपट्टीक बाट पर आगाँ बढ़ि रहल छलनि।

कनकपट्टी पहुँचला पर ज्योतिषीजी मुनचुन कें देखिते विस्मय विमुग्ध भऽ गेलाह। मुनचुनक माय बेटा पुतोहु कें परिछि कऽ आङन अनलनि।

प्रात होइत टोल मे समाचार पसरल। 'पोथी पुराण मे सुनैत छलहुँ रूक्मिणी हरण, उषा हरण, सुभद्रा हरण आदि आदि, आइ अपना गमे मे छाया हरण देखैत गेलहुँ।' समाजक टिप्पणी छल। किन्तु नवयुवक मण्डल मुनचुनक साहसक ओ नवयुवती लोकनि छायाक प्रशंसा कैलनि।

× × × ×

प्रात होइत लक्ष्मीपुर मे हल्ला बजरल। ने ओ नगरी ने ओ ठाँव। एहि प्रकारक तँ कल्पनो ने कऽ सकैत छल। भरि टोल मे रंग विरंगक चर्चा छल।

'गे मार बाढ़नि, केहन घोर कलियुग आबि गेल जे एना उढ़रा उढ़री जकाँ माय बापक घर सँ बेटी पड़ाय लगलैक अछि। कोनो गत्र मे कनेको लाज होइनि लीलाधर कें तँ जिनगी भरि ओहि छौंड़ीक मुँह नहि देखथु।' ई मत छलनि बूढ़ी पीसीक।

छायाक माय बजलथिन—'कोन मुँह लऽ कऽ हम लोकक सोझाँ ठाढ़ि हैब? नाक कटा कऽ पाग खसा कऽ कुल बोरनी

साँइक संग चल गेलि।'

एहि पर पुतोहु बजलथिन—कोनो आन मनुसाक संग तँ नहि चल गेलथिन अछि जे नाक कटलनि की पाग खसलनि। जँ माय बाप ठाकुरक दोसर विआह करा दितऽथिन, तखन बेटीक कोन दुर्गति होइतनि? हम तँ भलमानुसे केँ धन्यवाद देबैक जे अपन लोक केँ अपना लग कोनहुना लऽ कऽ चल गेल बेचारा।

पुतोहुक एहि टिप्पणी पर ईहो सन्देह व्यक्त होमै लागल जे कनेञा केँ पहिने सँ बूझल छलनि, तखन छल कैलनि हमरा सब सँ। ने तँ ई हुनकर पच्छ किऐक लितऽथिन?'

द्विरागमनक दिन बिता कऽ टनटनाइत लीलाधरझा गाम पहुँचलाह करीब दस बजे। हाल सुनि दंग रहि गेलाह। एहन छकान तँ जिनगी भरि क्यौ ने छकौने छलनि। यद्यपि एक दृष्टिएँ मोने मोन प्रसन्ने भेलाह जे चल भाइ, द्विरागमनोक खर्च सँ बचलहुँ, मुदा जखन ई स्मरण होइनि जे ई काल्हुक छौंड़ा छकौलक बड़ी छकान, तँ भीतरक राक्षस भाव जागि जाइनि। ताहि पर सँ टोलक लोक जे चेकी चढ़ौलकनि तँ आरो उत्तेजित भऽ गेलाह।

स्नान भोजन कऽ कनेक जिरैलाह आ कसलनि अपन घोड़ी, विदा भेलाह कनक पट्टी। पहिने कनक पट्टीक चारिटा नीक लोक केँ एकट्ठा करबाक प्रयास कैलनि। किन्तु एहि बीच मे नीक लोक केँ पड़ब उचित नहि बूझि पड़लनि, तथापि पाँच

गोटाक संग लीलाधरझा ज्योतिषीजीक दरवज्जा पर पहुँचलाह।

ज्योतिषीजी पूजा पर बैसल छलाह आ मुनचुन श्रीकान्तक दलान दिस बूलै गेल छलाह। लीलाधरझा अबिते देरी ने आव देखलनि ने ताव, गरजै लगलाह—'योगी सँ धुरखेड़ि करऽ चललहुँ अछि तँ माटि मे मिलि जायब से ध्यान मे राखि लिअऽ।'

क्रमहि टोलक दस पाँच व्यक्ति एकत्र भऽ गेलाह। मुनचुन सेहो पहुँचलाह। मुनचुन केँ देखिते लीलाधरझा आगि भऽ गेलाह—'अहाँ हमरे संग गुण्डइ करऽ लगलहुँ अछि। जखन नाङ्ड़ि सुटका कऽ पड़ैलहुँ तखन कोन मुँह लऽ कऽ दोहरा कऽ हमरा दरवज्जा पर गेलहुँ? लाज नहि भेल! भलमानुस...।'

मुनचुन उत्तर देलथिन—'दरवज्जा पर आबि हाथ पकड़ि कऽ लऽ गेल छलहुँ, लऽ जा कऽ जे निधि अर्पित कैल से अपन निधि आनै गेलहुँ, आब फेर ओहि दरवज्जा पर पैर नहि देब, आब जँ पैर दी गऽ तँ अपनेक जे इच्छा हो से कऽ लेल जाय।'

—'चोर जकाँ राति मे पड़ाइत एकोरत्ती संकोच नहि भेल? बड़ पुरुषक बेटा छलहुँ तँ दिन देखार विदागरी करा लितहुँ तखन ने मर्दानगी बुझितहुँ।'

—हम तँ मर्दानगी कैलहुँ की चोरी से तँ कऽ चुकलहुँ, आब अपनेक मर्दानगी देखैबाँक अवसर आयल अछि से देखा लिअऽ।

मुनचुनक ई ललकार लीलाधरझा केँ आरो तिलमिला देल-कनि, हुनक पौरुष केँ ई चुनौती छलनि। ओ गरजि उठलाह—

'की हमर मर्दानगी देखब ?'

—'अवश्य देखबाक अभिलाषा अछि ।'

—'बेस तखन आइ साँझ धरि अपना बेटीक विदागरी जँ लाठी हाथें नहि करा ली तँ मोछ नहि राखी ।' एतबा कहैत लीलाधरझा हँसेरीक जोगाड़ मे उठि कऽ चल गेलाह ।

ज्योतिषीजी पूजा सम्पन्न कऽ भोजन भात कैलनि, तखन टोलक लोक सब कें बजा कऽ परामर्श करऽ लगलाह । ज्योतिषीजी कहलथिन—'हम मानलहुँ जे मुनचुन अनुचित कैलनि जे एना विदागरी कैने चल अयलाह, मुदा अनलनि तँ अपने लोक कें, जकरा अग्नि कें साक्षी राखि, ओ दान कऽ चुकल छलाह । आब यदि लाठी हाथें ओ विदागरी करा कऽ लऽ जाथि तँ हमरे नहि, भरि गामक इज्जति चल गेल । तें अहाँ लोकनि बाजू की करक थीक ।

नवयुवक मण्डली मे सँ श्रीकान्त बाजि उठलाह-'लाश खसि पड़ै से मंजूर, मुदा जीवैत जी विदागरी नहि होमै देबनि ।'

कनक पट्टी मे लीलाधर झाक आक्रमणक विरोध मे तैआरी शुरु भऽ गेल । ज्योतिषीजीक बुढ़ायल रक्त मे अद्भुत गर्मी आबि गेलनि । ओ मुनचून कें कहलथिन—दूनू टा खोढ़िया कें पिजा कऽ राखू आ दूनू बापुतें ड्योढ़ी टाट लग ठाढ़ रहब, जे आयल जायत तकरा ठामहि दू टुकरी करैत जायब ।'

कतेकक मत छलनि जे लीलाधरझा बाजि गेलाह अछि, मुदा एहन काज करताह नहि। किन्तु ई अनुमान असत्य प्रमाणित भेल, सूर्यास्त प्राय मे बजरंग बली की जयक नारा सँ आकाशक पर्दा फाड़ैत लीलाधर झाक हँसेरी कनक पट्टी पहुँचि गेल।

कनक पट्टीओक नवयुवक दल गणास, भाला, लाठी चमकाबै लागल। आल्हा रुदल वाला दृश्य उपस्थित भऽ गेल। आब मारि बजरत की छाया घर सँ तीर जकाँ बहराय दलान पर बापक सोझाँ मे पहुँचलि।

ओकरा देखिते लीलाधरझा कहलथिन—'कुल कलंकिनी बेटी तोँ... ....'

छाया बीचे मे कहलकनि—हम कुलकलंकिनी बेटी की अहाँ समाज कलंकी बाप से स्वस्थ चित्तेँ—जा कऽ विचार करू गऽ, तखन पुरुषार्थं देखायब। अहाँ सन सन बाप जावत एहि समाज मे जीबैत छथि तावत हमरे सन बेटीक आवश्यकता समाज केँ छैक।

छायाक उग्र रूप देखि हँसेरी ठामहि घूरि गेल आ लीलाधर झा ठोहि पाड़ि कऽ कनैत ठाढ़ रहि गेलाह।

—:o:—



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learing has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha, Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant

Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But the organization was revived around year ~~1961-62~~ 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195
8877213104
vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥



॥ बिज्ञापन ॥



मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्त सभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—